एम के. विनोदिनी कृत 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' के पचास पृष्ठों का हिन्दी अनुवाद तथा उसकी समस्याएँ

(MK. BINODINI KRIT 'BORO SAHEB ONGBI SANATOMBI' KE PACHAS PRISHTHON KA HINDI ANUVAD TATHA USKI SAMASYAEIN)

एम. फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु-शोधप्रबन्ध

शोधनिर्देशक

डॉ. रमण प्रसाद सिन्हा

शोधार्थी

क्षे. धन की रानी

भारतीय भाषा केन्द्र

भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन केन्द्र

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

नई दिल्ली-110067

2013

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
भारतीय भाषा केन्द्र
Centre of Indian Language
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
School of Language, Literature & Culture Studies
नई दिल्ली-११००६७, भारत NEW DELHI-110067, INDIA

Dated : 26 /07/2013

DECLARATION

I hereby declare that the research work done in this M.Phil. Dissertation/Ph.D. Thesis entitle **"MK. BINODINI KRIT 'BORO SAHEB ONGBI SANATOMBI' KE PACHAS PRISHTHON KA HINDI ANUVAD TATHA USKI SAMASYAEIN"** by me is the original research work and it has not been previously submitted for any other degree in this or any other University/institution.

Dhani.

Ksh. Dhan Ki Rani
(Research Scholar)

Dr. Raman Prasad Sinha
(Supervisor)
CIL/SLL&CS/JNU

Rambux

Prof. Ram Bux Jat
(Chairperson)
CIL/SLL&CS/JNU

भूमिका

भूमिका

भारत के पूर्वोत्तर सीमान्त का एक छोटा-सा पहाड़ी राज्य मणिपुर न केवल अपने अप्रतिम प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए ही प्रसिद्ध है, बल्कि अपने नृत्य-संगीत, कला-कौशल और विशिष्ट संस्कृति के लिए भी देश-विदेश में चर्चित और विख्यात है।

मणिपुर राज्य प्राकृतिक रूप से दो भागों में विभाजित है - पहाड़ी भाग और घाटी भाग। मैदानी भाग में मुख्यत: मितै जाति के लोग रहते हैं जो हिन्दू धर्मावलम्बी हैं। एक ही राज्य में रहते हुए भी घाटी निवासी मितै जाति और पर्वतीय आदिवासियों के रहन-सहन, खान-पान तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा तथा परिवेश में समानता से अधिक विभिन्नता के तत्त्व ही अधिक हैं। घाटी का जीवन हर दृष्टि से उन्नत और विकसित है।

ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत आने के पूर्व तक (सन् 1891 ई.) मणिपुर सर्वप्रभुता-सम्पन्न स्वतन्त्र राज्य था। ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल कर लिए जाने के बाद भी यह एक राजा के अधीन देशी राज्य रहा और भारतीय स्वतन्त्रता के उपरान्त सन् 1949 में इसका भारतीय संघ में विलयन हुआ।

मैंने अपने इस लघु शोध कार्य के लिए एम के. विनोदिनी कृत 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' के 50 पृष्ठों का अनुवाद तथा उसकी समस्याओं को बतौर विषय चुना है। मणिपुरी साहित्य व समाज में 'इमाशी' के नाम से विख्यात एम के. विनोदिनी ने कभी नहीं सोचा था कि वे लेखिका बनेंगी। परन्तु उनके अन्दर के साहित्यकार ने अपने आप ही सोचना व लिखना शुरु कर दिया। वर्ष 1965 से ही उनके मन में सनातोम्बी के विषय में लिखने का खयाल आया। जब महाराज सूरचन्द्र की छोटी बेटी सनाखोम्दोन के पोते अराम्बम समरेन्द्र ने विनोदिनी जी को सनातोम्बी और मेक्सवेल की तस्वीरें दिखाई तो वे जोश से भर गई और उन्होंने आखिरकार 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' लिख डाली।

यह कोई जीवनी नहीं बल्कि सनातोम्बी के जीवन पर आधारित उपन्यास है। लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में शाही परिवार की भाषा का प्रयोग किया है। मणिपुरी समाज में आज भी

शाही परिवार के वंशज रहते हैं तथा वे आज भी उसी अंदाज में बात करते हैं जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है।

हर समाज का अपना रहन-सहन और तौर-तरीका होता है। यह उपन्यास मणिपुरी समाज के परिप्रेक्ष्य में हर पहलू को प्रस्तुत करता है अत: उन्हें हिन्दी समाज के अनुसार प्रस्तुत करना आवश्यक था। मणिपुरी समाज की परम्परा, बोल-चाल, रहन-सहन आदि को हिन्दी समाज के अनुसार यथासम्भव प्रस्तुत किया गया है। हालांकि दोनों समाज में कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक भिन्नता के चलते कहीं-कहीं समस्याओं का भी सामना करना पड़ा परन्तु कोशिश यही थी कि हिन्दी भाषा के पाठकों को कुछ अटपटा न महसूस हो।

सनातोम्बी उपन्यास की मुख्य पात्रा है और सम्पूर्ण उपन्यास उसी से जुड़ा हुआ है। अनुवाद कार्य शुरु करने से पहले जब तीन-चार बार उपन्यास को पढ़ा जा रहा था तो सब कुछ आसान व सरल प्रतीत हो रहा था परन्तु जब अनुवाद कार्य की बारी आई तब समस्याओं का पता चला। वैसे तो यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है परन्तु मुझे इस उपन्यास में निहित एक मणिपुरी राजकुमारी (सनातोम्बी) तथा ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट (मेक्सवेल) की प्रेम कहानी में अधिक दिलचस्पी थी। सनातोम्बी एक राजकन्या है जो कि बचपन से ही चंचल, साहसी और दृढ़ निश्चयी है। प्रस्तुत उपन्यास सनातोम्बी के जीवन के विभिन्न प्रकरणों, उतार-चढ़ाव तथा उलटफेर को बयां करता है।

इस लघु शोध के विषय को तीन अध्यायों में विभाजित किया गया है। **प्रथम अध्याय** को चार खण्डों में विभाजित किया गया है जिसके अन्तर्गत लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा की गई है। सर्वप्रथम लेखक के प्रारम्भिक जीवन, साहित्यिक जीवन तथा कला सम्बन्धी गतिविधियों की चर्चा की गई है। इसके पश्चात् विनोदिनी के पुरस्कार तथा ग्रंथ सूची के विषय में बताया गया है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत एम के. विनोदिनी कृत 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' के पचास पृष्ठों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। मूल पाठ मणिपुरी भाषा की रचना है जिसका हिन्दी भाषा में अनुवाद किया गया है और दोनों भाषाएँ भिन्न भाषा परिवार के अन्तर्गत आती हैं।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत स्रोत भाषा के पाठ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने के दौरान जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा उनकी चर्चा की गई है। चूंकि दोनों भाषाएँ अलग-अलग भाषा परिवार की हैं अत: दोनों की सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में भिन्नता है जिस वजह से अनुवाद करने में समस्याएँ आईं।

एक अनुभवहीन छात्रा होने की वजह से मुझे इस लघु शोध कार्य के दौरान बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ा परन्तु मेरे निर्देशक **डॉ. रमण प्रसाद सिन्हा** ने मेरी बहुत सहायता की। मैं उनके प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ, क्योंकि उनके सहयोग के बिना मेरा यह कार्य पूर्ण नहीं हो पाता।

इस कार्य को करने के लिए **प्रो. चमन लाल** ने मुझे प्रोत्साहित किया। बाजार में मूल कृति अनुपलब्ध होने के कारण काफी समय तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् दिवंगत लेखिका के परिवार के सदस्यों की सहमति से यह कृति मुझ तक पहुँची। साथ ही मैं अपने **माता-पिता** की भी आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरी सहायता की। मैं **डॉ. देवराज, किंगसन, सुनीता, शिवांगी** तथा अपने **सभी मित्रों** के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिनके असीम सहयोग से मेरा यह कार्य निश्चित समय पर पूरा हुआ।

मेरी दृष्टि में 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' ऐसा उपन्यास है जिसे न केवल मणिपुरी समाज के लोगों द्वारा बल्कि बाहर के लोगों द्वारा भी समझे जाने की आवश्यकता है। इस लघु शोध कार्य के माध्यम से मैंने हिन्दी भाषी पाठकों को एक उपहार देने का प्रयास किया है।

विषय सूची

भूमिका		i-iv
1. लेखक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व		1-15
1.1	लेखक का प्रारम्भिक जीवन	2-4
1.2	साहित्यिक जीवन तथा कला सम्बन्धी गतिविधियाँ	4-13
1.3	पुरस्कार	13
1.4	विनोदिनी : ग्रंथ सूची	13
1.4.1	प्रकाशन	13-14
1.4.2	फिल्म स्क्रिप्ट	14
1.4.3	बैले स्क्रिप्ट	14-15
1.4.4	अनुवाद	15
1.4.5	सम्बद्ध	15
2. 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' के ५० पृष्ठों का हिन्दी अनुवाद		16-69
3. अनुवाद की समस्याएँ		70-84
4. उपसंहार		85-89
ग्रन्थानुक्रम		90-92

अध्याय-प्रथम

1. लेखक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 लेखक का प्रारम्भिक जीवन

1.2 साहित्यिक जीवन तथा कला सम्बन्धी गतिविधियाँ

1.3 पुरस्कार

1.4 विनोदिनी : ग्रंथ सूची

1.4.1 प्रकाशन

1.4.2 फिल्म स्क्रिप्ट

1.4.3 बैले स्क्रिप्ट

1.4.4 अनुवाद

1.4.5 सम्बद्ध

अध्याय-प्रथम

लेखक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 लेखक का प्रारम्भिक जीवन

महाराजकुमारी विनोदिनी देवी का जन्म 6 फरवरी सन् 1922 में मणिपुर के शाही परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम महाराज चुड़ाचांद सिंह तथा माँ का नाम महारानी धनमंजुरी देवी था। महाराज चुड़ाचांद सिंह तथा महारानी धनमंजुरी देवी की पाँच बेटियाँ अर्थात् महाराजकुमारियाँ यथा - तम्फासना, सनातोम्बी, तोम्बीसना, अङउसना और विनोदिनी में महाराजकुमारी विनोदिनी सबसे छोटी थी। महाराजकुमारी विनोदिनी को प्यार से वाङ्गोलसना के नाम से भी जाना जाता था। जिस तरह उनकी परवरिश हुई, लोग केवल उसकी कल्पना ही कर सकते हैं। एक राजकन्या होने के कारण वे महल में ही पली-बढ़ी और वहीं पर उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की। उनके शिक्षक स्वर्गीय वाइखोम सेलुङ्ब तथा श्रीमती जोली (धात्री) उन्हें राजमहल में आकर पढ़ाते। तत्कालीन परिस्थितियाँ स्त्री शिक्षा के प्रतिकूल थी। यहाँ तक कि इसे अनुचित ठहराया जाता था। परन्तु आधुनिक विचारधारावादी होने के कारण महाराज चुडाचांद ने इस प्रथा का खण्डन करते हुए राजमहल में ही अपनी बेटियों की प्रारम्भिक शिक्षा का प्रबन्ध किया। जब वे थोड़ी बड़ी हुई तो उन्हें शिलोङ भेज दिया गया। शिलोङ के पाइन माउंट स्कूल से उनकी औपचारिक शिक्षा शुरु हुई। भारत के पूर्वोत्तर में स्थित शिलोङ पहाड़ी इलाका था जो कि खासी की पहाड़ियों में आता था। तत्कालीन राजा तथा ब्रिटिश अधिकारी शिलोङ में अपने नाम का बंगला बनवाते जहाँ पर वे अपने परिवार समेत छुट्टियाँ बिताने आते थे। उस दौरान शाही परिवारों के बच्चों का ज्ञानार्जन हेतु शिलोङ जाना समृद्ध संस्कृति का परिचायक माना जाता था।

पाइन माउंट स्कूल से ज्ञानार्जन करने के पश्चात् उन्होंने आगे की पढ़ाई स्मृति मन्दिर से की तथा अपनी माध्यमिक शिक्षा तम्फासना गर्ल्स स्कूल से की जो कि वर्तमान में टी. जी.

हायर सेकेन्डरी स्कूल के नाम से जाना जाता है। ध्यान देने की बात यह है कि यह स्कूल इनकी बड़ी दीदी महाराजकुमारी तम्फासना के नाम पर बनवाया गया था। इसके पश्चात् उच्च शिक्षा के लिए वे पुन: शिलोङ गई और वहाँ के सेंट मेरी कॉलेज से ज्ञानार्जन किया। वहाँ से उन्हें बंगाल के विद्यासागर कॉलेज में भेज दिया गया।

उनकी जिन्दगी में जबरदस्त बदलाव उस वक्त आया जब उन्होंने शांतिनिकेतन के विश्वभारती विश्वविद्यालय में कला का अध्ययन करने हेतु कदम रखा। विश्वभारती विश्वविद्यालय एक आदर्श विश्वविद्यालय था जिसकी स्थापना गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा की गई थी। छात्रों को पारम्परिक वातावरण के माध्यम से भारतीय साहित्य, दर्शन एवं कला संस्कृति के सम्बन्ध में ज्ञान प्रदान कर उन्हें समृद्ध बनाने के लक्ष्य से इसकी स्थापना की गई थी। विश्वभारती विश्वविद्यालय के समृद्ध एवं सहायक माहौल ने महाराजकुमारी विनोदिनी की कला संबंधी प्रतिभा को अभिव्यक्ति का माध्यम प्रदान किया। विनोदिनी ने विश्वभारती विश्वविद्यालय के कला भवन में ही मूर्तिकला तथा चित्रकला के क्षेत्र में अध्ययन शुरु किया और शीघ्र ही वे एक दोषरहित मूर्तिकार तथा चित्रकार बन गई। परन्तु यदि वे गुरु रामकिंकर वैज तथा नंदलाल बोस के सम्पर्क में न आतीं तो शायद उनके आशीर्वाद के बिना वे एक उत्कृष्ट मूर्तिकार तथा चित्रकार के स्तर तक न पहुँच पाती। विश्वभारती विश्वविद्यालय के माहौल के परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व में परिपक्वता आई। गुरु रामकिंकर वैज की निगरानी में उन्होंने मूर्तिकला के विभिन्न रूप सीखे तथा वे गुरु नंदलाल बोस से भी अत्यधिक प्रभावित थीं। गुरु रामकिंकर वैज ने विनोदिनी को बतौर विषय के रूप में चुना तथा उनकी पेंटिंग बनाई। गुरु रामकिंकर वैज द्वारा बनाए गए विनोदिनी के सम्पूर्ण चित्रों का संग्रह नई दिल्ली में स्थित गेलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट द्वारा संरक्षित किया जा चुका है। महाराजकुमारी विनोदिनी स्नातक की उपाधि प्राप्त करने वाली पहली मणिपुरी महिला थीं।

विश्वभारती विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद जब विनोदिनी मणिपुर वापस आईं तो उन्होंने देखा कि शांतिनिकेतन की तुलना में वहाँ का जीवन-स्तर काफी भिन्न था। जब वे शांतिनिकेतन से लौटकर आईं तो विशुद्ध अंग्रेजी, हिन्दी तथा बंगला पढ़ने-लिखने में निपुण हो चुकी थीं। इसके अलावा कला क्षेत्र में भी रीति-नीति का ज्ञान प्राप्त कर चुकी

थी। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के काव्य, लेखन तथा रवीन्द्र संगीत जिससे वे काफी सम्मोहित थी उसी की उत्प्रेरणा से उन्होंने कला के क्षेत्र में रीति-नीति का ज्ञानार्जन भी किया। सन् 1950 में डॉ. लाइफुङ्बम नंदबाबू रॉय, FRCS (Fellowship of the Royal College of Surgeons) से उनका विवाह हुआ तथा आगे चलकर उनके दो बेटे भी हुए - देवव्रत रॉय तथा सोमी रॉय।

डॉ. नंदबाबू रॉय से विवाह होने के पश्चात् कुछ समय के लिए विनोदिनी की प्रतिभा पर अल्पविराम-सा लग गया। अपने वैवाहिक जीवन तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते वे अपने भीतरी कलाकार के लिए समय नहीं निकाल पायी। इस तरह धीरे-धीरे मूर्तिकला और चित्रकला के साथ उनका सम्बन्ध छूट गया परन्तु जल्द ही उन्होंने पुनः कलम थाम ली। अपने फुरसत के पलों में उन्होंने लघु कथा के अलावा मणिपुरी भाषा के गीत तथा नाटक का लेखन शुरु किया जिनका प्रसारण ऑल इण्डिया रेडियो, मणिपुर में हुआ। इतना ही नहीं बल्कि लोग उनके गीत तथा नाटक को बड़े चाव से सुनते थे।

1.2 साहित्यिक जीवन तथा कला सम्बन्धी गतिविधियाँ

एम के. विनोदिनी मणिपुरी भाषा में लिखती थी जो कि मणिपुर की भाषा है। उनकी अंतिम रचना 'महाराज चुड़ाचांदगी इमुङ' 34 व्यक्तिगत संस्मरणात्मक निबंधों का संग्रह है जिसमें उन्होंने अपने पिता महाराज चुड़ाचांद के साथ बिताए वक्त की चर्चा की है। उनके पहले के कुछ निबंध वर्ष 1997 से स्थानीय अखबार में छप चुके हैं। लगभग द्वितीय विश्वयुद्ध के समय के आसपास की बात है जब वे अपनी माँ के साथ बंगाल में स्थित नवद्वीप के तीर्थयात्री शहर में रहती थी, विनोदिनी को बंगला साहित्य के शरत्चन्द्र चटर्जी, बंकिमचन्द्र चटर्जी, रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा माइकेल मधुसूदन दत्त ने काफी प्रभावित किया। भविष्य की सशक्त लेखिका विनोदिनी ने सन् 1939 में जब वे दसवीं कक्षा की छात्रा थी, एक लघु कथा 'इमातोन' (छोटी माँ) प्रकाशित करने का प्रयास किया। समाज की सोच से हटकर एक युवक तथा उसकी सौतेली माँ के बीच संबंध को विषय बनाकर लिखने के कारण युवा लेखिका विनोदिनी को उसके शिक्षक द्वारा डाँट पड़ी। सेंट मेरी कॉलेज, शिलोङ के दिनों

के दौरान उन्होंने पुनः कहानी लिखना शुरु किया। परन्तु उनकी पहली कहानी ''नुङाइरक्त चन्द्रमुखी'' एक कलकत्ता आधारित मणिपुरी पत्रिका में सन् 1960 के दशक में छपी। अपने लेखन के माध्यम से मणिपुरी परम्परा में आधुनिकता को लाने तथा अपनी स्त्री पात्रों में निहित मजबूत तथा समाज से हटकर अपरम्परागत चरित्र के लिए विख्यात है। युवा महिला लेखिकाएँ विशेष रूप से महाराजकुमारी विनोदिनी को अपने आदर्श के रूप में देखती हैं।

सन् 1965 में उनके ''अशङ्ब नोङजाबी'' नामक नाटक का मंचन हुआ तथा रेडियो नाटक के रूप में भी प्रस्तुत किया गया। आगे चलकर इसका संकलन ''नुङाइरक्त चन्द्रमुखी'' नाम से प्रकाशित नाट्य-संग्रह में किया गया। सन् 1966 में मणिपुर साहित्य परिषद् द्वारा उन्हें 'यामिनी सुन्दर गुहा मेमोरियल गोल्ड मेडल' से सम्मानित किया गया। सन् 1967 में 'अशङ्ब नोङ्जाबी' प्रकाशित हुआ तथा सन् 1976 में उनका 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' नामक उपन्यास प्रकाश में आया जो कि महाराज सूरचन्द्र सिंह की बेटी राजकुमारी सनातोम्बी की सच्ची जीवन कथा पर आधारित था। इस उपन्यास ने हर जगह से वाहवाही बटोरी तथा कई पुरस्कार भी प्राप्त किए जिसके अन्तर्गत 'साहित्य आकदमी पुरस्कार', नई दिल्ली तथा 'राज्य कला आकदमी पुरस्कार', मणिपुर भी शामिल हैं। भारत सरकार द्वारा विनोदिनी को साहित्य और कला के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर, शंकर तथा बादल सरकार आदि बंगाली लेखकों की कृतियों का भी मणिपुरी भाषा में अनुवाद किया। विनोदिनी एक विपुला लेखिका थी तथा मणिपुर के अखबारों में नियमित रूप से उनके निबन्ध छपते थे। इस शृंखला के अन्तर्गत 'महाराज चुड़ाचांदगी इमुङ', पास-पड़ोस में रहने वालों के रंगीन चरित्र का वर्णन, मणिपुर के परिप्रेक्ष्य में द्वितीय विश्वयुद्ध पर आधारित निबंध 'येङखोम ओङ्बी हेमाबती' आदि कड़ियाँ शामिल हैं। एक युवा महिला के रूप में घुड़सवारी के लिए जानी जाने वाली होने के नाते उन्होंने मणिपुर की घुड़सवारी संस्कृति पर 16 निबंध लिखे जिसका प्रसारण 'ऑल इण्डिया रेडियो' में हुआ। अपने कार्यक्षेत्र के शानदार वर्षों के दौरान विनोदिनी 70 और 80 के दशक के दौरान 16 साल के लिए 'जवाहरलाल नेहरु मणिपुर नृत्य अकादमी' की सचिव रही। जब

वे अकादमी की सचिव थीं उसी दौरान अकादमी से नर्तकों की एक मंडली का नेतृत्व करते हुए मेक्सिको, अमरीका, कनाडा, जर्मनी और फ्रांस गईं। उन्होंने 'ओ मेक्सिको' नामक एक यात्रा-वृत्तांत लिखा तथा वर्ष 2008 में उन्हें 'निङोम्बम प्रमोदिनी साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 2009 में उन्हें 'सेराम मुक्ता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्होंने आठ फीचर फिल्मों तथा चार वृत्तचित्र कहानियों की पटकथा भी लिखी जिनमें से कुछ तो उनकी मूल कहानियों पर आधारित हैं तथा कुछ अन्य की कहानियों पर आधारित हैं। निर्देशक अरीबम श्याम शर्मा के साथ मिलकर विनोदिनी ने जिन फिल्मों की पटकथा तैयार की उन फिल्मों ने न्यूयॉर्क के म्यूज़ियम ऑफ मॉडर्न आर्ट सहित अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जैसे कान, लोकार्नो, लंदन और टोरंटो फिल्म फेस्टिवल में कई पुरस्कार अर्जित किए। वर्ष 1981 में नैनटेस में आयोजित तीन महाद्वीपों के महोत्सव में उनकी फिल्म 'इमागी निङथेम' को ग्रांड प्रिक्स से सम्मानित किया गया, वन्यजीव बैले पर आधारित उनके 'सङाई, मणिपुर की नाचती हिरण' नामक वृत्तचित्र ने वर्ष 1989 में "British Film Institute Outstanding Film of the Year" का ख़िताब जीता। वर्ष 1991 में "Un Certain Regard Section of the Cannes Film Festival" के लिए उनकी फिल्म 'इशानउ' का चयन हुआ। निर्देशक श्याम शर्मा के साथ मिलकर तैयार की गई उनकी अंतिम वृत्तचित्र 'राजर्षि भाग्यचन्द्र' वर्ष 2007 में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में दिखाई गई। उनकी सभी फिल्म भारतीय पैनोरमा में शामिल हुई तथा राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित हुई। उनके कई गाने रेडियो में प्रसारित हुए तथा उन्होंने 'पाओखुम अम' और 'मायोफीगी मचा' नामक दो लघु फिल्म भी लिखे।

शाही युग के जमाने से पालन-पोषण तथा मणिपुर के समृद्ध विरासत में विश्वास होने के कारण विनोदिनी सदैव ही मणिपुर की संस्कृति को संरक्षित करने के पथ पर चलती रही। वे मणिपुर के पारम्परिक कला तथा कलाकारों की दृढ़ समर्थक थी। माइबी* तथा पेना† वादकों की करीबी दोस्त होने के साथ ही वे मणिपुर की घुड़सवारी संस्कृति की एक उत्साही समर्थक भी थी। महाराजकुमारी विनोदिनी 'ऑल मणिपुर पोलो एसोसिएशन' तथा 'रेड क्रॉस

---

* माईबी : साधना के माध्यम से ईश्वर से सम्पर्क स्थापित करने वाली महिला।

† पेना : स्थानीय वाद्ययंत्र जिसके तार घोड़े की पूंछ से बनते हैं।

सोसाइटी' की संरक्षक सदस्य भी थी। मणिपुर विश्वविद्यालय के विकास में एक सीनेट और सिंडीकेट सदस्य के रूप में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मणिपुर में सिनेमा की प्रबल प्रेमी तथा उत्साही के रूप में एक वे ही थी जिन्होंने 'मणिपुर फिल्म विकास परिषद' की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई तथा बाद में निदेशक मण्डल के सदस्य के रूप में 'मणिपुर फिल्म विकास कॉपरेशन' की स्थापना में सहयोग किया। वे राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के भारतीय पैनोरमा अनुभाग में तीन बार जूरी सदस्य रहीं। उन्होंने आधुनिक मणिपुरी सांस्कृतिक संगीत पर आधारित 'रूप राग' नामक संस्था की स्थापना की तथा उसके अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। साहित्य से प्रेम करने वाली मणिपुरी महिलाओं के लिए उन्होंने 'लइकोल' की स्थापना की तथा अपने जीवन के समय में वे इसकी अध्यक्ष रहीं। मणिपुर के विभिन्न संस्थाओं में साहित्य एवं संस्कृति के सन्दर्भ में उनका काफी योगदान रहा तथा 'इप्टा' (IPTA) मणिपुर के अध्यक्ष के रूप में भी सेवा की। अपने जीवन काल के दौरान वे सदैव ही सक्रिय तथा ऊर्जावान स्त्री के रूप में सामाजिक जागरूकता के लिए कार्य करती रहीं। मणिपुर संस्कृति के आंदोलन को आगे बढ़ाने में उनकी भूमिका हमेशा प्रेरणादायी रही।

एक लेखिका तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ता होने के अलावा अपने देश के बाहर यथा- संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, मेक्सिको, इंडोनेशिया, बांग्लादेश, फ्रांस, जर्मनी, तत्कालीन सोवियत संघ और हंगरी जैसे देशों में अपने राज्य का प्रतिनिधित्व करने हेतु जाने के लिए भी वक्त निकाल लेती। वर्ष 1973 में वे नव मुक्त बांग्लादेश जाकर मणिपुरी प्रवासी भारतीयों से मिली। उस नवजात देश के लोगों से परिचय नवीनीकृत करने तथा वहाँ के लोगों के साथ एकजुटता व्यक्त करने हेतु यात्रा की। उन्होंने विदेश में केवल साहित्य एवं कला के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा ही नहीं दिखाई बल्कि मणिपुर को भी गर्व महसूस कराया। यह उनकी कभी हार न मानने वाली भावना का ही परिणाम है कि वे सिलचर, त्रिपुरा, असम तथा बांग्लादेश के कुछ हिस्से जहाँ मणिपुरी लोग रहते हैं उनसे मिलीं, उन्हें प्रेरित किया कि वे एक साथ आगे आएं तथा मणिपुर के लोगों के साथ प्यार तथा बंधन को पुनर्स्थापित करें। पर्यावरण संकट, मानव अधिकार तथा महिलाओं के अधिकार जैसे सामाजिक मुद्दों पर वे हमेशा ही एक

स्पष्टवादी आलोचक के रूप में नजर आईं। जवाहरलाल नेहरु मणिपुर नृत्य अकादमी की बैले यूनिट द्वारा प्रस्तुत किया गया इनका 'सङाई' नामक बैले अपने संरक्षण संदेश के लिए अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा बाद में 'संगीत नाटक अकादमी' द्वारा फिल्माया गया। वर्ष 1972 में राज्य की झीलों तथा वन्य जीवन पर आधारित 'थोइबीदो वारउहउई' के माध्यम से उन्होंने मणिपुर में पर्यावरण के प्रति जागरूकता प्रज्ज्वलित की। हिरण के शोकगीत पर आधारित यह निबंध उनकी पर्यावरण केन्द्रित बैले 'थोइबी' की पटकथा का आधार था जो कि उन्होंने उस दौरान लिखा जब वे 'जवाहरलाल नेहरु मणिपुर नृत्य अकादमी' चला रहीं थी। अन्य समकालीन मणिपुरी नृत्य बैले के अन्तर्गत उनका पर्यावरण संदेश पर केन्द्रित 'कइबुल लम्जाओ' (1984) तथा मणिपुर की झीलों पर केन्द्रित 'लोकताक इशई' (1991) नामक बैले शामिल है। उनका पर्यावरणवाद अक्सर सक्रिय पहलू को सामने लेकर आते हैं, उदाहरण के लिए वर्ष 2002 में नम्बुल नदी को साफ करने के लिए सामुदायिक कार्यों की श्रृंखला पर केन्द्रित 'नोङ्गउबी परियोजना'। चूंकि वे 'मणिपुर विधान सभा' की सदस्य थी इसलिए निर्वाचित पद पर भी आसीन रहीं। वर्ष 1973 में उन्होंने मणिपुर की महिलाओं के लिए सूक्ष्म वित्तपोषण हेतु मणिपुर की प्रथम महिला सहकारी बैंक की स्थापना की। उन्होंने नुपी कइथेल* का समर्थन किया तथा बाजार चलाने वाली महिलाओं द्वारा किए गए संघर्ष में दृढ़ता से आवाज उठाई। चूंकि मणिपुर की इस परम्परागत संस्थागत और आर्थिक स्तम्भ के अस्तित्व पर क्रमिक विनाश विषयक खतरा मंडरा रहा था अत: उन्होंने महिलाओं के संघर्ष का समर्थन किया। वे नियमित रूप से स्थानीय दैनिक समाचार पत्रों के लिए लिखतीं जिनमें सम्पादक को पत्र, कहानियाँ, लेख तथा मणिपुर की वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक मुद्दों पर टिप्पणियाँ आदि शामिल हैं। 'पोक्नफम' और 'नहारोलगी थौदाङ' के लिए वे मणिपुरी में लिखतीं तथा 'द इम्फाल फ्री प्रेस' के लिए वे अंग्रेजी में लिखतीं। वर्ष 1992 में अमेरिका के 'अमेरिकन मणिपुरी एसोसिएशन' द्वारा मणिपुरी संस्कृति में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया गया। वर्ष 2004 में इम्फाल के 'कङ्ला' पर तैनात

---

* नुपी कइथेल : औरतों द्वारा चालित व नियंत्रित स्थानीय बाजार।

असम राइफल्स के कर्मियों द्वारा हिरासत के दौरान थाङ्जम मनोरमा देवी के साथ की गई यौन शोषण तथा नृशंस हत्या के विरोध में तथा मणिपुर से 'सशस्त्र बल विशेष अधिकार अधिनियम, 1958' को हटाने के सन्दर्भ में जनता के दिल से निकली आह में उनका साथ देने के लिए भारत के राष्ट्रपति को 'पद्मश्री पुरस्कार' लौटाने का अभूतपूर्व कदम उठाया।

मृत्यु

17 जनवरी वर्ष 2011 को यह महान् लेखिका हमारे बीच नहीं रही। उन्होंने अपनी अंतिम सांसें याइस्कूल वाले घर में शाम 8 बजकर 4 मिनट में लीं। वे अपने पीछे अपने दो बेटे, दो पोते और कई यादें छोड़ गईं।

एम के. विनोदिनी ने 20वीं सदी से लेकर अपने समय तक के मणिपुर के शाही इतिहास को प्रत्यक्ष रूप से देखा था। मणिपुरी समाज में वे व्यापक रूप से 'इमाशी' (शाही माँ) के नाम से जानी जाती थी। विनोदिनी न केवल राजाओं और रईसों के सच तथा जीवन-शैली को बारीकी से जानती थी बल्कि मणिपुरी समाज में उनका काफी योगदान भी रहा है तथा इसके लिए वे सम्पूर्ण मणिपुरी समाज में व्यापक रूप से जानी जाती हैं।

विनोदिनी शब्दों के चयन को लेकर काफी सतर्क थी। यह काफी दिलचस्प बात थी कि वे आम आदमी द्वारा बोले जाने वाली भाषा पर विशेष जोर देती। इसके बावजूद वे शाही भाषा, जिसमें शिष्टाचार तथा बड़ों के प्रति आदर-सम्मान पूरी तरह से उभर कर आता है, का सहज रूप से प्रयोग करतीं। कुछ लोग 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' तथा 'नुङाईरक्त चन्द्रमुखी' का बंगला, असमिया तथा हिन्दी भाषाओं में अनुवाद करना चाहते थे परन्तु इन्होंने कभी भी आसानी से अपनी सहमति नहीं दी। पहले तो मुझे इस बात का आश्चर्य हुआ कि भला कोई लेखक अपनी कृति का अनुवाद करने की स्वीकृति क्यों नहीं देना चाहता। परन्तु जल्द ही मुझे इसका उत्तर भी मिल गया। किसी लेखक को बिना जाने अथवा उसकी रचनाओं को समझे बिना कोई व्यक्ति उसकी कृति का अनुवाद कैसे कर सकता है? यदि किसी की तीव्र इच्छा हो कि वह उनकी रचनाओं का अनुवाद करे तो सर्वप्रथम उसे अनिवार्य रूप से उनकी भाषा को समझना होगा।

एक लालित्यपूर्ण लेखिका तथा सर्जक के रूप में उनकी उपलब्धि को किसी उल्लेख की आवश्यकता नहीं और निंदकों के पास उनके विरुद्ध कहने को कुछ भी नहीं तथा संभवत: यही बात है कि उन्हें मणिपुर की एक आइकन के रूप में प्रस्तुत करती है। ऐसी कौन-सी वजह थी जिसके चलते निंदकों के मुँह बंद रह जाते - शाही वंश, आंतरिक तथा बाह्य सौंदर्यता या मणिपुर समाज की दिशा में इनका अपार योगदान? इस पहेली का उत्तर खोजना बहुत ही मुश्किल है क्योंकि एम के. विनोदिनी अपने आप में ही एक टाइप थी। यदि एक ओर वे लेखिका के रूप में अपने लिए प्रसिद्धि एवं प्रशंसा अर्जित कर रही थीं तो दूसरी ओर वे दो बेटों की माँ भी थी जिसने अपनी दोनों भूमिका को बखूबी निभाया। माता-पिता ही

जानते हैं कि बच्चों को पालना कितना मुश्किल तथा चुनौतीपूर्ण कार्य है विशेष रूप से जब अकेली माँ हो परन्तु राजकुमारी जी पर इसका प्रतिकूल प्रभाव न पड़ सका।

वास्तव में एम के. विनोदिनी मणिपुर की जनता के लिए महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर परोपकार करने के लिए नहीं जानी जाती किन्तु वास्तविकता यह है कि जब भी विनोदिनी का जिक्र होता है उसमें एक प्रकार की आभा, गरिमा तथा सम्मान निहित होती है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस लेखन कार्य में चरित्र (पात्र), व्यक्तित्व तथा निश्चित रूप से लोगों (पाठकों) को अपने पक्ष में करने की क्षमता अत्यावश्यक है जो कि आसान कार्य नहीं जिसे राजकुमारी जी ने आत्म-विश्वास के साथ बखूबी निभाया। हालांकि विनोदिनी ने शाही घर में जन्म लिया परन्तु परम्परा से अलग सोच तथा रॉयल्टी के उन्मूलन उनके कुछ ऐसे अप्रिय अनुभव रहे जो उनके व्यक्तित्व को निखारता है। यह उनके प्रबल चरित्र, शिक्षा तथा समय के साथ परिवर्तनशीलता का ही परिणाम है कि इस विकास के दौर में भी वे पीछे नहीं रही।

ज्यादातर लोग परम्परा और संस्कृति के सन्दर्भ में ही 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' की बात करते हैं परन्तु मुझे इससे अधिक दिलचस्पी एक मणिपुरी राजकुमारी तथा ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट की प्रेम कहानी में थी। यह उपन्यास मणिपुर के महाराज सूरचन्द्र (1886-1890) की बेटी सनातोम्बी और मणिपुर के प्रथम ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट मेजर मेक्सवेल के बीच प्रेम सम्बन्ध की कहानी पर आधारित है। लेखिका ने काफी अच्छी तरह से तत्कालीन समाज में स्त्री की दशा (शाही लोगों सहित) का चित्रण किया है। सनातोम्बी के चरित्र में एक दृढ़-निश्चयी और साहसी पात्र के गुण झलकते हैं। बच्चों का अपने बराबर वालों से तथा अपने बड़ों से बातचीत करने का विशिष्ट (ठेठ) तरीका काफी दिलचस्प है। यह रचना मणिपुरी राजाओं के रिश्तेदारों-नातेदारों के बारे में यह बताती है कि किस प्रकार एक राजा अपने रिश्ते-नाते वालों के कारण शासन से हाथ धो बैठता है। मणिपुर के सम्राट ब्रिटिश जो कि बाहर वाले थे उनसे हार गए तथा ब्रिटिश सत्ता पर सवार हो गई।

वैसे तो रीतिगत तरीके से सनातोम्बी का विवाह एक मितै से ही हुआ था परन्तु यह शादी सफल न हो सकी। वास्तव में यह काफी प्रेरणादायक था कि हमेशा शाही जीवन जीने वाली राजकुमारी अब एक सामान्य जीवन जी रही थी और अपने ही दम पर लड़ रही थी। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती चली सनातोम्बी और मैक्सवेल में ज़्यादा बातचीत होने लगी तथा कहानी स्पष्ट होने लगी। हालांकि यह सच था परन्तु लोग सनातोम्बी और मेक्सवेल के संबंध को लेकर बातें बनाने लगे। और इन्हीं बातों ने सनातोम्बी के पति के दिमाग में जहर घोलने का कार्य किया। सनातोम्बी के वैवाहिक जीवन पर खतरा मंडराने लगा तथा मेक्सवेल को दोषी करार दिया गया। मेक्सवेल को काफी शर्मिंदगी महसूस हुई और उसने निर्णय लिया कि वह खुद को इन मामलों से दूर ही रखेगा। इसी दौरान उसे मणिपुर छोड़कर जाना पड़ा परन्तु अब भी इन दोनों की शादी नहीं हुई थी। दो वर्ष बाद मेक्सवेल वापस मणिपुर आया तथा अपने असफल प्रेम को नजरअंदाज करने के लिए मणिपुर के लोगों के कल्याण पर ध्यान केन्द्रित किया। वह स्थानीय लोगों को चहेता बन गया। सनातोम्बी के असफल वैवाहिक जीवन के विषय में सुनकर उसे झटका-सा लगा। परन्तु वह अब भी सनातोम्बी से प्रेम करता था। सभी बाधाओं के बावजूद उसने सनातोम्बी से विवाह करने का कदम उठाया। उनके खटासपूर्ण जीवन में फिर से खुशियाँ लौट आई। परन्तु जैसा कि सब जानते ही हैं कि सच्चा प्रेम करने वाले अक्सर अलग हो जाते हैं। अंतत: वह समय भी आ गया जब मणिपुर से ब्रिटिश एजेंट के वापस लौटने का वक्त हो चुका था - उन दोनों को अलग होना ही पड़ा। चाहते तो सनातोम्बी और मेक्सवेल एक साथ रह सकते थे परन्तु ऐसा नहीं हो पाया क्योंकि वे दोनों आजकल के युवक-युवती नहीं थे बल्कि अपने अपने राष्ट्र के प्रतिनिधि थे।

यह उपन्यास सनातोम्बी के जीवन के विभिन्न प्रकरणों, उतार-चढ़ाव तथा काफी उलटफेर को बयां करता है। समाज ने उसका बहिष्कार किया, मेक्सवेल भी उसे छोड़कर इंग्लैंड चला गया और इस प्रकार अंतत: उसका जीवन दु:खद तथा दयनीय रहा। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है जिसमें राजनीतिक, सामाजिक तस्वीरों के साथ मणिपुर के अशांत वर्षों में महल के षड्यंत्र भी चित्रित हैं। हालांकि उपन्यासकार का मुख्य लक्ष्य तो ऐतिहासिक और

कल्पनाशील नायक की विशिष्ट व्यक्तित्व का निर्माण होता है। लेखिका ने उपाख्यानों में अपने उद्देश्य के अनुरूप फेरबदल किया। मणिपुरी लोगों की दृष्टि में सनातोम्बी अत्यधिक चालाक तथा जाति बहिष्कृत है जिसे वे कभी भी मेक्सवेल की पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। परन्तु इस उपन्यास में विनोदिनी ने यह दर्शाया है कि सनातोम्बी पर ''पाप करने के बजाय अधिक पाप हुआ है'' सनातोम्बी का चरित्र काफी प्यारा किस्म का है जो कि अंत तक आते-आते दु:खद रूप ले लेता है तथा उसके जीवन के अंतिम दिन करुणा से भरे हुए हैं। जैसा कि आप उम्मीद करते हैं, शायद यही होता है और यही जीवन की सच्चाई है। 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' ऐसा उपन्यास है जिसे न केवल मणिपुरी समाज के लोगों द्वारा बल्कि बाहर के लोगों द्वारा भी समझे जाने की आवश्यकता है।

1.3 पुरस्कार

i. 1966 में 'नुङाइरक्त चन्द्रमुखी' के लिए मणिपुर साहित्य परिषद, इम्फाल द्वारा ''जामिनी सुन्दर गुहा स्वर्ण पदक''।

ii. 1976 में संगीत, नाटक, नृत्य, फिल्म और साहित्य में योगदान के लिए भारत के राष्ट्रपति द्वारा ''पद्मश्री'' से सम्मानित।

iii. 1979 में 'बोर साहेब ओङबी सनातोम्बी' के लिए ''साहित्य अकादमी पुरस्कार''।

iv. 2002 में कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए कमल कुमारी ट्रस्ट, असम द्वारा ''कमल कुमारी राष्ट्रीय पुरस्कार'' से सम्मानित।

v. 2008 में ''निङोम्बम प्रमोदिनी साहित्य पुरस्कार''।

vi. 2009 में ''सेराम मुक्ता पुरस्कार''।

vii. 2010 में राज्य कला अकादमी, इम्फाल द्वारा ''लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड''।

1.4 विनोदिनी : ग्रंथ सूची

क) प्रकाशन

i. 'नुङाइरक्त चन्द्रमुखी' (1965), लघु कथा

ii. 'अशङ्ब नोङजाबी' (1966), नाट्य संग्रह

iii. 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' (1976), उपन्यास

iv. 'अमसुङ इन्द्रजीत' (1990), नाटक, बादल सरकार के 'And Indrajit' का मणिपुरी अनुवाद

v. 'ओ मेक्सिको' (2004), मेक्सिको, अमेरिका तथा यूरोप पर आधारित यात्रा-वृत्तांत

vi. 'महाराज चुड़ाचांदगी इमुङ' (2008), संस्मरणात्मक निबन्ध

ख) फिल्म स्क्रिप्ट

i. 'ओलाङ्थागी वाङ्मदसू', (1980)

ii. 'इमागी निङ्थेम', (1981)

iii. 'पाओखुम अम', (1983)

iv. 'सङाई, द डांसिंग डीयर ऑफ मणिपुर', (1988)

v. 'इशानउ', (1990)

vi. 'मायोफीगी मचा', (1994)

vii. 'ऑर्किड्स ऑफ मणिपुर', (1994)

viii. 'सनाबी', (1995)

ix. 'ला', (1997)

x. 'थेङमल्लबरा राधा-मान्बी', (1999)

xi. 'अशङ्ब नोङजाबी', (2003)

xii. 'ङहाक लम्बीद', (2006)

xiii. 'नङ्न कप्प फजदे', (2007)

ग) बैले स्क्रिप्ट

i. 'कोङ हङोइ' (Children's Ballet), (1971)

ii. 'थोइबी' (वन्यजीव बैले), (1972)

iii. 'कइबुल लम्जाओ' (वन्यजीव बैले), (1984)

iv. 'लोकताक इशई' (Ecology Ballet), (1991)

घ) अनुवाद

'अमसुङ इन्द्रजीत' (बादल सरकार के 'And Indrajit' का मणिपुरी अनुवाद), (1963)

विनोदिनी के कार्यों का अंग्रेजी अनुवाद

i. 'My Little Friend' ('इम्फाल तुरेलगी इतामचा' का अनुवाद), एल. सोमी रॉय, साहित्य अकादमी संकलन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित (2005)

ii. 'One Answer' ('पाओखुम अम' का अनुवाद), मूल पटकथा, सिनेवेव, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित (1984)

iii. 'My Son, My Precious' ('इमागी निङथेम'), रेडियो नाटक से लिया मूल पटकथा, एल सोमी रॉय, सिनेवेव, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित (1981)

ङ) सम्बद्ध

'Binodini : A Writer's Life' (अरीबम श्याम शर्मा द्वारा अंग्रेजी उपशीर्षक सहित मणिपुरी वृत्तचित्र फिल्म, साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा प्रस्तुत) (45 मिनट), (2001)

अध्याय-द्वितीय

'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' के 50 पृष्ठों

का हिन्दी अनुवाद

अध्याय-द्वितीय

'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' के 50 पृष्ठों का हिन्दी अनुवाद

1

''माईनू'', अस्वस्थ महिला ने बहुत ही धीमी आवाज में पुकारा।

''जी महारानी साहिबा'', बाजू में बैठी माईनू ने उत्तर दिया।

''राजकुमार जी आने वाले थे क्या आज?''

''जी नहीं महारानी साहिबा।''

''आज क्या हो गया?''

''आज तो दुर्गा अष्टमी है। आपके छोटे भाई यानि राजकुमार जी आज समय नहीं निकाल पायेंगे। डॉक्टर साहब को लेकर कल आ जायेंगे।''

''अच्छा आज दुर्गा अष्टमी। ..... माईनू आज दुर्गा अष्टमी है।''

''जी महारानी साहिबा।''

अस्वस्थ महिला आँखे मूंदने लगी। लम्बे समय से अस्वस्थ होने के कारण कमजोरी आ गई, पहले से काफी कमजोर होने के बावजूद भी सुन्दर लग रही हैं - उनकी खूबसूरती अब भी छलक रही है।

बहुत ही सफाई से बनाए घर के शयन कक्ष का दृश्य। वैसे तो घर किसी मितै (मणिपुर की मुख्य जाति) का है परन्तु वह कमरा किसी मितै का है यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। पीतल से बनी चारपाई में अस्वस्थ महिला लेटी हुई आराम कर रही थी। पीतल पॉलिश से साफ करने के कारण सब कुछ सोने की तरह चमक रहा था। गंदगी तथा दाग का कोई नामो-निशान नहीं। बिस्तर के सामने एक छोटी सी टेबल पड़ी है। जिसमें छोटी-सी छड़ी, दवाई की शीशियाँ और मेज़रिंग ग्लास रखी है। बहुत ही बारीकी से बुनी गई चटाई को उस कमरे में बिछाया गया था। उसके ऊपर फूल-पत्तियों वाला कश्मीरी गलीचा।

लाल रंग के रेशमी कपड़े से ढकी महारानी विक्टोरिया के समय की सुन्दर-सी दो कुर्सियाँ और उसके बिल्कुल सामने मितै शैली से बनाया गया एक बड़ा-सा मोड़ा रखा है। उस पर एक विशेष प्रकार का कपड़ा यानि किनारी वाला फिराङ्जी* डालकर ढका गया है। शयन कक्ष में पड़ा हुआ फिराङ्जी बिल्कुल नया है, ज्यादा इस्तेमाल किया हुआ नहीं लगता, शायद सजावट के लिए रखा गया है। कमरे की दीवार पर दो तस्वीरें - एक तो महिला की है। लमथाङ् खुतहत ओढनी, मयेक नाईब फनेक, क्रेप की फुल बाजू वाली लेस वाली कमीज़ पहने एक सुन्दरी। उसके पड़ोस में औसत उम्र वाले शालीन फिरंगी पुरुष की तस्वीर। उन दोनों तस्वीरों की फ्रेम वहाँ की नहीं लगती। फोटो फ्रेम का डिज़ाइन बाहर का लगता है। दोनों तस्वीरों का आकार एक समान है। एक तस्वीर तो महाराज सूरजचन्द्र की पोती - सपाम चनू जसूमति की बेटी - राजकुमारी सनातोम्बी की है। एक हैं मेजर मेक्सवेल, परतंत्र मणिपुर के प्रथम राजनीतिक एजेंट - 'मेजर मेसिन साहब'। राजकुमारी सनातोम्बी अस्वस्थ है। मर्ज़ का पता नहीं। ओझा तथा डॉक्टरों को शायद पता हो। बीमारी के बारे में लोग जानबूझकर ज़िक्र नहीं करते। चुपचाप अपना-अपना काम करते रहते हैं।

जब से महारानी साहिबा अस्वस्थ हैं तब से उनके छोटे भाई ने अनवरत रूप से महारानी साहिबा की देख-रेख के लिए राजमहल से वैद जी को भेजा है। दो सेवक हमेशा तैनात रहते हैं। भोजन माईनू तैयार करती है। सिर्फ भोजन ही नहीं, माईनू सनातोम्बी का सारा काम करती है। सुन्दर छोटा-सा चेहरा, दुबली-पतली छरहरी। देखने पर वह हाड़-मांस की प्रतीत नहीं होती। वह दृढ़ निश्चयी, सटीक विचारने वाली लगती है। दोनों ही तीस से अधिक उम्र वाली लगती हैं।

उस वक्त सुबह के नौ बज रहे थे।

माईनू ने पुकारा - ''महारानी साहिबा।''

''हाँ।''

''क्या खिला रही हो?''

---

* फिराङ्जी : लाल रंग का मलमल वाला कपड़ा

''दो टोस्ट और दूध ग्रहण किया जाए।''

''अच्छा। ..... माईनू थोड़ी देर के बाद।''

सनातोम्बी ने हल्की झपकी ली। माईनू ध्यानपूर्वक देख रही है। आँखों से आँसूओं की लड़ी बह रही है। याद आ गई, नहीं याद नहीं आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से दिख पड़ा - हाप्ता बंगले के पीछे का बराम्दा। हरे-भरे मैदान के चारों ओर फूल खिले हैं - लाल, सफेद, फूलों का गुच्छा। उस समय को याद करती जब साहब और महारानी साहिबा ने कई बार एक साथ नाश्ता किया। हड़बड़ी मचाते सेवक एक-एक कर तरह-तरह के पाश्चात्य व्यंजन परोसते। साहब तो नियमित रूप से दो आधे उबले अण्डे लेते हैं। सनातोम्बी ऑमलेट लेती है। सनातोम्बी को ऑमलेट के सिवाय अण्डे का कुछ और नहीं भाता।

बीच-बीच में साहब माईनू से मजाक करते - ''थोड़ा तो खाओ, Try, egg health के लिए अच्छा होता है।''

साहब काफी अच्छी तरह मितै लोन (मणिपुर की भाषा) जानते हैं, बोलते भी हैं ऐसा कह सकते हैं लेकिन उच्चारण में थोड़ा हेर-फेर तो है। उनके उच्चारण पर माईनू को हँसी आती है, साहब द्वारा मज़ाक करने पर माईनू शर्म से हँसती है।

"Yes Brahmin, अशुद्ध नहीं हो जाते माईनू, food is food."

माईनू बिन बोले मुस्कराती-सी बाजू से निकल गई। उस दिन सनातोम्बी बहुत ही सुन्दर लग रही थी। हिजमयेक फनेक* पहन रखे थे। उसके ऊपर हल्के नीले रंग का रेशमी (मुगा) house coat, बिना ओढ़नी। लम्बे बालों को खुला छोड़ रखा है जिनमें से चिङ्ही† की खुशबू आ रही है। माईनू दूध लेकर आ रही थी कि साहब ने पूछा - ''माईनू चिङ्ही किस काम आता है?''

''साहब इनसे पोक नहीं उगते।''

---

* हिजमयेक फनेक : एक प्रकार का फनेक विशेष

† चिङ्ही : घर पर बनाया गया शैम्पू।

''पोक?''

''पोक यानि सफेद बाल। साहब जी यदि आप भी इससे सर धोएँ तो सफेद बाल नहीं उगेंगे।''

''No hope. Mine is already grey-not that there is much to turn grey. मेरे सर पर बाल नहीं हैं, पोक नहीं हैं।''

कितनी हँसी आई। माईनू साहब से बहुत शर्माती, इसी कारण साहब भी माईनू की शर्म को थोड़ा कम करने के लिए मजाक करते।

एक दिन यों कहा, ''कल dinner पर आए young man, जवान को माईनू तुमने देखा?''

''नहीं देखा।''

''सुन्दर Young man, Assam Rifles के Captain को देखा?''

''मैंने तो नहीं देखा साहब।''

''What a shame! उसे तो तुम पसन्द हो। शादी करेंगे, कहा है तुम उसे पसंद हो।''

''मुझसे नहीं होगा'' - कहती हुई भाग गई। सोचने लगी ये लड़का कितनी बदमाशी करता है। उस वक्त माईनू और सनातोम्बी बहुत जवान थीं।

क्या से क्या हो गया सोचते हुए माईनू को बुरा लगा, रोने जैसी हो गई।

''माईनू'' फिर से पुकारा।

''ले आऊँ क्या?''

''क्या?''

''नाश्ता।''

''मैं नहीं खाऊँगी, ... अच्छा आज दुर्गा अष्टमी है न?''

जी हाँ आज दुर्गा अष्टमी है।

चार-पाँच दिन पहले ही शादी-शुदा राजकन्याओं तथा वधुओं के घर राजमहल से खबर भेज दी जाती है। कौन-कौन पूजा में जाएगा, कौन हाथी पर सवार होगा, कौन डोली पर सवार होगा आदि। हाथी पर सवार होने वाले के घर हाथी, डोली पर सवार होने वाले के घर डोली समेत चार व्यक्ति।

सभी राजकुमारियाँ दुर्गा अष्टमी में आशीर्वाद के लिए खड़े हैं। हीयाङ्थाङ की सड़क है। सड़क के किनारे दोनों तरफ लोगों की जमात लगी है। महल की तरफ से होने पर भी लोग देखने को बेचैन हो रहे हैं। एक तरफ सुन्दर-सुन्दर राजकुमारियाँ दूसरी ओर उनकी सुन्दर सेविकाएँ।

महाराज चन्द्रकीर्ति के समय की बात है। हर तीज-त्यौहार में बेटियाँ ससुराल से राजमहल आतीं, चहल-पहल रहती, खुशियाँ मनाई जाती। महारानी जी के राजमहल का आँगन भरा रहता - थराकसना, मखाउसना, अमूसना, फान्देङसना, सनाथादोई, सनामाईपाक्पी .....।

उसके अलावा नरसिंह महाराज की राजकुमारियाँ, शाही खानदान की वधुएँ। आज दुर्गा अष्टमी है। मणिपुर के राजघराने की राजकुमारियाँ हियाङ्थाङ की सड़क पर कतार में जा रही हैं - हाथी पर सवार, डोली पर सवार। अमूसना कान के झुमकों को ज्यादा हिला रही है।

''कान के झुमकों पर इतना कोई जोर नहीं पड़ रहा, वो तो जानबूझ कर हिला रही है,'' झाँकी देखने आई एक महिला ने कहा।

''चुप रहो - सुन लिया तो।''

''मुझे तो सनामाईपाक्पी सबसे अच्छी लग रही है - क्या सादगी है? लटे भी नहीं डाली है।''

''सादगी नहीं है, नखरे हैं ..... पता नहीं शायद सुन लिया है, कैसे देख रही है।''

''छोटी भाभी, यही है क्या थाबलसना? गोरी है बस, लेकिन राशि नहीं है।''

''चुप रहो, एक तुम हो जो बहुत बोलती हो। किसी ने सुन लिया तो बात कहाँ से कहाँ पहुँच जाएगी।''

TH22990

''हाय रे! बोल भी नहीं सकते।''

सब आपस में कुछ-कुछ बोलने लगे।

आज भी दुर्गा अष्टमी है।

आज तो छोटे राजा के दर्शन नहीं हो पाएँगे।

''उस समय एक झण्डे वाली गाड़ी गुजरी थी, तुमने देखा नहीं? जच नहीं रहा था।''

हाथी गाड़ी में जाते थे। बहन, जमाना बदल गया है। दुर्गा अष्टमी के दिन राजा का गाड़ी पर सवार होना शोभा नहीं देता।

''ओ बहना हाथी पर सवार होने में कूल्हों में दर्द होता है, ऐसा बोलते हैं।''

जी, आज तो छोटे राजा आपसे मिलने नहीं आएँगे। वे व्यस्त हैं, कल पधारेंगे, कहा था। फिर भी सनातोम्बी को विश्वास है कि छोटे हैं इसलिए कब आ जाएँ कुछ कह नहीं सकते।

''माईनू गद्दी अच्छे से तैयार रखो, राजा कब आ जाए पता नहीं,'' आँखें मूँद ली।

''आज तो आपके छोटे भाई नहीं पधारेंगे। महारानी साहिबा, एक सेवक को बाहर प्रतीक्षा में खड़ा तो कर रखा है।''

धाँय धाँय धाँय ..... तोप की आवाज। खूराई में हाल ही में ठीक किए गए महल से आई तोप की आवाज है।

सनातोम्बी एकाएक घबड़ा गई - ''क्या है?''

''कुछ नहीं राजमहल में तोप चलने की आवाज है।''

कङ्ला ताऊजी! दामाद जी को बुलाकर लाओ माईनू - ''भागो चाचाजी पकासना को बताओ ..... दौड़ो .....'' बीमार स्त्री ने करवट बदली। ऐसा लगा जैसे फिरंगियों ने शायद तोप चला दी हो।

सनातोम्बी ने मणिपुर के अंतिम युद्ध का सामना किया। मणिपुर के राजा-महाराजाओं की आपस में तकरार, झगड़े, राजनीतिक लफड़े उन्होंने बचपन में ही जान लिए थे। भय, दु:ख, विचार-विमर्श सबका सामना किया।

राजमहल के अन्दर होने वाली परिवार की कई बातें भी। राजमहल के सिंहासन पर उनके दादाजी चन्द्रकीर्ति महाराज 36 वर्ष विराजमान रहे, यह भी उन्होंने देखा। लेकिन वह महल में ज्यादा समय के लिए न रह पाई। कच्ची उम्र में ही नोङ्माइथेम माणिकचन से उनका विवाह करवा दिया गया।

इसकी वजह है। एक दिन महारानी साहिबा माईसना ने अपने पोते युवाराज सूरचन्द्र की पत्नी यशुमती को बुलाकर कहा - ''छुटकी, तुम्हारी बेटी पर जरा नजर रखो। ये किसी की बात नहीं मानती है, ध्यान रखो। तुम कहती हो शांत स्वभाव की है, इस तरह नहीं चलेगा। इसका मन छोटे से प्राणी (कीड़े-मकोड़े) की तरह है बोलने का तो कोई मतलब ही नहीं बनता। तुमने तो बेटा भी नहीं जन्मा। पण्डित का भी यही कहना है कि तुम्हारी बेटी के नक्षत्र कुछ विलक्षण से हैं। मैं तो चाहती हूँ किसी अच्छे लड़के से इसका विवाह करवा दिया जाए, तुम्हारे क्या विचार हैं?

''ठीक है, तो आपको जैसा उचित लगे - इसमें मैं आपसे क्या पहल करूँ। आपके पोते से कहकर, महाराज तथा महारानी साहिबा आपस में जो व्यवस्था करें - मैं तो सहमत हूँ।'' सापम परिवार की कन्या ने गऊ समान अपना पक्ष रखा।

यशुमती काफी शांत स्वभाव की स्त्री है, महल में अक्सर उसकी बातें कोई नहीं करता। उसके मन में शायद काफी कुंठाएँ हो सकती हैं फिर भी किसी से नहीं बताती। ज्यादातर लोगों को तो यह भी नहीं पता कि वह यहाँ रहती है। बड़ी दीदी ङाङ्बम परिवार की बेटी प्रेममयी का ही राज चलता है। प्रेममयी सूरचन्द्र की पहली पत्नी न होने पर भी राज करती है - ये तो होना ही है। वैसे भी यह तो दस्तूर है कि चालाक व्यक्ति बाकियों से हमेशा आगे ही रहता है। केवल उसने जन्म दिया है बस इतनी सी बात है, ज्यादातर समय तो सनातोम्बी माँ ङाङ्बी और दादी माँ के पास बिताती है। केवल सोने के लिए ही लौटकर

आती है, माँ अपने बच्चे के साथ ज्यादा समय नहीं बिता पाती। राजमहल के हर द्वार पर जाती रहती है। यशुमती उसके बारे में परवाह नहीं करती ऐसी बात नहीं है। उसे भी पता है कि उसकी बेटी शरारती, दृढ़ निश्चयी तथा टक्कर लेने वालों में से है। फिर मन में सोचती है - यह लड़के के रूप में ही जन्म लेती तो सही रहता। सनातोम्बी के चलते बहुत बार तो ऐसा भी हुआ कि छोटी-सी बात का मुद्दा बन जाता है। बर्दाश्त की हद पार हो जाने पर डाँट-पीट कर नियंत्रण रखने का खयाल जब भी मन में आता है तो महारानी साहिबा खम्भे के समान सामने खड़ी रहती है जिस वजह से कुछ कर भी नहीं सकते। अपनी इस पड़पोती को महारानी माईसना हद से ज्यादा ही लाड-दुलार करती। उस पर यह बोलती है कि अपने बच्चे पर नजर रखो। महारानी साहिबा ने अपने लाड-प्यार से बिगाड़ दिया लेकिन कहें भी तो किससे। माईसना महारानी को पलटकर जवाब देने की औकात किसी की नहीं। सब कुछ सम्भाल कर नियंत्रण रखने वाली स्त्री होने पर भी कभी-कभी सनातोम्बी के आगे हार जाती है, जब सनातोम्बी अपने-आप में आती है तो महारानी साहिबा कमजोर पड़ जाती हैं। शरारती सनातोम्बी के साथ दादी की जोड़ी बहुत जमती है।

एक दिन की बात है। सनातोम्बी थोड़ी बड़ी हो चुकी थी। उसने कहा, ''दादी माँ मुझे काङ* खेलना है।'' ''अरे पक्का खेलेगी मेरी पोती। टोली कौन-कौन सी है?'' सनख्यामासी (दादी माँ) ने कहा। दो टोलियाँ हैं - हिजम लैकाई और महल की। केवल सुन्दर लड़कियों को ही लिया जाता है चाहे महल हो या फिर हिजम लैकाई। कितने तो नियम बनाते हैं - काङ माँगना मना है, काङ को ढंग से चलाना है आदि। ताजे दूध से काङ खेलने के लिए मैदान में लिपाई की। पकवान बनाए गए। महल में पहली बार सनातोम्बी द्वारा काङ खेला जाएगा। लेकिन क्या बताए कि सनातोम्बी तो गुस्से से लाल-पीली हो रही है और दादी से शिकायत करती है - ''दादी माँ आप लूखोई की पिटाई कीजिए। उसने काङ खेलने के लिए मना किया।''

---

* काङ : मणिपुर का स्थानीय खेल।

थोड़ी देर में जोर-जोर से शोर मच गया कि सनातोम्बी ने लूखोईसना को दाँत काट दिया, बाप रे अब क्या होगा।

मुद्दा यह है कि सनातोम्बी द्वारा काङ खेलने का प्रबन्ध कर दिए जाने पर लूखोईसना ने प्रतिबंध लगा दिया। लूखोई सूरचन्द्र की पत्नी ङाङ्बी का बेटा है। चालाक ङाङ्बी ने तो बेटा भी जन्मा है, एक-न-एक दिन लूखोई महल की राजगद्दी पर बैठ सकता है। लूखोई उम्र में छोटा है पर इस बात को जानता है। उसे सम्भालने वाले सेवक हर समय यही बात याद दिलाते रहते हैं और यही कारण है कि बच्चा ज्यादा बदमाशी करने लगा। सनातोम्बी और इसकी उम्र में ज्यादा अन्तर नहीं है।

सनातोम्बी अपनी सहेलियों के साथ काङ के मैदान में तैयारी कर रही थी कि बीच में घुसकर बोला, ''आप लोग काङ खेलने वाले हो, क्या यह सच है दीदी? आप नहीं खेल सकते।''

''क्यों?''

''मैं बोल रहा हूँ न, मना है।''

''तुम कौन होते हो, तुम्हारे मना करने से मैं क्या रुक जाऊँगी? तुम्हारे मतलब का नहीं है। मैं कर रही हूँ, तुम्हें क्या फर्क पड़ता है।''

''कुछ भी करना मना है।''

''क्यों नहीं कर सकते?''

''मैं लूखोईसना हूँ।''

''मैं भी सनातोम्बी।''

''मैं लड़का-तुम लड़की।''

'उफ ज्यादा ऊँचा उठ रहे हो लड़के।''

सनातोम्बी गुस्से में लाल-पीली हो रही थी, सच तो यही है कि सनातोम्बी लड़की है। महल की राजगद्दी पर लड़की का हक नहीं बनता। फिर भी वह नहीं मानती, उसे किसी

चीज के लिए रोका जाए उसे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं। उसे नहीं पता कि बेटी को जन्म देने वाली माँ को कोई भी किस्मत वाली नहीं कहता। राजमहल में तो उसे केवल बांझ से बेहतर होने का दर्जा प्राप्त होता है। इसे जन्म देने वाली माँ यशुमती की चोरी-छिपे धड़कन तेज होने लगती है और गला भी सूखने लगता है। कभी-कभी यों ही माँ को घबड़ाहट भरी साँस लेते हुए उसने खुद भी सुना है फिर भी वह नहीं जानती। दादी माँ ने आज तक अपने मुँह से ये शब्द नहीं निकाले - तुम लड़की हो, बदनसीब हो। हर वक्त बस यही कहती है कि एक तुम ही तो हो। कभी-कभी यशुमती देर रात को चुपके से कहती, ''सनातोम्बी, तुम लड़की हो इस बात को ध्यान में रखकर समझदारी से चलो .....'', आप क्या बोल रही हो? सनातोम्बी जान बूझकर अनसुना कर देती, कुछ-कुछ सोचते हुए ध्यान न देती। आज लूखोई ने जो कि वैसे तो कुछ भी नहीं है, काङ खेलने से जिस तरह मना किया सनातोम्बी को बहुत गुस्सा आ गया।

सनातोम्बी ने कहा, ''तुम अगर लड़के हो भी तो इससे क्या कर लोगे?'' ''काङ नहीं खेल सकते इस चीज के लिए रोक ही लिया न,'' लूखोई ने काफी घमण्ड से जवाब दिया। उस समय वह भी बालक था। किशोरावस्था में जब बहुत चपड़-चपड़ करने वाली उम्र होती है, उसी समय की बात है।

सनातोम्बी ने कहा, ''तुम चाहते क्या हो?''

''हिजम इबेमहल को महल की टोली में शामिल किया जाए।''

''बड़े आए हिजम लैकाई के लोग।''

''जो भी हो।''

''उसी बात के लिए इतना तांडव कर रहे हो।''

''दीदी आप मुझे बताए बिना काङ खेलने का मन बनाकर दादी माँ के पास जाकर कैसे बोल सकती हैं?''

''मतलब?''

''पहले मुझे बताना चाहिए - वो मेरे नृत्य (रियाज़) करने की जगह है। इधर काङ खेलने की सोचते हो तो पहले मुझे बताना चाहिए न।''

''नृत्य तो नर्तकियों के यहाँ जाकर करो। शर्म तो है ही नहीं, घर का लड़का नर्तकियों के यहाँ जाता है।''

''नर्तकियों के यहाँ तो पुरुष ही शोभा देते हैं। काङ खेलना मना है, मैं कह रहा हूँ न।'' इतना कहकर काङ के लिए बनाए गए मैदान के बीचों-बीच चौकड़ी मारकर बैठ गया। काङ का वह मैदान कितने दिनों से लिपाई-पुताई करके दर्पण की तरह चमचमा रहा था। कदम के निशान तक पड़ने नहीं दिए। अब सनातोम्बी से झेला नहीं जा रहा था। कूदती हुई उसके बाल नोचने लगी। दोनों लड़ने लगे, रोकने की कोशिश बेकार।

लूखोई एकदम से चिल्लाया, ''दाँत काट गई डायन, डायन।''

सनातोम्बी दादी माँ को शिकायत करने गई। लूखोई ने उसे डायन, हेल्लोई तोम्बी* वगैरह कहा इस बात पर फूट-फूट कर रो रही है। हेल्लोई तोम्बी कहकर पुकार दें तो सनातोम्बी के गुस्से का जवाब नहीं।

बड़ी माँ के घर पर सब भाग-भाग कर आए। सनातोम्बी की माँ भी आवाज सुनकर दौड़ती हुई आई। आव देखा न ताव बेटी की पिटाई कर दी। सनातोम्बी बिल्कुल नहीं रोई। एकदम सीधी खड़ी रही। सब लोगों ने मिलकर रोका। आवाज सुनकर आने वालों में शामिल सनातोम्बी की धाई माँ ने बच्चे को गले से लगा लिया।

सनातोम्बी ने कहा, ''तो क्या नहीं मारती, खुद लड़का है सोचकर कुछ भी करेगा? मारुँगी, मैं तो मारुँगी इसे।''

''पलटकर जवाब भी देती है।'' माँ फिर से पीटने को हुई। बड़ी माँ के रोकने से रुकी। उस वक्त लूखोईसना बड़ी माँ के पास खड़ा नजारा देख रहा था। उसके मन में तो चल रहा था कि अच्छा ही हुआ।

---

* हेल्लोई तोम्बी : देवदूत

लूखोई की माँ ङाङ्बी भी पहुँच गई।

हँसते हुए, ''मत मारो बहना! क्या बच्चों की बात को मुद्दा बना कर रख दिया।'' यह कहकर अपने बेटे को लगी चोट की ओर देखने लगी। बोलने की बात है, मन में बुरा तो लगता ही है।

''दीदी आपको जैसा उचित लगे वैसा ही करना। इसे सम्भालना मेरे बस की बात नहीं। बच्चे को कैसे दाँत काट दिया ..... हद हो गई ..... बेटा जरा माँ को दिखाओ तो।''

ङाङ्बी हँसते हुए बोली, ''बेटा तुम्हें तो मार पड़नी ही चाहिए। अपनी बड़ी दीदी से बदतमीजी कैसे कर सकते हो? लूखोई, अपनी दीदी से माफी माँगो। मेरी बिटिया के काङ का मैदान खराब करने की कोशिश की। उसकी ये मजाल।'' अपने बेटे पर यों ही थोंपने लगी।

''जब गलती ही नहीं की, तो माफी किस बात की।''

''गलती नहीं की, कितना झूठ बोलता है।''

फिर से झगड़ने को हुए। ङाङ्बी ने हँसते हुए रोका। इस घटना को तो निपटा लिया परन्तु मन की बात तो ङाङ्बी और सापम परिवार की बेटी दोनों ही जानते हैं।

इस तरह उसके चक्कर में कई बार मन-मुटाव हुए। बेटी को जन्म देने वाली यशुमती बहुत ही समझदारी से कदम उठाती। फिर भी बेटा-बेटी वाला मुद्दा सनातोम्बी की खोपड़ी में नहीं घुसता। अपने ही मन की करती। उसे सम्भालना यशुमती के लिए बड़ी समस्या के समान था। दिन-रात यशुमती को यही चिंता अंदर से खाई जाती।

तत्कालीन मणिपुर स्वतंत्र था तथा राजाओं का शासन चलता था। परन्तु एक तरह का तानाशाही दबाव भी था। अपनी इच्छा से कुछ भी करने की इजाजत नहीं थी क्योंकि वे तो राजघरानों के वंशज हैं, लोग क्या कहेंगे ..... उस पर बेटियों को तो और भी समझदारी से कदम रखना पड़ता था। इस समय माईसना महारानी जिंदा थीं। फिर भी कभी-कभी सब्र का बाँध टूट ही जाता था।

चन्द्रकीर्ति के बच्चे भी बड़े हो चुके थे। आपस में एक जैसे तो नहीं है फिर भी तुम लोग आम जनता से अलग हो उस बात का बार-बार अहसास दिलाते। अपनी बुआ जी लोगों के बीच रहकर ही सनातोम्बी बड़ी हुई। सभी बुआ भी सनातोम्बी को बहुत प्यार से रखती हैं, वो जैसा कहती वैसा ही करतीं। ऐसे माहौल में माँ यशुमती किस तरह उसे कस कर रखती।

एक दिन एक व्यक्ति महाराज ईश्वर चन्द्रकीर्ति को जामुन चढ़ाने लाया। नवद्वीप धाम से बड़ी मुश्किल से पौधा लेकर उसने अपने बगीचे में उगाया था, इस साल फल लग गए और इनकी चरणों की सेवा का योग बन गया तो आप ही पहुँच गए। महाराज जी ने अपनी बेटियों (राजकुमारियों) के ससुराल में थोड़ा-थोड़ा भिजवाया। जो बच गए उन्हें राजमहल में मौजूद बेटियों को बुलाकर दिया।

''कौन सा फल है महाराज (दादा) जी?'' सब लोग अजीब तरह से देखने लगे, खाने से डर रहे थे।

राजा ने कहा, ''अरे खाओ, कुछ नहीं होगा।'' सब डर-डर के सोच रहे थे कि इतने में सनातोम्बी ने झट से मुँह में डाल लिया - ''स्वादिष्ट''। एक मेरी पोती ही तो है जिगर वाली। तुम्हारी सारी बुआओं का कुछ नहीं हो सकता।'' इस प्रकार जामुन खाने वाला किस्सा रहा जिसमें राजा के सामने सभी बेटियाँ जोर-जोर से हँसी। अमूसना बाकियों से ज्यादा ही हँस रही थी। एक तो सुन्दर है, उस पर इतनी चंचल। अमूसना को सम्भालना बड़ा मुश्किल काम है।

माईसना ने पूछा, ''राजा आँगन में हँसने वाली लड़कियाँ कौन-कौन थी?''

तुरंत उत्तर आया ''आपकी पोतियाँ हैं।''

''जरा बुलाओ तो।''

सब डर-डर के प्रवेश करने लगी।

महारानी साहिबा द्वारा बुलाए जाने पर थोड़ी झिझक होती है। ये कोई साधारण माँ नहीं हैं, महारानी माईसना है - गम्भीर सिंह का दाहिना हाथ, हिम्मत वाली माईसना। सात

साला विध्वंस से लेकर मणिपुर के कई युद्ध रण देख चुकी हैं। राजनीति की उठा-पटक में भाग ले चुकी हैं। अपने दादा जी के नक्शे कदम पर चलने के लिए, छोटे बेटे चन्द्रकीर्ति की पहचान बनाने के लिए, उस पर कितने सारे डरा देने वाली घटनाओं से न डरते हुए हिम्मत के साथ बढ़-चढ़कर भाग लेने वाली मणिपुर की माईसना, बेटे के शासन काल में इस वक्त भी मणिपुर में महत्त्वपूर्ण स्थान बना रखा है। माईसना का मानना है कि राजमहल की अलग पहचान होनी चाहिए। नज़ाकत से पकड़े रखना ठीक नहीं, ढील देना भी ठीक नहीं। प्यार मोहब्बत के साथ खौफ भी होना जरुरी। राजा को बार-बार यह बात याद दिलाती।

गोविन्द जी के पूजा स्थान पर बालिकाएँ माँ जी के साथ मिलकर फूल माला पिरोने लगीं। बाल बाँधकर रखना चाहिए, मुँह ढँककर रखना चाहिए, बात करना वर्जित है। इस तरह फूल माला पिरोते वक्त माँ जी को कुथापमना* में एक जोंक मिल गया।

पूछने लगी, ''कौन फूल बिन कर लाया?''

फूल चुनकर लाने वाला तो थर-थर काँपने लगा।

''सेवक इसे इसी वक्त बंदी बनाकर सुग्नू नामक स्थान में दण्ड के तौर पर भेज इसका संस्कार कर दिया जाए।''

यह हुक्म भगवान ज़ी के सेवक को नहीं, यह दण्ड जोंक को नहीं बल्कि गैर-जिम्मेदारी से फूल चुनने वाले मंत्री सेवक के लिए कहा गया। ऐसी हैं माईसना।

एक दिन बाजार में पर्चा लगा था - महाराज का आदेश है कि स्त्री को अपने चरित्र पर आँच नहीं आने देनी चाहिए, परदेसी संन्यासी के चौखट पर विनती करना मना है।

इस पर्चे के पीछे किसका दिमाग था? - माईसना।

ऐसा कर सकने वाली माईसना महारानी अगर किसी को बुला ले तो इसमें खुश होने वाली बात बिल्कुल भी नहीं है।

---

* कुथापमना : औषधिक पौधा विशेष का पत्ता।

डर के मारे सर झुकाकर प्रवेश करने वाली राजकन्याओं से पहले छोटी सी सनातोम्बी को भेजा गया। उसे तो जरा भी डर नहीं लगता।

माँ जी ने पूछा, ''अभी राजा के सामने बत्तीसी फाड़कर कौन हँस रहा था?''

कोई जबाव नहीं मिला।

''अभी राजा के सामने कौन-कौन हँस रहा था?''

सनातोम्बी ने कहा, ''छोटी बुआ जी।''

अमूसना सनातोम्बी की ओर तीखी नजरों से देखने लगी। अगर माँ जी मौजूद न होती तो वह बुरी तरह पिटती।

''बेशर्म! अरे भला जवान लड़की इस तरह बत्तीसी फाड़कर हँसती है? आस-पास वाले क्या कहेंगे? जुल्फें खींचू तुम्हारी? इस तरह मत किया करो, माना कि तुम्हारे पिता है परन्तु हैं तो राजा ही।''

चन्द्रकीर्ति महाराज की कई महारानियाँ थीं - पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी इत्यादि ... . फिर भी कुमुदिनी के तेज के आगे सब फीके पड़ जाते। कोई भी नजर नहीं मिला पाता। कारण था कि माईसना जिंदा है। राजा का कड़ा प्रशासन होने के कारण दादाजी राजा हैं, केवल राजगद्दी पर बैठकर भरपाई कर रहे हैं ऐसा कहने की किसी में हिम्मत नहीं। आपस में प्रतिद्वन्द्वी शाही परिवार तथा अक्सर युद्ध छेड़ने वाले राजपूत - इस द्वन्द्व से उभरना कोई आसान काम नहीं। इस प्रकार के द्वन्द्व भरे माहौल में युद्ध का सामना कर चुकी हैं। मणिपुर के डगमगाने वाले काल के दौरान राजपूतों का बाहरी दिखावा भी उन्होंने देखा फिर भी मणिपुर बदकिस्मती से तहस-नहस हो जाए ऐसा वक्त कभी नहीं आया। मातृभूमि की राजगद्दी पर नजर गड़ाने वाला कोई नहीं, सोचकर आराम से बैठना उचित नहीं। माईसना अपने बेटों को बार-बार इस बात का अहसास दिलाती।

सनख्या याईस्कूल लाक्प को चन्द्रकीर्ति महाराज बहुत मानते। थोड़ी देर नजर न आने पर पूछते - बंधु आया नहीं? थोड़े दिन महल में दर्शन न दे तो किसी को भेज कर उसे अपने घर से बुलवाते। इन दोनों का चोली-दामन सा साथ चन्द्रकीर्ति के नजदीकी लोगों को खटकने

लगा। फिर भी कुछ बोलना सही नहीं, आखिर राजा की इच्छा है। आपस में फुस-फुसाहट होने लगी कि महाराज जी सही नहीं कर रहे, सनख्या याईस्कूल है - यह बात शायद इन्हें याद नहीं, आँख मूंद कर भरोसा करना ठीक नहीं ..... खास तौर पर उनके बेटों को यह बिल्कुल पसन्द न था। अपनी हरकतों के माध्यम से याईस्कूल को यह दिखलाते कि वे उनसे सहमत नहीं हैं।

एक दिन तो बेटे ने अपनी माँ से कहा, ''पिता श्री याईस्कूल लाक्प चाचा को ज्यादा ही पसन्द करते हैं, यों ही भरोसा कर लेना ठीक नहीं। माँ जी आप जरा पूछिए न, हमारी तो इतनी हिम्मत नहीं।''

माईसना सोचने लगी।

''मेरा चन्द्रकीर्ति इतना नासमझ राजा नहीं है। उसने कुछ सोच रखा होगा। ठीक है, मैं एक दिन बात करती हूँ।''

फिर भी यह जो कुछ हो रहा है इसे बर्दाश्त करना अब मुश्किल हो रहा है। उस दिन भी राजा के बराबर चल रहा था। यह तो बदतमीजी के बराबर है, देखने में भी अच्छा नहीं लगता। एक दिन यह अपनी हद पार कर जाएगा ..... ''मुझे भी लगता है कि अब हरकतें दिन-ब-दिन ज्यादा ही हो रही है। ठीक है, मैं कुछ सोचती हूँ।''

सनख्या याईस्कूल लाक्प को भी इस बात का पता है कि उसकी हरकतों से कोई सहमत नहीं है। इसी वजह से वह जितना हो सके अनदेखा करता फिर भी राजा की तरफ से बार-बार बुलावा आ जाता।

एक दिन तो वह बोल उठा, ''महाराज जी, मैं आपकी सेवा से कुछ दिन अवकाश चाहता हूँ।''

''अरे छोटे, तुम्हें किसी ने कुछ कहा क्या?''

''किसी ने कुछ नहीं कहा परन्तु आपकी सेवा में यों रोज-रोज हाजिर होना शायद उचित नहीं।''

''बोलो क्या हुआ?''

''घर वाले मुझ पर शक करते हैं, मुझे पता है'' बड़े ही दु:ख के साथ याईस्कूल लाक्प ने ये सब कहा।

''ये बच्चे तो सब-के-सब छोटे हैं, मेरे ईर्ष्यालु बरताव के कारण ऐसा हो रहा है। बच्चों की बातों पर कौन ध्यान देता है'' इस प्रकार राजा ने उसे समझाते हुए कहा।

ईर्ष्या की भावना बढ़ने लगी। राज परिवार के लोग छिप-छिप कर खबर रखने लगे- याईस्कूल लाक्प के घर में कौन-कौन आता है, भोज वगैरह, कितनी बंदूकें, हथियार वगैरह। खूफिया खबरी के जरिए उस पर नजर रखी जा रही है, बोराचाउब को पक्की खबर मिल गई। गुस्से के मारे दिमाग खराब हो गया फिर भी राजा से पूछकर महल में कदम न रखने का प्रण लिया। हाथ जोड़ते हुए कहा - ''आपके चरणों की कसम, महाराज आपके खिलाफ मैंने कुछ नहीं किया, न ही कभी करुँगा। आज से मेरा महल में आना बंद।''

''अब फिर से किसी ने कुछ कह दिया क्या?''

''राजा के सिंहासन के आस-पास नजर गाड़े बैठा है कहकर मुझ पर शक किया जा रहा है। श्री गोविन्द जी (भगवान्) इस बात के साक्षी हैं कि मैं आपका बाल भी बाँका करने की नहीं सोचता। महाराज जी आपके जीते जी .....'' अचानक रुक गया। राजा ने ध्यान नहीं दिया। हँसते हुए मजाक में टाल दिया। बैठक के दौरान कहा - ''भाई आज तो मैं तुम्हारे साथ खाना खाऊँगा।''

फिर भी रिश्ते की डोर पर गाँठ तो पड़ चुकी थी। नवीन नामक व्यक्ति ने उनके पिता नरसिंह को बृनाचन्द्र के आँगन में छूरा घोंपा था - वह उसे भूला नहीं। यों कल-परसों की ही बात लगती है। इसके पीछे किसकी योजना हो सकती है? उनको बेहद प्यारा, माननीय चन्द्रकीर्ति की माँ माईसना पर उन्हें शक है।

जोर-जोर से शोर मचने लगा - याईस्कूल लाक्प ने राजा के सामने रोते हुए कसम खाई कि राजा का बुरा करने का उसे कभी खयाल तक नहीं आया ....।

लेकिन माईसना महारानी गरदन हिलाते हुए कुछ सोचने लगी।

याईस्कूल लाक्प भी सर हिलाने लगा - अब बातों को पहले की तरह नहीं लिया जाना सही नहीं। इस तरह के सुनहरे, बड़े विकसित बंदीग्रह में सनातोम्बी बड़ी हुई। इस तरह की दमदार दादी के पास रहने का अवसर मिला। बड़ी महारानी के बिस्तर पर चढ़कर आराम फरमाना किसी भी पोते-पोती के बस की बात नहीं - केवल सनातोम्बी ही है। जबरन उनसे कहानी सुनती। ढेर सारी कहानियाँ-सात साला विध्वंस, युद्ध, कछार की कहानी आदि। कई शाम कहानी सुनते-सुनते अपनी दादी की गोद में सोयी। उसके सो जाने के बाद माँ उसे युवराज सूरचन्द्र के घर लेकर जाती।

2

सम्राट चन्द्रकीर्ति, नाउचिङलेन नोङद्रेनखोम्ब का शासन काल चल रहा है, मणिपुर काफी विकसित हो चुका है। राजा के साथ हैं - माईसना, मेजर थाङ्गाल, शौगाइजाम्ब तथा अन्य काबिल, समझदार लोग। उसके अलावा स्वयं उनकी माँ माईसना, परन्तु घर में शांति का माहौल नहीं। एक ही माँ की औलाद न होने के कारण भाइयों का मन-मुटाव, अपने मन की करने वाली बेटियों के कांड भले ही बाहर से पता न चले परन्तु अन्दर-ही-अन्दर कई बार घुटन महसूस करने लगे। इस प्रकार के घर में जन्म लेने वाली सनातोम्बी के मन में कभी-भी ऐसी भावनाएँ नहीं रही। वह तो हिरण के बच्चे की तरह यहाँ-वहाँ कूदती-फाँदती। अपनी बुआ के कमरे में जाती। वह तो सबका खिलौना थी।

उस दिन भी अङोम परिवार के सदस्य महारानी साहिबा को नमस्कार करने आए। आज भी चिङशूबम चनू (बहू) की बेटी राजकुमारी सनाफांदेङ का हाथ माँगने झोली फैलाए खड़े हैं।

महारानी साहिबा ने यह बोलकर भेज दिया कि राजा से पूछ कर खबर पहुँचा देंगे। लेकिन इतना तो पता है कि महारानी जी की तरफ से हाँ है तो राजा के तरफ से भी हाँ ही है, यह तो बस औपचारिकता के तौर पर बोला गया है। अङोम परिवार के लोगों को आते वक्त सनातोम्बी ने देख लिया। उस वक्त वह अपनी माँ का हाथ पकड़े वहीं पर थी। हाथों-हाथ अपनी बुआ सनाफांदेङ के पास दौड़ती हुई गई।

हाँफते हुए बुआ से कहने लगी - ''बुआ जी, अङोम परिवार के लोग आए थे। बहुत सारा सामान लाए थे। दादी माँ ने तुम्हारा रिश्ता अङोम के घर में तय कर दिया।

''उफ, कितना सारा सामान .....।''

फांदेङसना ने जवाब नहीं दिया। दिल-ही-दिन में उदास थी। सनातोम्बी ने पास जाकर कहा, ''बुआ जी क्या हुआ? हुआ क्या?''

''सनातोम्बी'' बुआ ने उसे गले से लगाते हुए कहा।

''कहिए बुआ जी।''

''मैं तुमसे कुछ बोलने जा रही हूँ, तुम कर पाओंगी?''

''बिल्कुल'' सनातोम्बी ने बिना जाने ही हामी भर दी।

''क्या तुम दादाजी के पीछे जाकर गोविन्द जी की संध्या आरती करने जा पाओगी?''

''बिल्कुल। मैं तो अक्सर दादाजी के पीछे-पीछे जाती हूँ। दादाजी तो मुझे बिल्कुल भी नहीं डाँटते।''

''वहाँ पहुँचकर दादा क्षेत्री दूहोन को बोलना कि मुझसे एक बार आकर मिले। गोविन्द जी को चढ़ाये गए पूजा के फूल लेकर आने को कहना।''

''ठीक है बोल दूँगी'' भागती हुई चली गई।

एक दिन पहले भी सनाफांदेङ अपने कमरे में रो रही थी।

सनातोम्बी ने पूछा, ''बुआ जी, आप रो क्यों रहे हो?''

बच्चे की बात सुनकर बुआ फूट-फूट कर रोने लगी।

सनातोम्बी भी बगैर जाने फूट-फूट कर रोने लगी। अपने छोटे-छोटे हाथों से बुआ की भीगी जुल्फों को सँवारते हुए आँसू पोंछती।

फांदेङ ने कहा, ''चलो, मैं चुप हो गई'' अपना चेहरा दिखाओ।

सनातोम्बी तुम कर पाओगी, अपनी बुआ का एक काम करोगी?

''बिल्कुल''

''तुम सेवक मेरी को जानती हो?''

''जानती हूँ, ढोलक बजाने वाला ही न। उसे तो मैं बहुत अच्छे से जानती हूँ। मुझे संगीत तथा सितार बजाना सिखाएगा इस प्रकार कहता रहता है। सुन्दर तो है। बुआ जी, लम्फेल सेवक और मेरी सेवक में से कौन सुन्दर है?''

''मंझली बुआजी के लिए लम्फेल सेवक और मेरे लिए मेरी सेवक'' जवान लड़की ने हँसते हुए जबाव दिया।

हाथियों के बीच हाथी सम्भालने वाला, लोगों के बीच लम्फेल सेवक - सभी रानियों का कहना है। सनातोम्बी ने सुना था। याद करते हुए कहने लगी।

चलो, ''मुझे तो कोई भी पसन्द नहीं।''

''आपके लिए तो पूरे मणिपुर में सबसे सुन्दर, सुशील लड़का देखकर रिश्ता तय करेंगे।'' बुआ उससे मजाक करती।

''चुप, गंदी बातें करते हो, खराब बातें क्यों करती हो?''

''तुमने कहा तभी तो बोल रही हूँ। देखो सनातोम्बी, उस वक्त मैंने जो कहा था।''

''क्या चीज़?''

''मेरा एक काम करने को तुमसे कहा था न, भूल गई?''

''याद है, उसमें कौन-सी बड़ी बात है?''

''किसी को कानों-कान खबर नहीं होनी चाहिए। दादी माँ ने सुन लिया तो हम दोनों की खैर नहीं।''

''दादी माँ ने पूछ लिया तो मैं बिना बताए नहीं रह सकती। दादी के पूछे जाने पर कुछ छिपाने से मुझे बहुत डर लगता है।''

''कुछ पता नहीं लगेगा बुद्धू। बस तुम अपना मुँह बन्द रखना।''

''पर बोलो तो सही।''

''उस दिन की तरह दादाजी के पीछे-पीछे गोविन्द जी के यहाँ जाकर मेरी भाई साहब, नहीं दादा क्षेत्री दूहोन को एक बात बताना।''

''मुझसे नहीं होगा, वह कुबड़ा बूढ़ा दूहोन मजाक बहुत करता है।''

''तुमसे क्या कह दिया?''

''वह मुझे देवदूत बोलता है।''

''पगली कहीं की, यह तो नहीं कि खुश हो। ..... सुनो, उस दिन की तरह छोटी माँ थोकचाऊ के यहाँ पूजा के फूल लेकर आना, यह बोलने में क्या जाता है?''

''आपको पसन्द है तो मैं ही ले आती हूँ।''

''चुप, बच्चों के पकड़ने की चीज नहीं हैं हाथ-पैर लग गया तो क्या करेंगे। जो मैं कह रही हूँ उसे करो, गुड़िया बनाकर दूँगी।''

सनातोम्बी खुशी-खुशी दौड़ती चली गई।

चिङाखम परिवार का बेटा मेरी सेवक। असली नाम तोनजाओ, याईस्कूल गुट में रहता है। अत्यंत प्रिय होने के कारण राजा उसे 'मेराजान', मेरी आत्मा कहकर पुकारते थे जिस वहज से लोग उसे मेरी कहकर पुकारने लगे। दिखने में सुन्दर, साफ-सुथरा तथा गीत-संगीत में प्रकाण्ड पण्डित। गीत-संगीत को पहचानने वाले चन्द्रकीर्ति ने कई कलाकारों को वाद्य-यंत्र सीखने हेतु बाहर भेजा जिनमें से वह भी एक है। लौटकर आते ही मेरी महल में मशहूर हो गया। लोग उससे जलने लगे। राजा का चहेता होने के बावजूद भी उसकी बराबरी वाले उसे पसन्द न करते। परन्तु कोई उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता - वह तो राजा का मेरी है। अभी महल में आए ज्यादा वक्त नहीं हुआ था तभी मेरी को हटाने के लिए षड्यंत्र रचा ही जा रहा था कि राजा ने मेरी को फिर से नृत्य मण्डली का प्रमुख बना दिया। पहले वाले गुरुजी को मन-ही-मन अच्छा नहीं लगा। वैसे उसे तो संगीत वाला भाग सम्भालने के लिए भेजा गया था। चूँकि वह काबिल था इस वजह से खुलेआम बोलने की किसी में हिम्मत न थी।

परन्तु यह सब मेरी को समझ न आता। याईस्कूल का रहने वाला था, इस नाते उसे यह सब पता होना चाहिए था परन्तु उसे पता नहीं चला। हाल ही में प्रवेश किए मण्डली की गीत-संगीत की दुनियाँ में डूबा रहा। लेकिन उससे भी बढ़कर एक और गलती से वह बच नहीं पाया। गलती यह थी कि वह सनाफांदेङ को और सनाफांदेङ उससे प्रेम करती। गलती से वह इस दरिया में कूद पड़ा। चारों तरफ बात फैल गई। मेरी को पसन्द न करने वालों की संख्या बढ़ गई। जानते हैं कि वह चिङाखम की औलाद है फिर भी जब पता है कि अङोम के साथ रिश्ता तय हो चुका है ..... यह तो बदतमीजी है, बेशर्म-बेहया लोगों वाली हरकत है। दिखने में सुन्दर है, राजा को प्रिय है तो क्या गद्दी पर राज करोगे?

जाने-अनजाने में सनातोम्बी तो अपनी बुआ की खबर पहुँचाती। एक दिन तो वह मेरी की गोद में बैठकर रास नृत्य (बसन्त रास) सीखते हुए देख रही थी। उसकी बुआ

सनाफांदेङ सबसे आगे थी, मेरी सूत्रधार के पीछे बैठकर सितार बजा रहा था। मेरी ने कई बातें की जो कि सनातोम्बी की समझ के परे थीं।

''आपकी बुआ की तान थोड़ी ठीक नहीं है। मैं एक बार सिखा देता तो सही रहता .....।''

एक दिन सनातोम्बी अपनी बुआ के कमरे में प्रवेश करने को हुई कि उसे रोक दिया। कहा, अस्वस्थ है अन्दर जाना मना है। सनातोम्बी को गुस्सा आ गया, रोने को हुई - उसे पता था कि उसकी दादी कमरे में उपस्थित है। गुस्से में आकर अपनी दादी के घर छोटे से बिछौने में लेट गई, दादी के लौटकर आने का इंतजार करने लगी। थोड़ी देर बाद दादी ने प्रवेश किया, उन्हें पता था कि सनातोम्बी नाराज है, कुछ-न-कुछ तो पक्का हुआ ही होगा।

अपनी पोती को प्यार से पुचकारते हुए कहा, ''ओ ..... तो बच्चा शायद सो गया है, मैं आ गई इसे सुनाई नहीं दिया। कोई है, इसकी माँ को बुलाओ, गोदी में उठाकर माँ के पास पहुँचा दो'' ''आपसे किसने कहा पहुँचाने को'' सनातोम्बी रोने को हुई।

दादी ने पुचकारते हुए कहा, ''किसने परेशान किया मेरी पोती को।'' ''जरूरत नहीं है छूने की'' जोर-जोर से रोने लगी।

इस तरह दादी-पोती के नखरे अक्सर चलते रहते। लोगों को यह देखने में बड़ा ही मजा आता। चुप हो जाने पर सनातोम्बी ने पूछा, ''बुआ को क्या हुआ?''

''वह बीमार है।''

''क्यों?''

''ऐसे ही बीमार है।''

''ऐसे ही बीमार है तो मुझे अन्दर क्यों नहीं आने दिया?''

''ओह, तो इसलिए मेरी पोती मुँह फुलाए बैठी है। किस गँवार ने मेरी पोती को आने से रोका, अपनी बुआ की तबीयत पूछने आई बच्ची की रोका।''

''मैं बुआ जी की तबीयत पूछने नहीं, आपको ढूँढने आई थी।''

''तो एकदम घुसकर आ नहीं सकती थी? पोती को अपनी दादी से मिलने से कौन रोक सकता है। बदतमीज! कौन है बताओ।''

''लूशै दादू।''

''ठीक है, मैं देखती हूँ। माथे पर चूना-हल्दी लगाकर सजा देंगे तब पता चलेगा।''

दादी ने अपनी पोती को मनाया।

आवाज दी, ''तोनदोनबि।''

''जी महारानी साहिबा।''

''देखो, दूसरे की दी हुई फूल वगैरह मत लेना।''

''क्यों सनख्यामासी?''

''तुम्हारी बुआ किसी के दिए हुए फूल को लेने के कारण ही बीमार पड़ी है। ओझा का कहना है कि पाँच चम्पा के फूलों से शरीर को काबू में कर लिया गया है।''

सनातोम्बी घबड़ा गई। चिंता करने लगी।

एक दिन संध्या आरती सम्पन्न होते वक्त मेरी सेवक ने सनातोम्बी से कहा, ''राजकुमारी जी, अपना हाथ बढ़ाओ - कुछ देना है।''

सनातोम्बी ने अपने छोटे से हाथ को आगे बढ़ाया। मेरी सेवक ने उसे दो पेड़े दिए - याईस्कूल के दूहोन का बनाया हुआ पेड़ा। बहुत ही प्रसिद्ध पेड़े हैं।

फिर कहा - ''लो, ये वाला भी देखो।''

एक के ऊपर एक रखे गए तीन अलग आकार वाले केले के पत्तों पर तखेलै* नामक फूल। दो अधखिले तखेलै को जबरदस्ती खिलवाकर जोड़कर बनाया गया फूल।

सनातोम्बी को समझ नहीं आया। वह मेरी की तरफ देखती रही।

---

* तखेलै : दोलन चम्पा

मेरी ने सनातोम्बी को पकड़कर हँसते हुए कहा, ''देखो, ये तो खाने की चीज नहीं है, अपनी बुआ जी को दे देना, कल फिर से याईस्कूल वाले पेड़े लेकर आऊँगा।''

सनातोम्बी की बुआ कई सारी हैं परन्तु मेरी ने जिनको देने को कहा वह सनाफांदेङ है यह बात वह जानती है।

आज उसे चिंता होने लगी। मेरी के दिए गए फूल से ही तो कहीं बुआ की तबीयत खराब नहीं हुई। अरे, वह तो चम्पा नहीं नाचोम* है। बालिका अपने आप ही सोचने लगी।

इस घटना के एक-दो दिन बाद सनातोम्बी ने अपनी दादी के यहाँ जाते वक्त देखा- दादी महल की औरतों, लड़कियों को बुलाकर कुछ बता रही हैं।

सबको अपने पास बुलाकर कहने लगीं, ''प्यारी पोतियों, बहुओं, महल में खिले फूल तक भी खुद के अलावा किसी और के हाथों से तोड़े गए हों तो उन्हें मत लगाना (बालों में मत लगाना)।''

सनातोम्बी ने कहा, ''छोटी बुआ तो दूसरों के दिए हुए फूल को अक्सर बालों में लगाती हैं, दूसरों के कान पर से निकालकर भी लगा लेती हैं।''

अमूसना ने सनातोम्बी को चाटा लगाया, ''ये बच्ची कितना झूठ बोलती है।''

दादी ने अपने बेटी को डाँटते हुए कहा, ''तुम ऐसा करती हो तभी तो बोल रही है, बच्चे को परेशान मत करो।''

हाथों-हाथ पुजारी को बुलाकर कहा, ''पुजारी जी, गोविन्द जी के लिए फूल किसने तोड़े?''

''महारानी साहिबा, तीन सेवक हैं, मुँह ढँककर घुटनों के बल झुक कर पुजारी ने उत्तर दिया। घबड़ाने लगा कि क्या हो गया।

---

* नाचोम : छोटा गुलदस्ता

''बता दो गोविन्द के ब्राह्मण दूहोन पहरेदार सेवकों से कि दूसरों के द्वारा लाया गया फूल गोविन्द जी को चढ़ाना मना है।''

''पहले भी नहीं चढ़ाते थे महारानी साहिबा।''

''फिर से बोल दो ..... ठीक है जाओ।''

थोड़ी देर बाद शोर मच गया कि चिङाखम मेरी ने शनिवार के दिन फांदेङसना को मंत्र के सहारे वश में कर लिया। कठोर दण्ड दिया गया - प्रत्येक पूजास्थल पर माफी मँगवाई, भरे बाजार में बेइज्जत किया गया। उससे भी बढ़कर राजमहल के सामने सर मुंडवा कर बेड़े पर लिटा दिया।

परन्तु यह सब सनाफांदेङ को नहीं पता था, बताया नहीं गया। होशियारी के साथ यह हुक्म दिया गया कि यह बात जिस किसी के जरिए सनाफादेङ तक पहुँचेगी, उसे मेरी से भी बढ़कर सख्त दण्ड दिया जाएगा। भरोसेमंद रानियों ने बारीकी से नजर रखी। सनाफांदेङ कैदखाने में रह गई - बिल्कुल कैदखाने की तरह ही तो है।

और फिर छिप कर अपने भाई साहब मेरी के लिए रोने लगी। इस बार मेरी के साथ ज्यादती हुई है। अधिकतर लोगों को हैरानी हुई कि मेरी राजा को इतना प्रिय होने पर भी सिर्फ इसलिए कि खुद की बेटी से प्रेम करता है कुछ ज्यादा ही कठोर दण्ड दिया गया है। कह देते कि निकल जाओ, निष्कासित कर देते। मेरी खुद भी हैरान था, सोचने लगा ये क्या हो रहा है मेरे साथ?

उसकी बदकिस्मती थी कि महाराज की पत्नी (छोटी रानी) थोकचोम देवान की बेटी चन्द्रमुखी उसी के मोहल्ले से थी। याईस्कूल में रहने वाली यह बाला जब अपने घर में रहती थी तब से मेरी को छोटे भईया कहकर बुलाती है। बहुत ही जवान है महारथी जी की पत्नी। कई राजकुमारियाँ तो उम्र में उनसे भी बड़ी थी। राजघराने की बहू होने के बावजूद भी उनकी इच्छापूर्ति नहीं हो पाती। वह राजा की सबसे छोटी रानी थी परन्तु महारानी साहिबा अभी जीवित थी उस पर बेटों को जन्म देने वाली कई रानियों के बाद वह आई। वह अपने मन का

दुखड़ा मेरी के समक्ष रखती, सुझाव करती। सनाफांदेङ और मेरी की जान-पहचान की शुरुआत भी छोटी रानी के आँगन में हुई।

भले ही मेरी छोटी रानी के मौहल्ले वाला था परन्तु यों उसका बार-बार आना ठीक नहीं था, उसे समझदारी से काम लेना चाहिए था। गीत-संगीत के प्रकाण्ड-पण्डित मेरी इन मामलों में अनाड़ी रह गए।

महल में फूँक-फूँक कर कदम रखने का मतलब वह समझ नहीं पाया, समझ न सका। लोग आपस में बोलने लगे थे कि एक ही मौहल्ले से होने पर भी मेरी छोटी रानी के यहाँ अक्सर क्यों आता है?

यह बहुत बड़ा सवाल है।

यह डरने वाला सवाल है।

परन्तु मेरी को पता नहीं चला। उस दौरान वह सनाफांदेङ पर लट्टू था, प्रेम में डूबा था। उसने सोचा प्रेम करना कौन सी गलत बात है, कौन रोक सकता है। एक दिन किसी ने उसे अपना समझकर प्यार से चुपचाप यह बताया भी था परन्तु मेरी ने बड़ी आसानी से उत्तर दे दिया, ''क्या फर्क पड़ता है ताऊ, मैं गलत नहीं हूँ तो सब सही है।''

''मैं कह रहा हूँ न, बेटा तुम गलत साबित हो जाओगे। राजा के सर पर सवार होने वाली बात हो गई तो तुम पछताओगे, मैं तुम्हें अपना समझकर बता रहा हूँ। उस वक्त तुम गलत नहीं हो ऐसा कहने से नहीं चलेगा।''

''गलत कैसे? किसी लड़की से प्रेम करना क्या गुनाह है?''

''तुम्हें जिससे प्रेम है वह कोई साधारण लड़की नहीं, राजा की बेटी है।''

''राजा की बेटी लड़की नहीं होती, क्या बात करते हो।''

''हे प्रभु! यह तो बहुत ही अड़ियल है -तुम याईस्कूल वालों की सामने वाले को कुछ न समझने वाली आदत छोड़ दो। कल को मेरी बातें सच साबित होंगी, मैं तो याईस्कूल का रहने वाला हूँ, बाकी तुम खुद ही समझदार हो।''

सच बात है।

उस वक्त के याईस्कूल निवासी जो कि महल की सेवा में नियुक्त होते थे बाकी लोग उन्हें पसन्द नहीं करते। घमंडी, बदतमीज स्वभाव के याईस्कूल वाले ऐसा कहते हुए लोग उनसे चिढ़ते थे। कहा जाता था कि उनका ऐसा मानना है कि महल उनके दम पर ही टिका है।

याईस्कूल वाले लम्बी-लम्बी शेखी बघारते - ''वैसे तो कहा जाता है कि चन्द्रकीर्ति महाराज भी याईस्कूल का इलाका पहुँचते ही अपनी पगड़ी सम्भालने लगते हैं .....'' इस बात को याईस्कूल वाले बड़ी खुशी से बताते हैं। अप्रिय लोगों को बार-बार सुनाते। बातें बनाने में माहिर याईस्कूल वाले हर बार इसमें कुछ-न-कुछ नया जोड़कर बताते।

याईस्कूल वाले कहते, ''आपकी जानकारी के लिए बता दें, चन्द्रकीर्ति महाराज तक याईस्कूल के इलाके में जाने से डरते हैं। क्या आपने नहीं सुना?''

''हाँ हाँ बेटा, पगड़ी सम्भालने वाली बात न? जानते हैं, अब बस भी करो।''

एक तो याईस्कूल वाला है, राजा को भी प्रिय है, उस पर दिखने में भी सुन्दर है। लोग उसे बिल्कुल पसन्द नहीं करते यह बात मेरी खुद सुन चुका था परन्तु जानबूझकर ध्यान नहीं देता। गीत-संगीत में डुबकी लगाए बैठा था, सनाफांदेङ के प्रेम में खोया था। इसके अलावा उसे कुछ समझ न आता। बेसब्र होकर छोटी रानी के यहाँ दौड़ता हुआ बोल गया, ''बहना कोई रास्ता निकालो।''

''क्या हुआ छोटे भाई साहब।''

''मेरा आज राजकुमारी जी से मिलना बहुत ही जरूरी है। एक गीत तैयार किया है, राजकुमारी जी को पहले सुनाना जरूरी है ..... उसके पश्चात् गोविन्द जी को प्रस्तुत करूँगा। तुम एक बार इंतजाम कर दो।''

''भाई साहब आप जो कर रहे हैं वह कुछ ज्यादा ही हो रहा है। आपकी हरकतें ज्यादा ही बढ़ रही हैं। पता लग गया तो आप और मैं दोनों ही फँसेंगे। आप प्राणों से हाथ धो बैठोगे और मेरा तो मायके जाना पक्का रहा।''

''मुझे यह सब नहीं पता। यह गीत तो कुछ भी करके राजकुमारी जी को सुनाना ही पड़ेगा ..... मैं तुम्हारे पैर पकड़कर विनती कर रहा हूँ, एक बार तो उससे मिला दो। उसके बाद आगे से नहीं कहूँगा।''

इस प्रकार मेरी ने न जाने कितनी बार छोटी रानी को लपेटे में लिया। छोटी रानी को भी गुस्सा आ गया पर उसकी सूरत और हरकत देखकर कुछ कह न पाती।

छोटी रानी के यहाँ से मेरी बाहर आया। उसने देखा कि रास्ते पर लम्फेल खड़ा था। उसने देखा कि उसके देखने का तरीका कुछ सही नहीं था। लम्फेल ने पूछा, ''कहाँ से आ रहे हो दिन ढलने के बाद?'' ''छोटी रानी को अपने मायके कुछ खबर पहुँचानी थी, उसी सिलसिले में गया था।'' ''आपका मतलब यह है कि छोटी रानी के मायके से खबर लाने-ले जाने के लिए राजा साहब ने कोई सेवक नहीं लगाया।''

''वह मुझे नहीं पता। अपने मौहल्ले वालों के हाथ भी तो खबर भिजवाया जाता है भाई साहब। इसमें कोई गलत बात है क्या?''

''नियम है या नहीं यह तो आपको पता ही होगा मुझे तो क्या मालूम - यह जानने का मेरा तो कोई मतलब भी नहीं बनता।'' लम्फेल सेवक ने व्यंग्यात्मक रूप से जबाव दिया।

''यदि इन बातों को जानने का मतलब नहीं बनता तो न जानना ही बेहतर सही'' मेरी ने बड़े ही अकड़ के साथ लम्फेल सेवक के मुँह पर दहला मार दिया।

लम्फेल सेवक, थाङ्गाल का बेटा लम्फेल, महल में जाना-माना व्यक्तित्व है। राजा के लिए फायदेमंद लम्फेल है।

एक दिन यों ही आँगन में काम करने आए दो लड़कों में तू-तू-मैं-मैं से बहसबाजी हो गई।

परिस्थिति के औचित्य-अनौचित्य का ख्याल न करते हुए लम्फेल ने कहा, ''सेवक बहुओं के इर्द-गिर्द बिना वजह आना-जाना करता है - यह बात राजा के कानों तक पहुँच चुकी है, समझदारी से काम लो।''

''क्या बेवजह?''

''थोकचाऊ राजा की छोटी रानी है।''

''थोकचाऊ मेरी भी मौहल्ले की छोटी बहन लगती है।''

''लेकिन अब तो राजमहल की बहू बन चुकी है।''

''लेकिन मेरी तो छोटी बहन लगती है।''

''राजकुमारी जी को भी आपने बिल्कुल पागल कर रखा है।''

''उसमें आपको क्या आपत्ति है?''

इस वक्त मेरी को किसी की परवाह नहीं क्योंकि उस पर राजा का हाथ है।

''अब राजा मुझसे इतना स्नेह करते हैं इसमें मेरी क्या गलती है?''

''राजा के सर पर सवार होना तो बहुत बड़ी गलती होगी। महल में रहना है तो तमीज-व्यवहार जान लेना ही उचित होगा।''

''यदि सनाफांदेङ को प्रेम करने से मर्यादा टूटती है तो टूटे।''

''महलों और बस्तियों में थोड़ा अन्तर होता है। जवान लड़की के आँगन में जहाँ कपड़े बुनने / बनाने का काम होता है वहाँ हुक्का पकड़कर बैठे रहना महल में नहीं चलता।''

''अच्छाई का ढोंग करना - यही चलता है क्या? मुझसे तो ढोंग नहीं होता। और हाँ, राजकुमारी से प्रेम करने में प्रतिबंध लगे इस प्रकार के नियम-पालन मैं नहीं कर सकता। इसके अलावा मैं चिङाखम परिवार की औलाद हूँ। आप भी अपनी किस्मत आजमा लीजिए और क्या सिर्फ सनाफांदेङ ही यहाँ राजकुमारी है।''

''बता रहा हूँ कि महल में यह सब नहीं चलता।''

''स्वर्ग में?''

''महल स्वर्ग तो नहीं है न। यह तो मर्यादा की बात है। राजमहल की सेवा में जल्दी जुट जाने के कारण आपको नियम-अनुशासन सीखने का वक्त ही नहीं मिल पाया।''

मेरी ने हँसते हुए उत्तर दिया, ''अरे, प्रेम करने में प्रतिबंध वाला अनुशासन तो मैंने नहीं सीखा। आप जैसा मार्गदर्शक पहले मिल जाता तो सही रहता।''

तू-तू-मैं-मैं बढ़ने लगी। लोगों ने मिलकर शांत किया।

लम्फेल सेवक को पसन्द न करना मेरी की गलती थी। उसे लम्फेल के साथ भिड़ना नहीं चाहिए था। मेरी बेवकूफ था, नासमझ था। लम्फेल सेवक के लिए तो उसके बाप-दादा रास्ता बनाकर जा चुके थे। उसके पिता थाङ्गाल महाराज गम्भीर सिंह चिङलेन नोङ्ग्रेनखोम्ब के वक्त से महल को सम्भाल रहे थे। उस पर प्रजा में उनके गुणगान स्वर बहुत ऊँचे थे। इनके सामने मेरी क्या था? वह तो खुद इसी बार किस्मत के सितारे राजा के साथ मिल जाने से महल में है। महल में अपनी पहचान बनाना उसके लिए आसान नहीं, न ही वह इस लायक है कि महल में लोगों को अपनी तरफ खींच सके। मेरी तो बेवकूफ है, उसके पास कुछ भी नहीं - पागल की तरह गीत-संगीत में लगा रहता है। लम्फेल के साथ उसकी तुलना करना तो शीशे से पत्थर को तोड़ने के समान है। कहा जाता है कि ऐसी कोई राजकन्या नहीं थी जो लम्फेल को न चाहती हो। लेकिन मेरी कहने लगा, ''अपने गिरेबान में तो झाँककर देखते नहीं दूसरों की बात क्यों करते हो? समर्थन में ज्यादा लोग होने का मतलब ही अच्छा होना होता है क्या?''

राजमहल में बहने वाली एक अलग धारा भी होती है, जिसमें कई राज दफन होते हैं, हालांकि उनके बारे में कहा नहीं जाता फिर भी पता तो रहता ही है। कई बातें अधूरी रह जाती हैं तो किसी में कुछ अतिरिक्त बताया जाता है।

लम्फेल के बारे में चोरी-छिपे बोले जाने वाली एक बात और है, यह घटना मेरी के महल में आने से पहले घट चुकी है। यह बात मेरी भी सुन चुका है इसीलिए वह लम्फेल को इज्जत नहीं देता, उसके द्वारा मर्यादा का पाठ सुनकर उसे मन-ही-मन हँसी आने लगी। सुनने में यह आया था कि किसी सुन्दर-सी शादीशुदा स्त्री और लम्फेल में प्रेम-सम्बन्ध था। इनका प्रेम परवान चढ़ने लगा, जान बूझकर बदतमीजी की परन्तु लम्फेल था - थाङ्गाल का पुत्र। एक दिन बर्दाश्त के बाहर हो जाने पर उस स्त्री का पति महल में आकर राजा के पास जाता

दिखा तो चन्द्रकीर्ति महाराज ने लोगों को इधर-उधर भेज दिया और पूछा - ''क्या हुआ भाई?'' जो पूछने आए हो उससे शायद मैं परिचित हूँ।

कहा भी जाता है कि दीवारों के भी कान होते हैं। उसने पूछा, ''महाराज जी, आपके आँगन में लगा पीपल का पेड़ जरूरत से ज्यादा ही बढ़ रहा है - मैं अपने आप ही सम्भाल लूँगा।''

''बिल्कुल। मुझे भी पता है। तुम्हें जैसा पसन्द है उसी तरह कटाई-छँटाई कर देना। लेकिन जड़ों से मत काट डालना, देश के लिए उपयोगी व्यक्ति है।'' परन्तु मेरी को लम्फेल के साथ बहसबाजी नहीं करनी चाहिए थी। बहुत ही खतरनाक और दमदार आदमी है।

मेरी निश्चिंत होकर सनाफांदेङ के खयालों में खोया था, सनाफांदेङ को अपने वश में करने के लिए दिए गए दण्ड को लेकर वह खुद भी हैरान-परेशान था। आँखें खुली तब पता चला - वह बेवकूफ था, यों ही किसी के साथ बहस करना बेवकूफों का काम होता है। मेरी को प्रेम करने का दण्ड मिला। दण्ड था - सबसे पहले तो उसके घर में छापा मार उसे बन्दी बना लिया। उसकी खबर पहुँचाने के जुर्म में नारोम्बम का बेटा उत्तम और अथोक्पम का बेटा चाऊब - दोनों को पकड़ लिया गया। बुधवार के दिन मीनूथोङ में तपती धूप में लिटा दिया। गुरुवार के दिन नोङपोकथोङ में, शुक्रवार के दिन अपने घर मोईराङखोम में लिटाया। राजकुमारी को अपने वश में कराने के कारण शनिवार के दिन मेरी से हर मंदिर में माफी मंगवाई। राजबाड़ी के सामने बेड़ा बनाकर सर मुंडवाकर तपती धूप में लिटा दिया। पूरी दुनिया वालों के सामने घोषणा करते हुए प्रेम करने का दण्ड दर्शाया गया, राजा की बेटी से प्रेम करने वाला बेवकूफ मेरी। राग-रागिनी के उचित-अनुचित को लेकर एक वाद-विवाद सभा में बुरी तरह से विचार-विमर्श कर बाहर निकलते समय उसे सबसे पहले यह दण्ड मिला। जिस राग पर चर्चा हो रही थी उसे गुनगुनाते हुए बाहर निकल रहा था - परन्तु रास्ते में ही ठोकर लग गई।

इस घटना के बाद महल में दोबारा कभी मेरी दिखाई नहीं दिया - मेरी का नामों-निशान मिटा दिया गया। वापस लौटते वक्त, उस घड़ी उसे केवल एक ही इंसान को

लेकर शर्म महसूस हो रही थी - लम्फेल सेवक। उसे केवल दो लोगों के लिए चिंता हो रही थी - सनाफांदेङ का क्या होगा। क्या छोटी रानी पर मेरे कारण शक किया जाएगा?

राजबाड़ी के सामने मेरी को बेड़े पर लिटाए हुए सनातोम्बी ने देख लिया। भीड़ के बीच वह अपनी माँ का हाथ थामे देख रही थी। उससे मेरी की यह दुर्दशा देखी नहीं गई - कैदी के वस्त्र में, सर मुंडवाया हुआ व्यक्ति मेरी ही है उसे विश्वास नहीं हो रहा था। अपनी माँ को कसकर पकड़ते हुए अपना मुँह छिपाने लगी, कहा ''माँ, चलते हैं - मुझे नहीं देखना, दादी माँ के पास चलते हैं।''

अपनी दादी माँ के पास पहुँचते ही फूट-फूट कर रोने लगी। कहने लगी, ''मेरी भाई साहब की जान ली जा रही है ....।''

उसे विश्वास नहीं हो रहा था - मेरी ने उसकी बुआ फांदेङ को वश में करवाया, उसे विश्वास नहीं हो रहा था। कितनी बातें याद आई। उस छोटी-सी बच्ची का मन बेचैन होने लगा। आज भी वह समझ नहीं पायी कि एक दिन बुआ ने उसे क्यों पीटा था। फांदेङ ने कहा, ''सनातोम्बी, तुम नर्तकियों के यहाँ जा पाओगी?''

''क्यों नहीं। मैं तो अक्सर जाती हूँ, लूखोई नृत्य सीख रहा है वही देखने जाती हूँ।''

उस वक्त लूखोई भी छोटा था, वह बार-बार नर्तकियों के यहाँ जाता, सीखना तो शुरु नहीं हुआ था। यों ही अपने से हाथ-पैर मारता था।

फांदेङ ने कहा, ''चलो अच्छा है, पर तुम एक बार वहाँ हो आओ।''

''क्यों?''

फांदेङ ने कुछ देर सोचा फिर कहा, ''अरे वो तो लूखोई मेरी अंगूठी छीन कर चला गया। पहना है कि नहीं देख आओ। केवल देखकर आना, कुछ बोलना मत। उसकी माँ सुनेगी तो उन्हें बुरा लगेगा कि बेटे पर नजर रखती है। ..... और हाँ, देखना कि मेरी भाई साहब काम पर आए हैं कि नहीं। यदि आए हों तो कहना कि छोटी माँ थोकचाऊ ने कहा है कि क्या हुआ, बीमार तो नहीं पड़ गए। किसी को पता नहीं लगना चाहिए।''

सनातोम्बी नर्तकियों के यहाँ जाकर लौट आई, कहा ''लूखोई की बुआ जी .....''

''मैंने जो पूछने को कहा था वह तुमने पूछा?''

''पूछा था। मैं बोल रही हूँ झूठ बोल रहा था। बोला उसकी है।''

''वो नहीं, मैंने मेरी भाई साहब से पूछने को कहा था न?''

''वह तो नहीं कहा, वे गाना गा रहे थे। चाचा जी पाका वगैरह भी वहीं थे।''

''हप्प, ये भी न ..... जो कहो वो तो करती नहीं।''

कान पकड़कर खींचने लगी।

सनातोम्बी को बुरा लगा परन्तु फिर से पूछती, ''बुआ जी, फिर से जाऊँ क्या?''

''रहने दे बेवकूफ कहीं की, हरकते तो देखो इनकी।''

सनातोम्बी असमंजस की स्थिति में पड़ी रही लेकिन क्यों?

समय बीत गया। फांदेङसना का विवाह अङोम परिवार में तय हो गया। तैयारी होने लगी, भर-भर के दहेज की तैयारी - तओत-तमङ* भी सौ-सौ। एक दिन तो सनातोम्बी अपनी बुआ के कमरे में घुस गई।

रोने लगी - सनाफांदेङ रोने लगी।

उसे देखकर कहने लगी, ''मैं मर जाऊँगी। मैं बारात लौटते वक्त हाथी से कूदकर मर जाऊँगी .....।''

चिंता के मारे सनातोम्बी की हालत खराब हो गई। भागती हुई अपनी दादी को बताने लगी, ''दादी माँ, बुआ जी कह रही हैं कि वे बारात लौटते वक्त हाथी से कूदकर मर जाएँगी।''

''अरे बेटा सब बोलने भर की बात है।'' कह तो दिया पर माईसना भी सोचने लगी। फिर से अपने दादा, महाराज जी से भागकर पूछती,

''दादा जी, बुआ जी की विदाई किसमें होगी?''

---

* तओत तमङ : सूत कातने का यंत्र

''हाथी में - मोइराङ शा में।''

''उन्हें डोली में भेजा जाए।''

''क्यों? कल को आपकी शादी हुई तो डोली में भेज देंगे, हाथी से डर लगता है क्या?''

''बिल्कुल डर नहीं लगता, इतना तो हाथी पर सवार होती हूँ।''

''तो फिर क्यों?''

''यों ही कह रही थी।''

अपनी बुआ के शब्दों को सनातोम्बी भूल नहीं पाई। अपनी बुआ की विदाई में वह शामिल नहीं हुई - 'जाओ' कहने पर भी नहीं मानी। सनातोम्बी को तब तक चैन नहीं पड़ा जब तक उसने यह नहीं सुना कि उसकी बुआ हाथी से नहीं कूदी।

3

दशहरा आने में अभी चार-पाँच दिन ही रह गए थे। सनातोम्बी और लूखोईसना इधर-उधर दौड़ रहे हैं, खेल रहे हैं, युवराज तो घर में न के बराबर रहते। कपड़ों की रंगाई, अबाबील का घोंसला (घोसले का नमूना) बनाने की तैयारी, जिस मन्दिर में क्वाक* की तैयारी शुरु हो चुकी है वहाँ ये दोनों बच्चे इधर-उधर दौड़ लगा रहे हैं। दादी माँ के आँगन में कई लोग आ रखे थे। सिलाई, बुनाई, तुरपाई वगैरह बहुत बड़ी संख्या में हो रही थी। इनके दादा जी चन्द्रकीर्ति महाराज कल को दशहरे के दिन निकलते वक्त जो पोशाक धारण करेंगे उसकी तैयारी शुरु हो गई। ये सब कुछ इन बच्चों के लिए तो मेले के समान था। परसो दशहरा है। इस वर्ष का रंग गहरा गुलाबी होगा। इस वर्ष राजा से लेकर युवराज, सेनापति, सारे शूरवीर गहरे गुलाबी रंग के वस्त्र पहनेंगे।

ङाङ्बम परिवार की बेटी जो कि युवराज की पत्नी हैं उन्होंने सेवकों के साथ मिलकर युवराज सूरचन्द्र द्वारा दशहरे के दिन पहने जाने वाले खाङ्जेत नमखाङ† पर गुलाबी रंग चढ़ाना शुरु कर दिया।

पाँच-दस दिन पहले से ही बड़े-बड़े घड़े भर कर बड़ी नदी से पानी लाकर रखना शुरु हो चुका था। युवराज के परिवार के यहाँ पूरा मैदान सफेद कपड़ों से भरा है। पहले तो कपड़े को दो-तीन दिन तक खाने वाले सोडा में भिगोकर धोया जाता है तभी रंग चढ़ पाता है, अन्यथा रंग नहीं चढ़ पाता। ङाङ्बम चनू प्रेममयी बार-बार जाकर देखती कि रंग चढ़ रहा है या नहीं।

सबसे स्वस्थ हाथी जिस पर राजा सवार होंगे वह हाथियों के अड्डे से आ पहुँचा। बेटों के सवार होने के लिए भी हाथी आ पहुँचे। दो हाथियों को मिलाकर बनाए गए गाड़ी में राजा सवार होकर आएगा। सिरहाने के सामने रखा गया भाला, पैर की तरफ रखा गया भाला, लुवाङजै‡ को पकड़ने वाला सलाहकार राजा का नेतृत्व करेगा। अबाबील के घोंसले को फिर

---

* क्वाक : दशहरा

† खाङचेत नमखाङ : कमर कसने के लिए प्रयोग किए जाने वाला कपड़ा

‡ लुवाङजै : एक प्रकार की छड़ी जो कि अपनी सुरक्षा हेतु रखी जाती है।

से ठीक-ठाक किया जाने लगा। उसके ऊपर छत्र रूप में लगाया गया रेशम का कपड़ा जिस पर कढ़ाई-बुनाई की गई है उसके चारों ओर नए मोर पंख लगा दिए गए हैं। प्रत्येक पूजा घर की तैयारी जोरों पर है। सनातोम्बी और लूखोईसना अपनी-अपनी माँ का हाथ थामे राजबाड़ी के सामने बँधे हुए हाथियों को अपनी सूँड के सहारे कदली का चूरा उठाकर खाते देख आनंद ले रहे थे। हाथी सम्भालने वाले ने हाथी के बच्चे को बिठा कर उसके आगे वाले पैर उठवाए जिससे कि हाथी का बच्चा पिछवाड़ों के बल बैठा प्रतीत हो - ऐसा करतब दिखाने लगा। उसके सामने झट से अठन्नी का सिक्का गिराया। हाथी ने अपनी सूँड के सहारे अठन्नी को उठाया और फिर अपनी सूँड को ऊँचा उठाते हुए सलामी दी और 'मो-उ' की आवाज निकाली। दोनों बच्चे डर के मारे अपनी-अपनी माँ से जाकर लिपट गए। इस बार तो हाथी का छोटा सा बच्चा भी शामिल था। ये हथिनी और उसका बच्चा प्रतिभागी रूप में नहीं बल्कि राजा को यों ही दिखाने के लिए लाए गए थे। यह हाथियों के झुण्ड में से सर्वोत्तम हाथी का बच्चा था, उसे जितना देखो उतना कम। हाथी के बच्चे को झपकियाँ लेते, अपनी माँ के पास गोल-गोल चक्कर लगाते देख दोनों बच्चे खी-खी करके हँसने लगे।

लूखोई ने कहा, ''मैं तो कल हाथी पर सवार होऊँगा।''

सनातोम्बी ने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा, ''तुम किसलिए?''

''मैं तो कल दादा जी के साथ हाथी पर सवार होऊँगा।''

''तुम कल दशहरे पर जाओगे?''

''जाऊँगा। मैं तो दादा जी के साथ अबाबील के घोंसले पर बैठूँगा।''

''हेह ....., खाक बैठोगे।''

''बैठूँगा। दादा जी ने बैठने को कहा है। पिताश्री ने भी हाँ कर दी है। दादी माँ ने भी हाँ कर दी है। सबकी रजामंदी है।''

''हाँ ..... भेज देंगे। तुम क्या राजा हो?''

''फिर भी कोई फर्क नहीं पड़ता - तुम तो नहीं सवार हो सकती, लड़की हो न।''

सनातोम्बी भड़क गई और अपनी माँ ङाङ्बम चनू के पास जा पहुँची। उस वक्त ङाङ्बी थोड़ी व्यस्त थी। हल्के सूखे कपड़ों को समेटती हुई सेवकों से ठीक करवा रही थी। बाद में कोयले से स्त्री लगवाना चाहिए। आज तो बहुत कपड़े हो गए। छोटे भाई साहब कोईरेङ के वस्त्र भी शामिल थे। कोईरेङ भाई साहब की पत्नी भी दशहरे के कई दिन पहले से कपड़े धोना शुरु कर चुकी थी। दोनों बहनें आपस में मिल-बाँट कर कपड़े धोतीं। हाथों से तो नहीं धोतीं, कपड़े धोना तो एक बहाना था वास्तव में इस बहाने दोनों आपस में बतिया लेती। युवराज की पत्नी ङाङ्बी और कोईरेङ की पत्नी अङाङ्मचा सभी बहनें थी। इस नाते दोनों ही पास-पास रहती। दोनों ही बहुत चतुराई से काम करतीं। इनका अक्सर आना-जाना, चर्चा-निर्णय चलता रहता।

इस वर्ष तो दाएँ-बाएँ दोनों तरफ सेवा होगी - एक तरफ कोईरेङ दूसरी तरफ पाका। दोनों लगभग बराबर ही है। दोनों में महाराज जी के गुण शामिल हैं। एक तरफ कोईरेङ तो दूसरी तरफ पाका। इस बार तो नजारा देखने लायक होगा।

पाका और युवराज सूरचन्द्र एक ही माँ की औलाद होने के बावजूद चारों औरतों में से पाका की पत्नी युवराज के इस इलाके में बाकियों से थोड़ा अलग रहती, दूर-दूर रहती। इसके अलावा बाहरी दिखावा करने वाले राजा के समान गुण वाले राजपुत्रों की आपस में प्रतिस्पर्धा का सबको पता है। राजा के डर से ही ये बातें बाहर नहीं आती। दुनियादारी के मामलों में तेज युवराज की पत्नी ङाङ्बी ने पाकासना की पत्नी को खबर पहुँचाई कि घाट पर एक साथ कपड़े धोए जाएँ। कोईरेङ भाई साहब के कपड़ों पर भी रंग चढ़ाया जाएगा। दोनों को दाएँ-बाएँ चलना है, जिस वजह से कपड़ों का एक साथ एक ही रंग में रंगा जाना बेहतर होगा। कल को कपड़ों का रंग आपस में गहरा या फीका हो तो देखने में अच्छा नहीं लगेगा ..

हाथों-हाथ जवाब आया, ''दीदी बहुत अच्छा लगा जो आपने इस तरह पूछा। पता नहीं था इसलिए मैंने तो पहले ही कपड़ों में रंग चढ़ा लिया। दीदी आप जब कपड़ों को रंगने जाएँ तो एक बार आवाज लगा देना। एक समान न हुआ तो जरूरत पड़ने पर दोबारा रंग दूँगी।''

पहले से ही जानने वाली पाका की पत्नी के यहाँ से यह खबर आई।

यह बात तो ङाङ्बी को पसन्द नहीं थी। सारी बहुओं को अपने पक्ष में करना चाहती थी क्योंकि एक दिन उसका बेटा लूखोई महल के सिंहासन पर बैठेगा। जिन औरतों की किस्मत चमचमा रही हो उनकी सुन्दरता का निखरना जायज सी बात है। राजा के कपड़ों को रंग चढ़ाते वक्त भी दादी माँ अपनी पोती ङाङ्बी को बुलाकर निर्णय लेती, कहती ''लैहाऊ, तुम ही देखो राजा के वस्त्रों का यह रंग सही रहेगा।''

ङाङ्बी उम्र में छोटी होने के बावजूद रंगों के बारे में भली-भाँति जानती थी, माईसना को यह पता था और फिर उसे सिखाना भी जरूरी था, नहीं दिखाने से काम नहीं चलेगा - आखिर वह लूखोई की माँ है। पाका की पत्नी ने जिस प्रकार का उत्तर दिया उससे ङाङ्बी खुश नहीं थी। उसने ऐसा सोचा भी नहीं था।

सोचने लगी कि उसे पहले बुला लेती तो ठीक रहता। उसकी छोटी बहन अङाङ्मचा ने जरूर सुन लिया होगा कि बड़ी दीदी के यहाँ कपड़ों की रंगाई शुरु हो चुकी है। इस बात का अफसोस मना रही थी कि उसी दौरान सनातोम्बी ने पूछा, ''माँ जी वह बोल रहा है, लूखोई बोल रहा है कि वह तो दादा जी के साथ अबाबील के घोंसले पर सवार होगा।

सचमुच?''

''हाँ। सवार होगा ऐसा कह रहे हैं।''

''मैं भी सवार होऊँगी।''

ङाङ्बी को एकाएक गुस्सा आने लगा। एक तो पहले से ही थोड़ी उदास थी। लेकिन अपने चेहरे पर जाहिर नहीं होने दिया।

कहा, ''अपनी दादी माँ से पूछो।''

वह हाथों-हाथ अपनी दादी के पास भाग गई।

''दादी माँ, मैं भी दादाजी के साथ अबाबील के घोंसले पर बैठूँगी। लूखोई तो बैठ रहा है।''

दादी ने मुस्कराते हुए कहा, ''इसमें कौन-सी बड़ी बात है, बैठ जाना। कोई है?'' राजा से पूछ लिया। कहा बैठने दो।

लेकिन कौवों को तीर मारना तो लड़कियों का काम नहीं होता। सनातोम्बी लड़की है फिर भला कैसे - मंत्री गण इस बात के लिए रुकावट करने लगे।

दादी माँ ने कहा, ''मेरी पोती को भी लड़कों वाले वस्त्र पहनाए जाएँ।'' तुरंत ही पगड़ी, धोती, रेशम का लम्बा कुर्ता लाया गया। अनुचित कार्य है, परम्परा के विरुद्ध है - लोग इस प्रकार की बातें बनाने लगे। लेकिन दादी माँ की आज्ञा थी, राजा उसका पालन कर रहे थे। दशहरा मणिपुर का बहुत बड़ा पर्व माना जाता है जिसमें राजा भी शामिल होता है। गाँव-गाँव से लोग आते हैं, रात भर रुककर देखते हैं। सेनापति सवेरे ही इस शुभ कार्य हेतु बोलने निकल पड़ा। कल ही सेनापति के घर में महाभोज हो चुका था। डोली में आराम से सवार होते हुए चारों दल के नेतृत्व-कर्ता महल की ओर मुड़ने लगे, हाथ में हुक्का पकड़ रखा है। क्वाकलै* का गुच्छा लगाकर खामेन चत्प† पहने नेतृत्व-कर्ता, पदकों से बने बाजूबंद धारण किए, हाथों में कड़ा पहने पंक्ति से महल में आए।

ऑर्किड, ऑर्किड-ही-ऑर्किड! गुच्छे गुच्छे! पूरा महल ऑर्किड के रंग से भर गया।

इस वर्ष तो पोलो मैदान में दशहरे की पूजा हेतु प्रसाद चढ़ाया जाएगा। कौवे को तीर चलाने वाला सैनिक संदेश लेकर आएगा। कौवे का संदेश, इस वर्ष का संदेश।

पुजारी ने राजा के समक्ष संदेश प्रस्तुत किया-

''भाग्यशाली श्रीयुत (राजा) का सौभाग्यपूर्ण यह वर्ष
इस वर्ष का हितकर हर्ष, अश्रुहीन
शांतिमय, राज्य में चैन-सुकुन
राजा दीर्घायु को दशहरे का संदेश मिल गया।
मन में अच्छा सोचिए, संतुष्ट रहिएगा।''

---

* क्वाकलै : ऑर्किड

† खामेन चत्प : कपड़े पर की जाने वाली छपाई विशेष

संदेशवाहक को परीफी* ओढ़ाया जाएगा। यथोचित ईनाम दिया जाएगा। तलवार बाजी, यूबी लाक्पी† की प्रतियोगिता का आँखों देखा हाल प्रस्तुत किया जाएगा।

हाथी के ऊपर बनाए गए बैठने वाले आसन पर सवार होकर राजा पश्चिम द्वार पर पधार गए। दोनों ओर बराबरी पर चल रहे हाथी पर कोईरेङ और पाका दाएँ-बाएँ सवार हैं। राजा के सम्मुख अबाबील के घोंसले पर पगड़ी वगैरह लगाए सनातोम्बी और लूखोई बैठे हैं। दोनों बच्चे खुशी-खुशी बातें कर रहे हैं। सनातोम्बी की हँसी छूट रही है। हाथी के पीछे चलने वाला पेना‡ वादक का संगीत सुनकर उसे बहुत जोरों की हँसी आ रही है। पेना की आवाज सुनते ही उसे बड़ी हँसी आती है।

परन्तु यशुमती खुश नहीं है। उसकी बेटी ने आज अबाबील के घोंसले पर बैठकर जो देवी-देवताओं वाला कार्य किया उससे वह जरा भी खुश नहीं है। उसे पता है, इस बात का मुद्दा बनाकर लोग तरह-तरह की बातें करेंगे, इसका विरोध करने वाले कई लोग शामिल हैं। बेमतलब की बहसबाजी यशुमती को बिल्कुल भी पसन्द नहीं। महारानी साहिबा पर भी गुस्सा आने लगा। बच्चे की हर-एक बात मानकर गड़बड़ कर देती हैं। अब प्रत्यक्ष रूप से उन्हें बोल तो नहीं सकती।

रात्रि को पलंग पर साथ लेटते वक्त अपनी बेटी से कहा, ''सनातोम्बी मैं तुम्हारा क्या करूँ (कैसे सम्भालू)। कहाँ से जिद पकड़कर ले आई ..... शायद भूल गई हो कि तुम लड़की हो। लूखोई और तुम एक समान कैसे हो सकते हो? वह तो लड़का है, कल को राजा बनेगा।''

''वह लड़का है तभी तो मैं अक्सर उसे पीटती हूँ। जब वह सवार हो सकता है तो मैं क्यों नहीं।''

---

* परीफी : ओढ़नी विशेष

† यूबी लाक्पी : मणिपुर का स्थानीय खेल (नारियल छीनने का खेल)

‡ पेना : स्थानीय वाद्ययंत्र जिसके तार घोड़े की पूंछ से बनते हैं

"तुम्हारे कारण मुझे बहुत परेशानियाँ झेलनी पड़ेगी। लड़का-लड़की एक समान कैसे हो सकते हैं? श्मशान की प्रतीक्षा में बैठी बेटी वाली बात तो सब जानते ही हैं। विष्णु विष्णु यह मैं क्या बोल गई।" ईश्वर का नाम लेते हुए बच्चे के सर पर हाथ फेरने लगी। अलाएँ-बलाएँ दूर करने के लिए मच्छरदानी के चारों तरफ मन्त्र उच्चारण करने लगी। यशुमती चुपके से रोने लगी।

शरारती बेटी की माँ यशुमती चुप से रोने लगी और सनातोम्बी तो सवेरे सेक्माइ से आए कबीले के राजा की लम्बी दाढ़ी जो कि मधुमक्खी का मोम लगाकर बिल्कुल तीखी व सीधी कर रखी थी उसे याद करके हँस रही है। खी-खी कर हँस रही है।

यशुमती ने चुपचाप दुआ माँगी - "श्री श्री गोविन्द जी एक पुत्र दे दो, सोने का बाजूबंद चढ़ाऊँगी .....।"

परन्तु इस बार फिर से लड़की - खोमदोनसना।

4

सनातोम्बी ने करवट ली तो देखा कि वह किसके पलंग पर सो रही है। उसकी माँ यशुमती का पलंग नहीं है। बिल्कुल अभी की ही बात है अपनी दादी माँ के साथ सो रही थी पर अब दादी माँ नहीं है। महल का लड़कियों वाला कमरा नहीं है, हाप्ता के बंगले का बड़ा वाला कमरा भी नहीं। उसे समझ आ गया कि इस वक्त वह अपने सगोलबन्द वाले घर में है। उसके सामने कोई खड़ा था - लैरेन। लैरेन चपरासी। छोटे राजा ने अपनी दीदी की सेवा करने के लिए कुछ सेवक भेजे थे जिनमें से वह भी एक है। लैरेन पत्थर की मूरत की तरह चुपचाप खड़ा है, हाथ में चामोर* पकड़ रखा है। उसका हेंडल सोने का है। मच्छर तथा कीड़े-मकोड़े आसपास नहीं भटक रहे थे फिर भी शिष्टता के रूप में बीच-बीच में चामोर हिला रहा था। क्या कर सकते हैं? कुछ-न-कुछ तो पकड़ना जरूरी है, शिष्टता के नाम पर कुछ-न-कुछ तो करना जरूरी है। माईनू भोजन की तैयारी में कब से लग चुकी है।

सनातोम्बी ने लैरेन की तरफ ध्यानपूर्वक देखा और पूछा, ''तुम्हारा नाम क्या है?''

''हुजूर मेरा नाम लैरेन है'' लैरेनजाऊ ने उत्तर दिया।

''तुम मेरे यहाँ कब से हो?''

''हुजूर लगभग तीन महीने हो गए। रात्रि के वक्त महल में ठहरता हूँ।''

थोड़े देर बाद आँखे खुली तो फिर बुलाया, ''लैरेन।''

''हुजूर।''

''तुम्हारा घर कहाँ पर है?''

''मैज्राऊ में।''

''मैज्राऊ कहाँ है?''

''हुजूर हियाङ्थाङ के पास।''

''तुम्हारा कौन-कौन है?''

---

* चामोर : याक की पूंछ से बना पंखा

''मेरी पत्नी (Tribe) और तीन बच्चे।''

''सब बड़े हो गए क्या?''

''हुजूर छोटे ही हैं। बड़ी लड़की लगभग आठ साल की है।''

'हियाङ्थाङ पास है तब तो आज वह दुर्गा अष्टमी के लिए नहीं जाएगी क्या?''

''हुजूर जाएँगे, लेकिन पता नहीं पहनने लायक कपड़े होंगे भी? लगभग एक महीना हो गया घर गए।''

''तुम्हारे बूढ़े-बुजुर्ग?''

''मेरे जन्मदाता तो खोङ्जाम युद्ध में चल बसे। मेजर पाउना शिष्टता के रूप में। समय की ही बात है। उस वक्त मैं भी छोटा ही था। मेरी माँ भी नहीं रही, उनकी बरसी भी दो बार हो चुकी .....।''

लैरेन ने अपनी कथा सुनाई।

सनातोम्बी थोड़ी देर शांत रही, कहा ''माईनू को बुलाओ।''

माईनू वालहउशङ* से आई। सनातोम्बी ने माईनू से कहा, ''माईनू, लैरेन काफी समय से अपने घर नहीं गया। आज इसे घर जाने दो। बच्चों के कपड़े-लत्ते खरीदने के लिए कुछ पैसे दे दो। ..... लैरेन तुम चाहो तो एक-दो दिन अपने घर ही रुक जाना। ..... तो तुम्हारे पिता खेङ्जोम युद्ध में चल बसे।''

माईनू ने हाथ से इशारा करते हुए लैरेन को बुलाया। चुपके से कहा, ''थोड़ी देर बाद जब मतुम भाई साहब आ जाएँ तब चले जाना। इस वक्त इनकी सेवा करने वाला कोई नहीं है। यदि हुजूर ने दोबारा पूछा तो कहना कि मतुम भाई साहब आने के बाद ही जाऊँगा। जाते वक्त मुझसे पैसे ले लेना।''

सनातोम्बी की आँख लग गई। वह बड़ी नदी के किनारे युद्ध के लिए जा रही थी। उसके आगे उसका चाचा, युवराज कोईरेङ।

---

* वालहउशङ : रसोई घर

उस वक्त वह नोङमाइथेम के यहाँ रहती। उसके पति मणिकचान के घर पर, वाङ्खै लैकाई में। पिता युवराज के राजा बने जाने के बाद, जब दादी माँ माईसना जीवित थी उसी दौरान कच्ची उम्र में उसका विवाह कर दिया गया। माँ यशुमति को चिन्ता लगी रहती कि सनातोम्बी के बड़े होने तक उसे कैसे रखा जाए। उसकी बेटी के पैर जरा भी नहीं टिकते। इस वजह से उसने बड़ी बहू ङाङ्बी से विचार-विमर्श किया।

कहा, ''दीदी, नोङ्माईथेम का एक अच्छा लड़का है। कहते हैं बहुत ही अच्छा है। शायद सनातोम्बी का हाथ माँगना चाहते हैं, दादी माँ से पूछे क्या?'' दोनों बहूएँ आपस में राय लेने लगीं। लड़के के बारे में जानकारी, अता-पता खोजने में लग गई, बाप के घर तथा माँ के माय के में कोई तलाकशुदा या विधवा वगैरह तो नहीं रहती। लड़के के पिता चल बसे-विधवा माँ का बेटा है। यह सारी बात पता लगने से पहले ही महारानी साहिबा को रिश्ते की बात बोल दी - उन्होंने पलट कर झाड़ लगा दी तो हमारी खैर नहीं। लड़के का खानदान तो नोङ्माईथेम है इसमें कोई शक नहीं। शक्ल सूरत भी लड़का होने के नाते ठीक-ठाक ही है। ङाङ्बी को थोड़ी शंका है, वह इस रिश्ते के लिए पूरी तरह राजी नहीं है, सटीक रूप से पूछे भी तो किससे।

दोनों बहुओं ने जाकर दादी माँ से पूछा।

''अच्छा, तो किस तरह का व्यक्ति है?''

ङाङ्बी ने उत्तर दिया, ''जी सब तो यही कहते हैं कि अच्छा है।''

''सब अच्छे ही होते हैं। लड़के वाले जब रिश्ता लेकर आते हैं तो अपने लड़के की बुराई कहाँ बताते हैं। चलो अच्छा है, मैं भी चाहती हूँ कि मेरे जीते जी मेरी पोती का घर बस जाए।''

उस दिन से लेकर सनातोम्बी अपनी दादी के यहाँ ही रहती। दादी को अपनी पोती पर बार-बार यह सोचकर प्यार आता कि अब तो यह बड़ी हो गई, दूसरे के घर चली जाएगी। अपनी पोती को बार-बार ध्यान से देखती। शक्ल-सूरत भी उसकी दिवंगत पुत्री तम्फासना से मिलती-जुलती। दुर्गा अष्टमी की पूजा में जाते वक्त, अन्य त्यौहार-पर्व में जाते वक्त अपने

हाथों से पोती को तैयार करती। साँवला रंग होने के कारण रेशम से मिलते-जुलते वस्त्रों से तैयार करती जिस पर गहरे-नीले रंग होते। उस वक्त शायद सनातोम्बी के बाल दो-तीन बार काटे जा चुके थे। लड़कियों के बाल काटने में मशहूर ङाङ्बी के अलावा किसी और से बाल नहीं कटवाए। चेहरे की बनावट के अनुसार छोटे-बड़े फुंदने रखवाए गए। चेहरा देखने में छोटा प्रतीत हो रहा था, फुंदना थोड़े लम्बे थे, आगे की तरफ थोड़े ज्यादा लम्बे करवाए गए। बाल काटने के दौरान दादी माँ उस पर नजर गाड़े बैठी रही। माईसना चाहती थी कि सनातोम्बी, उनकी अनमोल पोती सबसे सुंदर दिखे। सोने की माला, कंगन, झुमके वगैरह की तैयारी शुरु हो गई-सनाबुङाङोई, पुन्दुम परेङ*, बोकुल परेङ†, कियाङलिक्फाङ‡, मरई§।

तरह-तरह की अंगूठियाँ - खोई महुम**, लाइरेन मखोई††, चरोत खुदोप‡‡। सोने की कटोरी भर कर सोना, चाँदी की कटोरी भर कर चाँदी, सुपारी रखने वाला बर्तन-सब तैयारी हो गयी।

सनातोम्बी ने कहा, ''दादी माँ, मेरे लिए तो हलके-फुल्के जेवर तैयार करवाना - भारी वजनदार जेवर पसंद नहीं, हल्के-फुल्के, पहनने में भी आसानी होती है।

''बेवकूफ कहीं की, लोग तो भर-भर कर सोना माँगते हैं।''

''न भाई! मुझे तो नहीं पसन्द गले में भर-भर कर इतना सोना लादना कि गरदन टेढ़ी हो जाए।''

इस वजह से काफी सावधानी के साथ बारीक तथा हल्के-फुल्के बनवाए गए। सनातोम्बी के लिए सामान लेना भी बड़ी आफत का काम है, हर बार दिक्कत होती है, यह पसन्द नहीं-वह पसन्द है वगैरह वगैरह। माला बनाने से पहले उसे एक-एक दाना दिखाया

---

* पुन्दुम परेङ : माला की डिजाइन

† बोकुल परेङ : माला की डिजाइन

‡ कियाङलिक्फाङ : माला की डिजाइन

§ मरई : लड़ी

** खोई महुम : मधुमक्खी के छत्ते वाला डिजाइन

†† लाइरेन मखोई : मगरमच्छ की नाभि वाला डिजाइन

‡‡ चरोत खुदोप : बेंत की डिजाइन वाली अंगूठी

जाता, पसन्द-नापसन्द पूछी जाती। बनावट तक अपने इच्छानुसार बदली करवाती। अपनी पसंद का डिजाइन बनवाती और सुनार को बताती कि ऐसे करो-वैसे मत करो इत्यादि।

आज तो माईसना महारानी का आंगन, शयन कक्ष सब कपड़ों-जेवरों से भरा पड़ा है। कल दुर्गा अष्टमी के दिन जवान हो चुकी सनातोम्बी पहली बार हाथी पर सवार होकर पूजा करने जाएगी। दादी-पोती ने उधम मचा रखी है। आपस में निर्णय ले रही हैं कि कल क्या पहना-ओढ़ा जाए। कुमुदिनी के रंग वाला मितै कुम फनेक*, प्याजी रंग वाले मलमल की कुर्ती पर सोने का डिजाइन, ओढ़नी, लम्थाङ खुतहत†। दादी माँ को तसल्ली नहीं हुई। कपड़े रखने वाला संदूक एक-एक करके खोलने लगी। ढूँढ-ढाँढ कर कनियार के रंग वाला क्रेप का थान खींच कर निकाला। उस कपड़े पर हर तरफ सुनहरे रंग की बारीक-बारीक बेल की कढ़ाई की हुई है। परदेस का कपड़ा है। चन्द्रकीर्ति महाराज जब दूसरे देश में बैठक के लिए गए तब बरलार्ड साहब ने उसे तोहफे के रूप में दिया। आज तक थान को छुआ भी नहीं। महाराज जी को दूसरे देश से मिलने वाले तोहफे दादी माँ अलग से सम्भाल कर रखती, बहु-बेटियों के भरोसे नहीं छोड़ती। अलग से ताला मारकर एक कमरे में रख देती। माईसना मानती हैं कि इस तरह के सामान तो लड़कियों के इस्तेमाल करने की वस्तु नहीं होती, देशवासियों का है। इस देश की सम्पत्ति है, देखने तथा दिखाने की वस्तु है। परन्तु सनातोम्बी के लिए दादी माँ ने कई बार नियम तोड़े। बंद कमरा भी आज फिर सनातोम्बी के लिए खोल दिया। अपने ही हाथों से कैंची पकड़ कर थान में से सुनहरी कढ़ाई वाला क्रेप काट डाला। मोतियों की माला उठाकर हँसते हुए बोली, ''बेटा तुम यह लगाओगी तो सुन्दर दिखोगी।''

''लगा लेती हूँ दादी माँ।''

''यह तो अनुचित है। स्वयं लार्ड साहब ने अपने हाथों से तुम्हारे दादा जी के गले में पहनाया था। राजा का सामान छेड़ना नहीं चाहिए। तुम जैसे नई जिंदगी की शुरुआत करने वालों को तो जब तक योग्य न हो जाओ राजा की वस्तुओं को इस्तेमाल नहीं कर सकते, लोग बाते बनाएँगे।

---

* मितै कुम फनेक : एक प्रकार का फनेक विशेष

† लम्थाङ खुतहत : एक प्रकार की ओढ़नी विशेष

और फिर हँसते हुए पोती को पुचकारते हुए बोली, ''तुमने लड़के के रूप में जन्म लिया होता तो राजा बनती।''

सनातोम्बी की शादी हुई तो माईसना को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा, समझ नहीं आ रहा था कहाँ जाए। लेकिन अपने आँसू पोती को जाहिर नहीं होने दिए। किसी को व्यक्त नहीं किए।

आज उसकी दादी माँ नहीं रही, दादा जी चल बसे। पिता सूरचन्द्र जो कि राजा थे-भाइयों ने उन्हें बाहर कर दिया। आज वह विदेशी फिरंगी के यहाँ सर छिपाने की जगह ढूँढता हुआ ऊपर वाले के फैसले के इंतजार में कलकत्ता में है। छोटा भाई कुलचन्द्र क्या कदम उठाएगा, जनता क्या कहेगी और क्या निर्णय होगा - इस वक्त सभी यह जानने की प्रतीक्षा में है।

सनातोम्बी नींद में सपना देख रही है। सपना भी नहीं है। धुआँ, तोप, तलवार, घोड़े पर सवार सैनिक, फिरंगी .....

सनातोम्बी के चाचा लोगों ने जिस दिन उसके पिता शूरवीर सूरचन्द्र चिङलेन का हाथ खींचकर महल की राजगद्दी से उतारा उस दिन उसे अहसास हुआ - तकलीफ क्या होती है, दु:ख क्या होता है। अंदर से बहुत ही मजबूत होने के कारण उसकी आँखों में आँसू नहीं आए, दाँतों को आपस में किटकिटाते हुए खुद पर नियंत्रण रखा।

एक दिन तो सनातोम्बी बहुत दु:ख के साथ रोयी जब उसकी दादी माँ को ताबूत में कफन चढ़ाकर श्मशान घाट तक ले गए।

सूरचन्द्र के कलकत्ता जाने से पहले की बात है। वह भारत सरकार के एजेन्ट ग्रिमऊद साहब के पास जाकर रह रहे थे। एक दिन तो सूरचन्द्र की पत्नी और बच्चे सब-के-सब अनुमति मिलने के कारण हाप्ता वाले बंगले में उनसे मिलने आए। सभी रानियाँ एक-एक करके मिलने गई, महारानी प्रेममयी, बाकी पत्नियाँ, लूखोई आदि। अपने बड़े भाई के पास जाकर रहने वाले चाचा पाकासना से मिलते वक्त सनातोम्बी ने पूछा, ''पिता श्री कैसे

हैं?'' ''मिलने पर पता चलेगा।'' पाका ने संक्षेप में उत्तर दिया। सनातोम्बी ने कहा, ''चाचा जी, मैं तो पिता श्री से बाद में मिलने जाऊँगी।''

जब सारे मिलने के लिए अन्दर गए थे तब सनातोम्बी एक कमरे में बैठे कमरे में इंतजार कर रही थी। वह सोचने लगी। सूरचन्द्र से मिलने गए उसके परिवार के सदस्य एक-एक करके बाहर आने लगे। उसकी छोटी बहनें-ओम्बीसना, खोम्दोनसना रोते-रोते बाहर आई। उस वक्त वे छोटी थीं।

सनातोम्बी पिता श्री के पास गई। इन कुछ ही दिनों में महाराज का स्वास्थ्य बहुत ही गिर चुका था। सनातोम्बी ने उनके चरण स्पर्श करते हुए प्रणाम किया। पिता-पुत्री आपस में चुपचाप बैठे रहे-कितनी बातें मन-ही-मन बतिया रहे हैं।

सनातोम्बी ने कहा, ''पिता श्री क्या यह सच है कि आप मणिपुर के बाहर जाओगे?''

''हाँ, जाना तो पड़ेगा। कलकत्ता जाकर बरलार्ड के साथ कुछ बात किए बगैर यहाँ इस तरह बैठे रहने से कुछ फायदा नहीं। श्री गोविन्द जी के आशीर्वाद से सेवा करने का मौका नहीं पाया तो पिता श्री तीर्थ-यात्रा के लिए रवाना हो जाएँगे, दोबारा वापस नहीं आएँगे।''

''आप ऐसा नहीं कर सकते। पिता श्री, मणिपुर आपका है - यह बात वे क्यों नहीं समझते?''

''राजगद्दी की छीना-झपटी में कौन सही-गलत ढूँढता है ..... सनातोम्बी मैं एक बात बताता हूँ। मेरे बच्चों में से तुम सबसे बड़ी हो, मेरा तो कोई भरोसा नहीं अब तुम ही अपनी दोनों बहनों को सम्भालना, अपनी माँ का हाथ बँटाना। मेरा लूखोई तो नासमझ है।''

''पिता श्री आप मणिपुर क्यों छोड़ोगे। महल दूसरों के हवाले करोगे? आपका हक नहीं बनता? ..... मुझे उन लोगों पर भरोसा नहीं। वो क्या कर लेंगे? मैं बात करती हूँ,

कोईरेङ चाचा से बात करती हूँ, बालती हूँ - दादा जी जो बताकर गए उसे वे क्यों भूल गए . .....?''

''सनातोम्बी चुप करो-यहाँ पर उस तरह की बात मत करो।''

''एजेन्ट साहब को बुलाइए, मैं बात करती हूँ ..... सम्भव है .....'' सनातोम्बी रोने जैसी हो गई।

''सनातोम्बी, मेरी बेटी .....'' राजा की आवाज लड़खड़ाने लगी।

''पिता श्री मुझे पता है, मैं लूखोई नहीं हूँ। फिर भी आपने मुझे यह सब पहले क्यों नहीं बताया?'' अफसोस व्यक्त करते हुए बोली।

परन्तु वह जानती है कि उसके शील तथा शालीन किस्म के पिता को किसी पर शंका नहीं। सभी भाइयों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करते। उस पर राजपाट सम्भालने चार ही वर्षों में पिता चन्द्रकीर्ति महाराज के समय से चली आ रही राजपुत्रों में सिंहासन को लेकर चल रहे दंगों को शांत करने के चक्कर में उसे इस बात का पता ही नहीं चला कि घर में दावाग्नि लग चुकी है। सोचने का मौका ही नहीं मिला ..... और फिर सूरचन्द्र को विश्वास था कि चर्टग्राम के समझौता पत्र के अनुसार ब्रिटिश सरकार मणिपुर के सिंहासन के दोस्त की तरह रहेंगे, पक्ष में रहेंगे। उसे घर का भेदी लंका ढाए वाली बात का जरा भी अहसास नहीं था। तत्कालीन एजेंट साहब उनके मित्र नहीं थे, दुश्मनी भी नहीं थी। वह फिरंगियों के साथ ज्यादा मिलजुल कर भी नहीं रहता। उनसे थोड़ा दूर ही रहता था। उसे इस बात का भी पता नहीं था कि ग्रिमऊड उन्हें दोस्त नहीं मानता क्योंकि ग्रिमऊड के साथ उनका कोई बैर तो नहीं था परन्तु एक बार उन्होंने एक-दो सख्त हिदायत दी थी-कहना जरूरी भी था। अविवाहित ग्रिमऊड ने मितै (मणिपुरी) लड़कियों की बहुत सारी तस्वीरें खींचकर बाहर भेजी इस प्रकार की खबर आने पर, ऐसा मत करो, यह नहीं कर सकते वगैरह हिदायत दी थी। कोईरेङ को बुलाकर भी कहा - 'इस तरह का काम मत करने दो' क्योंकि सूरचन्द्र को पता था कि कोईरेङ और ग्रिमऊड की आपस में बहुत बनती है। इसके बाद तो शिलोङ से साहब की मेम भी आई।

इस बात पर साहब को राजा से थोड़ी नाराजगी थी यह तो सचमुच पता था। सनातोम्बी के शब्द 'मुझे उन लोगों पर भरोसा नहीं' से सूरचन्द्र को खयाल आया, मन में शंका सी होने लगी क्योंकि यदि वो उनके पक्ष में आ जाए तो मणिपुर के सिंहासन के मुद्दे आसानी से सुलझाए जा सकते थे। कोईरेङ का दोस्त होने से भी मणिपुर के सिंहासन के साथ जो दोस्ती का रिश्ता है उन्हें नहीं भूलना चाहिए था। परन्तु उसने अपनी बेटी से सब कुछ नहीं कहा - सब कुछ कह देना उचित नहीं - यह ब्रिटिश एजेंसी का कमरा है और फिर सनातोम्बी अभी छोटी है। बता कर क्या करूँ? बेकार में बच्चे को बेचैनी हो जाएगी। परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं था, भूल गए कि सनातोम्बी छोटी है तो क्या हुआ ..... माईसना ने उसे पाल-पोस कर बड़ा किया है। वह अपनी उम्र से अधिक समझदार है।

पिता को खामोश देख सनातोम्बी ने फिर से कहा ''पिता श्री, यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं भी आपके साथ जाऊँगी, मैं लार्ड साहब के साथ बात करने जाऊँगी-आप अकेले कैसे जा सकते हो? हुह उन्हें इससे क्या मतलब। वे क्यों इधर की उधर करते फिरते हैं .....''

''चुप रहो तुम्हें क्या हुआ ..... मेरी छुटकी, तुमने लड़के के रूप में जन्म लिया होता तो मैं सौभाग्यशाली होता।''

''पिता श्री मैं कर सकती हूँ - मैं बात कर लूँगी, जाऊँगी, मैं आपकी सेवा करूँगी .....''

दादी माँ को याद करती। सनातोम्बी को उसकी दादी माँ की याद आ गई। आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से दृश्य नजर आया - पुरुष की वेशभूषा में खदाङचेत* लगाकर शिशु चन्द्रकीर्ति को लेकर तोङ्जैमरील की सड़क पर दादी माँ घोड़े पर सवार होकर जा रही है। उनके पीछे नरसिंह के सैनिक। परन्तु मन-ही-मन अफसोस मनाती कि कोईरेङ चाचा जिन्हें वह इतना मानती है उन्होंने किस वजह से ..... चाचा जी ने मुझसे बात क्यों छिपाई?

पिता श्री से मिलकर सनातोम्बी का मन भर आया।

---

* खदाङचेत : ठुड्डी को ढकने के लिए प्रयोग किया जाने वाला कपड़ा

पूरी रात नहीं सो पाई, सोचती रही। उसे इस बात का सबसे ज्यादा दु:ख है कि पिता श्री का साथ देने वाला कोई भी नहीं-उनकी पक्ष में खड़ा होने वाला कोई भी नहीं। कहाँ जाकर विचार-विमर्श करे, किससे कहे केवल माँ समान ङाङ्बी से ही कह सकती है परन्तु विरोधियों की उन पर कड़ी नजर है - विरोधियों से तात्पर्य है पति के भाई लोग। इसलिए वे आपस में मिल नहीं पाते। समझदार ङाङ्बी को बंदीग्रह में नहीं रखा गया है परन्तु जिस तरह से उन पर नजर रखी जा रही है वह किसी बंदीग्रह से कम नहीं। असहाय, निरुपाय होने के कारण इस आग को अकेले ही झेल रही है। नोङ्माईथेम के घर वालों को तो इन बातों से कोई मतलब नहीं। थउरानी चाऊबी दादा जी के समय से महल में है। वह अब भी सनातोम्बी के लिए भोजन बनाती है। केवल उसी से बात कर सकती है।

सनातोम्बी ने कहा, ''माँ जी लाईखुराशाजऊ पण्डित से एक बार मिलना चाहती हूँ। वे कहाँ होंगे? बिना किसी को बताए मेरी उनसे भेंट करा दो।''

एक दिन सनातोम्बी चुपके से लाईखुरा पण्डित अचऊब से मिली। पिता श्री सूरचन्द्र के समय से लाईखुरा पण्डित बहुत महान् पण्डित माने जाते हैं। सनातोम्बी ने पूछा, ''दादा जी, पूरे मणिपुर में पिताश्री को चाहने वाला कोई नहीं क्या?''

''क्यों नहीं राजकुमारी! शूरवीर राजा चिङ्लेन को तो लोग बहुत प्रेम करते हैं परन्तु दूसरों ने पहले हाथ मार लिया। इस वक्त तुम्हारे पिता श्री के लिए प्रत्यक्ष रूप से खुलेआम खड़ा होने वाला कोई नहीं।''

''दादाजी मुझे बहुत दु:ख होता है। इस बार जो हुआ उसमें मैं बहुत ही आहत हुई हूँ - पिताश्री को प्रजा सचमुच पसन्द नहीं करेगी यह मुझे विश्वास नहीं हो रहा है ..... और थाङ्गाल दादा के क्या खबर हैं?''

''राजकुमारी जी, आपके दादाजी थाङ्गाल को अत्यंत दु:ख पहुँचा है। उनके भाई साहब के बेटों ने इस बार जो किया उस पर वे रो पड़े लेकिन आपके दादा मेजर थाङ्गाल तो साफ दिल वाले व्यक्ति हैं, मुसीबत के वक्त वे पहले मणिपुर के बारे में सोचेंगे, समर्थन की बात से उन्हें मतलब नहीं - हमें भी बहुत दु:ख होता है राजकुमारी जी।''

''दादा जी के यहाँ सब ठीक तो है? पिताश्री के फिर से राजपाट सम्भालने के आसार हैं क्या?''

''राजाकुमारी जी, मैं तो यही कहूँगा कि इस वक्त जो सिंहासन पर सवार है उसका समय भी ज्यादा नहीं। मणिपुर में राजा का शासन लगभग अंत की कगार पर है। आपके दादाजी चन्द्रकीर्ति महाराज के चालीस वर्ष तक सत्ता सम्भालने की जो बात थी वह शायद उनके छत्तीस वर्ष के शासन और आपके पिताश्री के चार वर्ष का शासन मिलाकर ही कहा गया था। दादा ताउरिया का तो यही मानना है।''

पण्डित की बातें सुनकर सनातोम्बी के सपनों पर पानी फिर गया, परन्तु अब भी उम्मीद है - उसके पिता श्री लौट कर आएँगे, फिर से राजपाट सम्भालेंगे। मोईराङ तोङ्जाओ से दोबारा चुपके से मिलने गई। उसे मालूम है कि लोगों को पता नहीं है मगर मोईराङ तोङ्जाओ उसके पिता श्री को बहुत प्रेम करते हैं।

कहा, ''तोङ्जाओ भाई साहब, क्या आप भी पिता श्री को बिल्कुल प्रेम नहीं करते?''

''राजकुमारी जी आप कैसी बात कर रही हैं। अभी हालात सही नहीं हैं।''

''थाङ्गाल दादा क्या कहते हैं।''

अध्याय-तृतीय

अनुवाद की समस्याएँ

अध्याय-तृतीय

अनुवाद की समस्याएँ

अनुवाद कार्य में स्रोत भाषा के पाठ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। ऐसा करने के लिए सर्वप्रथम अनुवादक को दोनों भाषाओं यथा-स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा का ज्ञाता होने के साथ दोनों भाषाओं की प्रकृति को समझना भी अत्यंत आवश्यक है। यदि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा एक ही भाषा परिवार की हो, तो उनमें समानता पाई जाती है जिस वजह से अनुवाद करने में आसानी होती है। परन्तु यदि दोनों भाषाएँ भिन्न-भिन्न भाषा परिवार की हो तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में भिन्नता हो तो अनुवाद के दौरान काफी समस्याएँ सामने आती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास मणिपुरी भाषा की रचना है जो कि तिब्बती-बर्मन भाषा परिवार की भाषा है तथा इसका हिन्दी भाषा में अनुवाद किया गया है जो कि भारतीय आर्य भाषा परिवार की भाषा है। चूंकि दोनों अलग-अलग भाषा परिवार तथा समाज से संबद्ध है अत: दोनों में काफी असमानताएँ पाई गई हैं। परन्तु मणिपुरी और हिन्दी दोनों ही भारोपीय भाषा परिवार की भाषा है अत: दोनों में समानताएँ भी हैं। नीचे मणिपुरी और हिन्दी भाषा की समानता तथा असमानताओं की चर्चा की गई है-

1. मणिपुरी और हिन्दी भाषा में समानता

i) मणिपुरी और हिन्दी दोनों ही भारोपीय भाषा परिवार की भाषा है।

ii) दोनों भाषाओं में संस्कृत की शब्दावली पायी जाती है।

iii) दोनों भाषाओं की लिपि ध्वन्यात्मक है।

iv) दोनों भाषाओं के अन्तर्गत एक से अधिक बोलियाँ आती हैं।

2. मणिपुरी और हिन्दी भाषा में असमानता

i) मणिपुरी भाषा तिब्बती-बर्मन भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है जबकि हिन्दी आर्य भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है।

ii) मणिपुरी भाषा मितैलोन में लिखी जाती है जबकि हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

3. वाक्य रचना में समानता

i) दोनों भाषा की वाक्य संरचना में कर्ता, कर्म और क्रिया का नियम लागू होता है।

(क) मेरा नाम मोहन है। (हिन्दी)

ऐंगी मिङ मोहन कौवी। (मणिपुरी)

(ख) मैं बहुत खूश हूँ। (हिन्दी)

ऐ याम्न हराउवी। (मणिपुरी)

ii) दोनों भाषाओं में वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्य काल के वाक्यों की पहचान कराने वाले सहायक क्रियाओं का नियम है।

उदाहरण -

(क) वर्तमानकाल

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ (हिन्दी)

ऐ लाइरिक पाये (मणिपुरी)

(ख) भूतकाल

मैं कल गया था (हिन्दी)

ऐ ङराङ चत्ली (मणिपुरी)

(ग) भविष्यकाल

मैं कल जाऊँगा (हिन्दी)

ऐ हयेङ चत्कनी (मणिपुरी)

4. वाक्य रचना में असमानता

हिन्दी भाषा के वाक्य की अपेक्षा मणिपुरी भाषा के वाक्य छोटे तथा सरल होते हैं।

उदाहरण -

	(हिन्दी)	(मणिपुरी)
i)	मैं जा रहा हूँ।	ऐ चत्ले।
ii)	मैं नहीं जाऊँगा।	ऐ चल्लोय।
iii)	मुझे नहीं खाना।	ऐ चारोय।

5. व्याकरण की दृष्टि से भिन्नता

i) मणिपुरी भाषा में 10 स्वर होते हैं (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ) जबकि हिन्दी भाषा में 11 स्वर हैं (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ)।

ii) परसर्ग के सन्दर्भ में

(हिन्दी)	(मणिपुरी)
दिल्ली में	दिल्ली द
आगरा से	आगरा दगी
हाथ से	खुत् तगी
लंदन तक	लंदन फाउब
राम को	राम द
मेज पर	टेबल द
बस से	बस तगी
आज तक	ङसी फाउब
सुबह को	अयुक त
शाम को	नुङथिल द

iii) मणिपुरी भाषा के वाक्य में स्त्रीलिंग-पुल्लिंग का अन्तर पता नहीं चलता।

उदाहरण-

(हिन्दी)	(मणिपुरी)
मैं जाता हूँ। (पु.)	ऐ चत्ली।
मैं जाती हूँ। (स्त्री.)	ऐ चत्ली।

iv) जहाँ हिन्दी भाषा के वाक्य में मेरा, मेरे, मेरी का प्रयोग किया जाता है, वहीं मणिपुरी भाषा के वाक्य में इन सबके स्थान पर केवल 'ऐगी' का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण -

(हिन्दी)	(मणिपुरी)
क) मेरा नाम कमल है।	ऐगी मिङ कमल कौवी।
ख) मेरे घर में एक कुत्ता है।	ऐगी युम द हुइ अम लइ।
ग) यह मेरी पुस्तक है।	सी ऐगी लाइरिक नी।

संस्कृतियों को बेहतर ढंग से समझने के लिए आज अनुवाद एक महत्त्वपूर्ण उपकरणों में से एक बन चुका है और पिछले कुछ वर्षों में इसने दुनिया भर में मान्यता प्राप्त की है। अनुवाद को ऐसे कार्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके अन्तर्गत किसी सामग्री (पाठ) को दूसरी भाषा में उसके समतुल्य अर्थ में प्रस्तुत किया जाता है। जिस सामग्री अथवा पाठ का अनुवाद किया जाना होता है वह 'स्रोत पाठ' कहलाता है तथा जिस भाषा में स्रोत पाठ का अनुवाद किया जाता है वह 'लक्ष्य पाठ' कहलाता है। सरल भाषा में कहा जाए तो अमुक भाषा की सामग्री को किसी दूसरी भाषा में उसी अर्थ में प्रस्तुत करना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद एक प्रकार की गतिविधि है जिसके अन्तर्गत अनिवार्य रूप से कम-से-कम दो भाषा और सांस्कृतिक परम्परा शामिल होती है। स्थायी रूप से अनुवादक के सामने यह समस्या आती है कि वह 'स्रोत पाठ' में निहित सांस्कृतिक पहलुओं का उपचार किस प्रकार करे तथा इन पहलुओं को 'लक्ष्य भाषा' में सफलतापूर्वक व्यक्त करने हेतु किस तकनीक का चयन करे। ये समस्याएँ अलग-अलग प्रकार की हो सकती हैं जो कि संबद्ध भाषाओं की सांस्कृतिक तथा भाषाई स्वभाव पर निर्भर करती है।

किसी पाठ का सटीक अनुवाद प्रस्तुत करना आसान काम नहीं है। मूल पाठ का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते वक्त उसमें शामिल समानार्थी और विलोम शब्द, मुहावरे तथा शब्दखण्डों का ध्यान रखना पड़ता है। हालांकि मशीनी अनुवाद सामग्री में शामिल प्रत्येक शब्द का सटीक अनुवाद कर सकता है परन्तु यह पाठक पर निर्भर करता है कि वह अनूदित सामग्री को सार्थक रूप में समझ सके। अत: कार्य भार को कम करने के लिए अनुवादक द्वारा मशीनी अनुवाद का इस्तेमाल किया जा सकता है परन्तु अनुवादक को पाठ का उपयुक्त अर्थ प्रस्तुत करने के लिए मशीन द्वारा अनूदित पाठ को ध्यानपूर्वक समझते हुए उसका पुनर्गठन करने की आवश्यकता पड़ती है। किसी भी पाठ का प्रथम अनूदित नमूना जानने के लिए मशीनी अनुवाद का प्रयोग एक ओर तो अनुवादक के खर्च को कम करता है तथा दूसरी ओर उसकी दक्षता में वृद्धि करके फायदा कर सकता है। मशीनी अनुवाद का इस्तेमाल केवल सीमित उद्देश्य के लिए ही किया जाना चाहिए। मशीन पूर्ण रूप से किसी भी पाठ का मतलब

नहीं समझ सकता। हालांकि मशीन द्वारा प्रयुक्त अधिकांश तकनीकी शब्द सही होंगे परन्तु यह तो पाठक पर निर्भर करता है कि वह किसी बुद्धिहीन मशीन द्वारा प्रयुक्त अव्यवस्थित शब्दों को किस प्रकार समझता है।

दरअसल मशीनी अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसमें मानव अनुवादकों के हस्तक्षेप के बिना ही समकालीन तकनीक के द्वारा अनुवाद किए जाते हैं। दूसरी ओर मैनुअल अनुवाद में स्रोत पाठ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने में समर्थ और अनुवाद कार्य करने में अनुभवी अनुवादक तथा संपादकों द्वारा अनुवाद कार्य किया जाता है। मानव भाषा की जटिल बारीकियों को समझना मशीन के बस की बात नहीं। विशेष रूप से पेशेवर प्रमाणित मानव अनुवादकों द्वारा ही व्यावसायिक अनुवाद किए जाते हैं। वे स्रोत तथा लक्ष्य भाषा के व्यापक ज्ञान समेत मानव भाषा की बारीकियों को समझने तथा सम्मिलित करने की क्षमता पर भरोसा करते हैं।

सर्वप्रथम अनुवादक का सुयोग्य होना अति आवश्यक है। इसके पश्चात् नई प्रौद्योगिकी तथा प्रणालियों के माध्यम से उसके कौशल में सुधार किया जा सकता है। शब्दों का अनुवाद आसानी से किया जा सकता है जबकि संस्कृतियों का अनुवाद नहीं किया जा सकता क्योंकि भले ही छोटी सी गलती क्यों न हो परन्तु उसके कारण हमेशा अर्थ निरूपण में गड़बड़ हो जाती है। किसी भी पाठ के अनुवाद को आदर्श अनुवाद नहीं कहा जा सकता क्योंकि विभिन्न परिस्थितियों तथा जरूरतों के अनुसार एक ही पाठ के एक से अधिक संभावित अनुवाद हो सकते हैं।

भाषा को विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम कहकर परिभाषित किया जा सकता है। परन्तु भाषा के अनेक रूप होते हैं, कहने का तात्पर्य यह है कि मानव समाज में बोली जाने वाली भाषा के कई रूप होते हैं। जिस प्रकार समाज कई वर्गों में विभाजित है ठीक उसी प्रकार अमुक भाषा भी किसी-न-किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। जिस प्रकार गाँव तथा शहर में रहने वालों की भाषा में अन्तर पाया जाता है उसी प्रकार शिक्षित तथा अशिक्षित लोगों की भाषा में भी बहुत गहरा अन्तर होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि हर व्यक्ति अपने रहन-सहन तथा स्तर के अनुसार ही सोचता व बोलता है। उदाहरण के तौर पर एक रिक्शे

वाले को ही ले लीजिए। आम तौर पर एक रिक्शे वाला जिस तरह ऊँची आवाज में तू-तड़ाके से बात करता है कोई भी अध्यापक अपने शिष्य से कितना ही नाराज क्यों न हो उस रिक्शे वाले की तरह उस पर नहीं चिल्लाता। हर व्यक्ति का अपना एक जीवन स्तर होता है तथा वह समाज में अपने स्तर को बरकरार रखने के लिए उसी तरीके से रहता है तथा उसी के अनुकूल भाषा का प्रयोग करता है। प्रस्तुत उपन्यास का हिन्दी भाषा में अनुवाद करने के दौरान मुख्य समस्या वर्ग विशेष द्वारा प्रयुक्त होने वाली भाषा के विशिष्ट रूप को अन्तरित करने में हुई। चूंकि यह उपन्यास मणिपुर के शाही परिवार पर आधारित है इस वजह से इसमें ऐसे कई शब्द मौजूद हैं जिसका प्रयोग मणिपुर की आम जनता द्वारा नहीं किया जाता। मणिपुर के राजशाही घरानों में जिस तरह हरेक शब्द को बड़े ही लाग-लपेटे के साथ प्रस्तुत किया जाता है उसे हिन्दी में प्रस्तुत करने में कुछ समस्याएँ भी आईं जिन्हें निम्नलिखत वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

(क) रिश्ते-नातों वाले नाम

	(मणिपुरी)	(हिन्दी)
i)	मजाइबेम्म	राजकुमारी जी
ii)	इतोनसि	चाचा श्री
iii)	पाबुङसनख्या	पिता श्री
iv)	मबुधौ इबुङो	दादा श्री
v)	इचेमसि	दीदी
vi)	इनेसि	बुआ श्री
vii)	सनख्यामासि	दादी श्री

एक साधारण तथा शाही परिवार के पहनावे से लेकर बोलचाल के लहजे में काफी अन्तर होता है। यहाँ तक कि किसी को सम्बोधित करने का भी अलग तरीका होता है। उदाहरण के लिए - आम तौर पर जहाँ माता, पिता, चाचा, बुआ, दादा आदि का प्रयोग किया जाता है वहीं शाही परिवार में इसे आदरसूचक नहीं माना जाता और वे माता श्री, पिता श्री, चाचा श्री, बुआ श्री, दादा श्री आदि का प्रयोग करते हैं। कोई व्यक्ति उम्र में कितना ही वरिष्ठ

क्यों न हो परन्तु वह महल की छोटी-सी बच्ची से राजकुमारी साहिबा कहकर बात करता है। वैसे तो इन सम्बोधन सूचक शब्दों को समतुल्य रूप में प्रस्तुत किया गया है परन्तु मणिपुर के शाही परिवार में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में जो शिष्टाचार, भद्र व्यवहार और शालीनता निहित हैं तथा एक समाज और संस्कृति विशेष का प्रतिबिम्ब सामने आया है उसे समतुल्य रूप में प्रस्तुत करना आसान नहीं क्योंकि भाषा का अनुवाद तो किया जा सकता है परन्तु संस्कृति का अनुवाद नहीं किया जा सकता।

(ख) वस्त्राभूषण

i) लम्थाङ खुत्हत = एक प्रकार की ओढ़नी विशेष

ii) मयेक नाईब फनेक = मणिपुर की महिलाओं द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र

iii) लोइरङ हिजमयेक = कपड़ों पर की जाने वाली छपाई विशेष

iv) फी = ओढ़नी

v) खामेन चत्प = छपाई विशेष

vi) मितै कुम फनेक = एक प्रकार का फनेक विशेष

vii) इनफी = ओढ़नी

viii) खदाङचेत = ठुड्डी को ढकने के लिए प्रयोग किये जाने वाले कपड़ा

ix) परीफी = ओढ़नी विशेष

x) कोयेत = पगड़ी

xi) पुंदुम परेङ
xii) बोकुल परेङ
xiii) कियाङलिक्फाइ
} = माला की डिजाइन

xiv) मरई = लड़ी

xv) खोइमहुम = मधुमक्खी के छत्ते वाला डिजाइन

xvi) लाइरेन मखोई = मगरमच्छ की नाभि वाला डिजाइन

xvii) चरोतखुदोप = बेंत की डिजाइन वाली अंगूठी

वस्त्राभूषण का अनुवाद करने में मुख्य समस्या यह आई कि मणिपुरी समाज में जो वस्त्र तथा आभूषण पहने जाते हैं इत्तफाक से वे उत्तर भारत में नहीं पहने जाते जिस वजह से उसके समतुल्य शब्द रखना सम्भव नहीं है। केवल ओढ़नी और पगड़ी दो ऐसी चीज है जो कि उत्तर भारत में भी पहने जाते हैं। इसके अलावा मणिपुर में पहने जाने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के फनेक तथा ओढ़नी की भिन्न-भिन्न छपाई अन्यत्र नहीं पायी जाती। यदि आभूषण की बात की जाए तो हर समाज की अपनी एक संस्कृति होती है तथा उसी के अनुसार आभूषण भी होते हैं। मणिपुरी समाज में सोने का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है जिस वजह से यहाँ कई प्रकार के सोने की माला और अंगूठियों का चलन है तथा जिस प्रकार के डिजाइन का मणिपुर में चलन है उन्हें आप बड़ी आसानी से पहचान सकते हैं। ज़्यादातर ये मशीन के बजाय हाथ से ही बनाए जाते हैं और एक सीमा तक ऐसा करना सही भी है क्योंकि इसमें सुनार अपनी कला का प्रयोग करता है तथा अपने समाज की संस्कृति और परम्परा को बचा कर रखना भी काफी अच्छी बात है।

(ग) समाज तथा संस्कृति से जुड़े शब्द

i) बोर = दुर्गा अष्टमी

ii) मितै युम = मितै शैली का घर

iii) मैदिङू = मितै का राजा

iv) माईब = ओझा

v) मितै लोन = मणिपुर की स्थानीय भाषा

vi) लोन खोईब = सही उच्चारण न कर पाना

vii) माङ्ब = अशुद्ध होना

viii) चिङ्ही = घर पर बनाया गया शैम्पू

ix) दोलाईरेङ = डोली उठाने वाले सेवक

x) बोर लाईखुरुम्ब = दुर्गा अष्टमी की पूजा

xi) सङ्गोई = आंगन

xii) काङ = मणिपुर का स्थानीय खेल

xiii) चही तरेत खुन्ताक्प = सात साला विध्वंस

xiv) कुथापमना = औषधिक पौधा विशेष का पत्ता

xv) थउगल्लोन = शिष्ट व्यवहार

xvi) लाकोई अहुम लोन्ब = एक के ऊपर एक रखे गए केले के तीन गोलाकार पत्ते

xvii) तखेलै = दोलन चम्पा

xviii) नाचोम = छोटा गुलदस्ता

xix) शेरै = हुक्का

xx) अवुनपोत = दहेज

xxi) तओत तमङ = सूत कातने का यंत्र

xxii) क्वाक यात्रा = दशहरा

xxiii) लूखुम ता = सिरहाने के सामने रखा गया भाला

xxiv) खूया ता = पैर की तरफ रखा गया भाला

xxv) लूवाङजै = एक प्रकार की छड़ी जो कि अपनी सुरक्षा हेतु रखी जाती है

xxvi) क्वाकलै = ऑर्किड

xxvii) तानशीब = पदक से बना बाजूबंद

xxviii) थाङ् ता = मणिपुर का स्थानीय खेल (तलवार बाजी)

xxix) यूबी लाक्पी = मणिपुर का स्थानीय खेल (नारियल छीनने का खेल)

xxx) पेना = स्थानीय वाद्य यंत्र जिसके तार घोड़े की पूंछ से बनते हैं

xxxi) पेनाखोङ्ब = पेना वादक

xxxii) खुल्लाक्प = कबीले का सरदार

xxxiii) चामोर = याक की पूंछ से बना पंखा

xxxiv) वालहउशङ = रसोई घर

xxxv) शाई = फुंदना

xxxvi) खुदैशेन = सोने की कटोरी भर सोना

xxxvii) काउशेन = चांदी की कटोरी भर चाँदी

xxxviii) क्वागोक = सुपारी रखने वाला बर्तन

xxxix) चिङ्थ्राओ = कनियार

इस वर्ग के अन्तर्गत जिन शब्दों को लिया गया है वे मुख्यत: मणिपुरी समाज तथा संस्कृति को दर्शाते हैं। सबसे पहले देखा जाए तो पूजा-पाठ की दृष्टि से मणिपुरी समाज में दुर्गा अष्टमी और दशहरा को काफी महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। दुर्गा अष्टमी के दिन तो श्रद्धालु दूर-दूर से वर माँगने आते हैं। वैसे तो मणिपुरी के 'बोर' शब्द का हिन्दी में पर्याय उपलब्ध नहीं परन्तु चूंकि यह पर्व दुर्गा अष्टमी के दिन मनाया जाता है अत: मैंने दुर्गा अष्टमी को इसके समतुल्य रूप में रखा। इसी तरह 'क्वाक यात्रा' भी दशहरे के दिन मनाया जाता है और यही वजह है कि दशहरे को क्वाक यात्रा के समतुल्य रखा गया। बात जब समाज और संस्कृति के सन्दर्भ में हो तो प्रत्येक शब्द का अनुवाद करना आसान नहीं होता। हिन्दुत्व और वैष्णव धर्म के चलते जहाँ मणिपुर की संस्कृति और उत्तर भारत की संस्कृति में कुछ समानताएँ पाई जाती हैं तो कुछ असमानताएँ भी हैं। उदाहरण के लिए यदि मणिपुर के स्थानीय खेल की बात की जाए तो यहाँ काङ, थाङ-ता, यूबी लाक्पी आदि की बात की गई है। काङ मणिपुर का एक प्रसिद्ध खेल है जो कि लकड़ी या हाथी दाँत से बने एक गोलाकार टुकड़े से खेला जाता है और यह एक प्रकार से निशानेबाजी का खेल होता है। थाङ-ता तलवारबाजी का खेल होता है और यूबी लाक्पी से तात्पर्य है नारियल छीनने का खेल। थाङ ता को हिन्दी में तलवारबाजी कह सकते हैं परन्तु हिन्दी में काङ और यूबी लाक्पी के समतुल्य कोई शब्द नहीं है। इसके अलावा कहीं-कहीं पर फूल-पत्ते आदि का भी जिक्र हुआ है जैसे-तखेलै, क्वाकलै, चिङथ्राओ, कुथापमना आदि जिनके लिए क्रमश: दोलन चम्पा, ऑर्किड, कनियार और औषधिक पौधा विशेष का पत्ता प्रयुक्त किए गए हैं। वास्तव में यहाँ प्रयुक्त फूल-पत्तों के नाम ऐसे हैं जिन्हें हम देखकर भी इनके नाम पर गौर नहीं करते और इसी वजह से इनके अनुवाद करना थोड़ा मुश्किल था। पूजा में इस्तेमाल किए जाने वाले लूखुम ता, खूया ता, लुवाङजै, लाकोई अहुम लोन्ब के समतुल्य हिन्दी में कोई शब्द नहीं और न ही खुदैशेन, काउशेन, क्वागोक आदि के समतुल्य शब्द उपलब्ध हैं। पेना एक वाद्य यंत्र है

जिसके तार घोड़े की पूंछ से बनते हैं और पेनावादक को 'पेनाखोङ्ब' कहा जाता है। पाठ में माईब (ओझा), सङगोई (आंगन), थउगल्लोन (शिष्ट व्यवहार), शैरै (हुक्का), अवुनपोत (दहेज), वालहउशङ (रसोई घर) जैसे शब्द भी हैं जिनके समतुल्य शब्द प्रस्तुत करना मुश्किल कार्य नहीं परन्तु इनके अलावा मितै युम, मैदिङू, मितै लोन, लोन खोईब, चिङ्ही, दोलाईरेङ, चही तरेत खुनताक्प, तओत-तमङ, तानशीब, चामोर आदि कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका हिन्दी में सटीक अनुवाद नहीं किया जा सकता अत: इनकी व्याख्या कर दी गई है जिससे पाठक को इनका अर्थ समझने में आसानी हो।

(घ) मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

i) मोङ हादबी = गऊ समान

ii) ऊकल ओईन लैब = खम्भे की तरह खड़े रहना

iii) खाबै खरा शाब = तांडव करना

iv) पल नमखाइब = सब्र का बाँध टूटना

v) खेक्तूना नोक्प = बत्तीसी फाड़ना

vi) लैतोन लेक्प = सर पर चढ़ना

vii) तूबुम नाम शोक्पगी वाखल = बाल भी बाँका न होने देना

viii) खुऊ शेन्न चत्प = फूँक-फूँक कर कदम रखना

ix) खेत्तून चत्प = नहले पर दहला

x) फीजिफिना नेत्प = सर पर चढ़ना

xi) नुङग येरुमग काउनब = शीशे से पत्थर को तोड़ना

xii) नशुमाङदी शित्तन मीगी शुमाङ शित्लीब = दूसरों के घर ताक-झाँक करना

xiii) निङथौगी नाकोङ फक्लाङ्द थेत्प = दीवारों के भी कान होते हैं

xiv) मङफाओनरक्प = नीदं से जागना

xv) खूरक्की ईन लाई-शाब = घर का भेदी लंका ढाए

xvi) हन-चक-ङाचक शाब = इधर की उधर करना

यदि उपर्युक्त मुहावरे एवं लोकोक्तियों के शब्दानुवाद को देखें तो ये काफी हास्यास्पद प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए - लैतोन लेक्प (जीभ चाटना), खुऊ शेन्न चत्प (घुटने बचाकर चलना), खेत्तून चत्प (नोचते हुए जाना), फीजिफिना नेत्प (कपड़े दबाना), नुङग येरुमग काउनब (पत्थर और अण्डे की प्रतियोगिता), नशुमाङ्दी शित्तन मीगी शुमाङ शित्लीब (अपने बजाय दूसरों के आँगन में झाड़ू लगाना), निङथौगी नाकोङ फक्लाङ्द थेत्प (राजा के कान दीवार में चिपके होना) आदि। जब बात मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद की हो तो हमेशा भाव-प्रति-भाव अनुवाद के माध्यम से ही कार्य करना चाहिए अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है। हालांकि हिन्दी और मणिपुरी दोनों ही भिन्न-भिन्न भाषा परिवार से सम्बद्ध हैं परन्तु ऐसा नहीं कि मणिपुरी के मुहावरे एवं लोकोक्तियों का हिन्दी में अनुवाद ही नहीं किया जा सकता। प्रत्येक मुहावरे एवं लोकोक्ति के पीछे कोई-न-कोई मानसिकता छिपी होती है जो कि अलग-अलग तरीके से व्यक्त की जाती है अत: यदि इनमें निहित अर्थ पर गौर किया जाए तो इनके समतुल्य भिन्न परिवेश में चर्चित मुहावरे एवं लोकोक्तियों का अनुवाद करने से पहले प्रत्येक पंक्ति पर बार-बार गौर किया गया कि अमुक मुहावरे एवं लोकोक्ति के माध्यम से लेखिका क्या कहना चाहती है, तत्पश्चात् उनके मुहावरे एवं लोकोक्ति को लिखा गया।

इसके अलावा उपन्यास में कुछ ऐसे शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं जो कि आम तौर पर प्रयोग नहीं किए जाते। बल्कि बोलचाल की भाषा में उनका प्रयोग करना भी बड़ा अटपटा और भारी-भरकम प्रतीत होता है। जैसे-

i) लेङलक्प सङलोय (पधार नहीं पाएंगे)

आम बोलचाल की भाषा में इसे 'लाक्प सङलोय' कहा जाता है।

ii) लेङलक्कनी (पधारेंगे)

इसके स्थान पर 'लाक्कनी' कहना ज्यादा सुगम लगता है।

iii) हक्चाङ ईरी (अस्वस्थ होना)

आम तौर पर कोई बीमार पड़ता है तो 'हक्चाङ् ईरी' के बजाय 'मसा ङम्दे' कहता है।

iv) लूक (भोजन)

आम तौर पर भोजन को कोई भी लूक नहीं कहता। इसके बजाय लोग 'चाक' शब्द का प्रयोग करते हैं।

इन शब्दों के माध्यम से यह पता चलता है कि केवल किसी भाषा के ऊपरी ज्ञान का सहारा लेकर अनुवाद नहीं किया जा सकता। विभिन्न परिस्थिति एवं परिवेश के अनुसार भाषा के भिन्न-भिन्न रूपों का प्रयोग किया जाता है जिसे समझने के लिए न केवल अमुक भाषा का ज्ञान काफी है बल्कि उस समाज के रहन-सहन तथा परिवेश एवं संस्कृति का ज्ञान होना भी अत्यंत आवश्यक है।

यदि बात अनुवाद की हो तो किसी पाठ का अनुवाद करने के साथ-साथ उस के शीर्षक का भी अनुवाद किया जाता है। शुरुआत में कोशिश तो यही थी कि उपन्यास के शीर्षक का भी अनुवाद किया जाए और इसके लिए दो-तीन शीर्षक सोचे भी गए जिनके माध्यम से उपन्यास का मूल भाव प्रस्तुत किया जा सके, जैसे - ''राजकुमारी और ब्रिटिश एजेंट'', ''समर्पण'' परन्तु गौर करने पर यह पता चला कि उपन्यास के शीर्षक 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' में प्रयुक्त 'बोर साहेब' और 'सनातोम्बी' तो संज्ञा है तथा ओङ्बी शब्द क्रिया है और जैसा कि सब जानते हैं कि संज्ञा का अनुवाद नहीं किया जा सकता अत: उपन्यास का शीर्षक वही रहने दिया जो कि मणिपुरी में था।

उपसंहार

उपसंहार

यह लघु शोध प्रबंध एम के. विनोदिनी कृत 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' पर आधारित है। वर्ष 1976 में प्रकाशित यह उपन्यास मणिपुरी भाषा में लिखा गया है। ऐतिहासिक उपन्यास होने के कारण इसका कथानक काफी रोचक है जिसके माध्यम से लेखिका ने पाठकों के समक्ष मणिपुर के शाही परिवार की वास्तविकता को प्रस्तुत किया है। सनातोम्बी उपन्यास की मुख्य पात्रा है। वह एक राजकुमारी है जिसे ब्रिटिश एजेंट (मेक्सवेल) से प्रेम हो जाता है। सम्पूर्ण कथानक सनातोम्बी के इर्द-गिर्द ही घूमता रहता है। महल में अपनी बुआ और दादी के बीच रहकर सनातोम्बी बड़ी होती है।

प्रस्तुत उपन्यास में एक राजकुमारी के जीवन के कई पहलू तथा उतार-चढ़ाव को दर्शाया गया है। इसके साथ ही मणिपुर के शाही परिवार का चित्र प्रस्तुत किया गया है जिसके अन्तर्गत राजसी गौरव, रूढिवाद, कट्टरता, बहुविवाह तथा सत्ता को लेकर आपसी मनमुटाव आदि को दिखाया गया है।

'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' में लेखिका ने शाही परिवार को केन्द्र में रखा है जिस वजह से उपन्यास की भाषा में कहीं-कहीं पर शाही अंदाज वाली बोली तो कहीं-कहीं पर बोली का ठेठ रूप देखने को मिलता है। मणिपुर के शाही परिवार की बोली का प्रयोग किये जाने के कारण इसका हिन्दी अनुवाद करना मेरे लिए आसान नहीं था परन्तु कोशिश यही रही कि अनूदित सामग्री स्रोत पाठ के समतुल्य ही हो।

किसी पाठ का सटीक अनुवाद करना आसान काम नहीं है। मेरे लिए भी यह काफी कठिन था। चूंकि यह उपन्यास मणिपुर के शाही परिवार पर आधारित है, इस वजह से इसमें ऐसे कई शब्द मौजूद थे जिसका प्रयोग मणिपुर की आम जनता द्वारा नहीं किया जाता। दूसरी ओर मणिपुर के राजशाही घरानों में जिस तरह प्रत्येक शब्द को सुसज्जित रूप में प्रस्तुत किया जाता है उसे हिन्दी में प्रस्तुत करने में कुछ समस्याएँ आई।

वैसे तो पूरी कोशिश की गई है कि स्रोत पाठ के समतुल्य ही अनुवाद किया जाए परन्तु मणिपुर के शाही परिवार में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में जो शिष्टाचार, भद्र व्यवहार और शालीनता निहित है तथा एक समाज और संस्कृति विशेष का प्रतिबिम्ब सामने आया है उसे समतुल्य रूप में प्रस्तुत करना आसान नहीं क्योंकि भाषा का तो अनुवाद किया जा सकता है परन्तु संस्कृति का अनुवाद नहीं किया जा सकता।

सनातोम्बी एक राजकुमारी है जो अपनी दादी और बुआ के बीच रहकर पली-बढ़ी। वह दृढ़-निश्चयी, साहसी तो है ही, वह बचपन में ही राजनीतिक लफड़े तथा सत्ता के लिए परिवार में चल रहे उठा-पटक से भी अवगत हो गई थी। सनातोम्बी महल में दादी के लाड-दुलार में पलने के कारण समाज में चल रही रीति-नीतियों को समझ नहीं पाती और इसका परिणाम यह हुआ कि उसे हर बात आसान लगती। दादी को प्रिय होने के कारण वह दादी पर अपना पूरा हक समझती तथा अधिकार के साथ उनसे बातें करती।

लेखिका ने माईसाना महारानी के चरित्र को काफी सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है। उनके चरित्र में हम एक ऐसी दमदार तथा साहसी महिला को देख सकते हैं जिनके सामने पहल करने की किसी में हिम्मत नहीं होती, यहाँ तक कि पुरुष भी मुँह बंद ही रखते हैं। सब लोग माईसना महारानी से सर झुकाकर बात करते हैं। यहाँ तक कि राजा भी उनके हुक्म का पालन करता। वे महल की सारी गतिविधियों पर नजर रखती तथा एक तरह से महल में उनका दबाव बना रहता था।

इसके अलावा अन्य पात्रों के अन्तर्गत चन्द्रकीर्ति महाराज, सूरचन्द्र, उनकी महारानी, रानियाँ, राजकुमारियाँ, युवराज तथा सेवक शामिल हैं। चन्द्रकीर्ति महाराज बूढ़े हो चुके थे परन्तु वे काफी शालीन किस्म के थे और उन्होंने 36 वर्ष तक सिंहासन पर राज किया। उनके बेटे राजा सूरचन्द्र 4 वर्ष सिंहासन पर विराजमान रहे। उनकी एक से अधिक रानियाँ थीं जिनमें से एक ने युवराज को जन्म दिया। युवराज को जन्म देने वाली रानी को बाकियों की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जाता। युवराज को शुरु से इस बात का अहसास था कि वह एक-न-एक दिन राजपाट सम्भालेगा और यह बात उसके व्यवहार में साफ झलकती थी। वह बात-बात पर

सनातोम्बी को याद दिलाता कि वह एक लड़की है जो कभी राजा नहीं बन सकती। वास्तविकता भी यही थी कि सनातोम्बी एक लड़की थी जिस बात का अहसास माँ उसे पल-पल दिलाती।

उपन्यास के पात्रों द्वारा कुछ ऐसे रोमांचक तथ्य सामने आए जो वर्तमान समय में भी पाए जाते हैं। लेखिका ने तत्कालीन सामाजिक परस्थितियों यथा-रूढ़िवाद, कट्टरता, पितृसत्ता, बेटे को जन्म देने वाली रानी को बाकी रानियों की अपेक्षा अधिक महत्ता, बहुविवाह, सत्ता को लेकर आपसी मन-मुटाव आदि का जो रूप प्रस्तुत किया है वह केवल मणिपुर के शाही परिवार को ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के शाही परिवारों का हाल भी बयां करता है।

इस उपन्यास द्वारा एक अद्‌भुत तथ्य सामने आया है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। एक ओर जहाँ राजशाही परिवार की ज्येष्ठ व बुजुर्ग महिला को बहुत ही महत्त्वपूर्ण दर्जा दिया जाता है। यहाँ तक कि राजा से लेकर सेवक कोई भी उनकी बात को नहीं टाल सकता, वहीं दूसरी ओर महल की अन्य महिलाओं को पुरुषों के अधीनस्थ समझा जाता था। उनका पूरा दिन महल की व्यवस्था की देखरेख करने तथा बच्चों का पालन-पोषण करने में बीतता था तथा ऐसा कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि सामान्य तौर पर समाज में महिलाओं का स्तर पुरुषों की तुलना में निकृष्ट ही माना जाता रहा है।

एम के. विनोदिनी का यह उपन्यास एक व्यक्तिगत ऐतिहासिक उपन्यास है जो सनातोम्बी की जीवन कथा को व्यक्त करता है। विनोदिनी के जीवन पर गौर करने पर यह पता चलता है कि सनातोम्बी के चरित्र के माध्यम से विनोदिनी जी ने अपने व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है। सनातोम्बी की तरह विनोदिनी भी राजशाही परिवार की बेटी होने के कारण महल में पली तथा उन्होंने महल के सभी दाव-पेंच तथा राजपाट को लेकर होने वाली उठा-पटक को काफी नजदीकी से देखा। विनोदिनी जी भी सनातोम्बी की भाँति साहसी, दृढ़-निश्चयी तथा परम्परा से हटकर सोचने वाली महिला थी। सनातोम्बी और विनोदिनी के जीवन की समानता को देखते हुए 'बोर साहेब ओङ्‌बी सनातोम्बी' को एक आत्म-कथात्मक उपन्यास भी कहा जा सकता है।

'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' मणिपुरी भाषा की रचना है जो कि तिब्बती-बर्मन भाषा परिवार की भाषा है तथा इसका हिन्दी भाषा में अनुवाद करने का प्रयास किया गया है। दोनों भाषा भिन्न समाज और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं, परिणामस्वरूप दोनों भाषाओं में समानताएँ एवं असमानताएँ पाई गई। जहाँ एक ओर सांस्कृतिक रूप से कुछ समानताएँ अनुवाद कार्य में सहायक सिद्ध हुई वहीं दूसरी ओर समाज तथा वस्त्राभूषण के सन्दर्भ में असमानता अनुवाद कार्य में बाधाकारी साबित हुई। यह उपन्यास की विशेषता ही कही जायेगी कि अनुवाद-कार्य चुनौतीपूर्ण होने के बावजूद मैं 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी' का सम्पूर्ण अनुवाद जल्द से जल्द करना चाहती हूँ।

ग्रन्थानुक्रम

ग्रन्थानुक्रम

आधार ग्रंथ

एम के. विनोदिनी, 'बोर साहेब ओङ्बी सनातोम्बी'

सहायक ग्रंथ

1. आर. के. झलजीत सिंह, ए हिस्ट्री ऑफ मणिपुरी लिटरेचर, मणिपुर विश्वविद्यालय, 1987
2. जवाहर सिंह, मणिपुर साहित्य और संस्कृति, नीलकमल प्रकाशन, 1991
3. डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, 2007
4. डॉ. नगेन्द्र, अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त और अनुप्रयोग, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, 1993
5. सी. एच. मनिहार सिंह, ए हिस्ट्री ऑफ मणिपुरी लिटरेचर, साहित्य अकादमी, 1996
6. Jesse Russell and Ronald Kohn, MK. Binodini Devi, bookvika Publishing, 2013

सहायक शब्दकोश

1. एन खेलचंद्र सिंह, मणिपुरी टू मणिपुरी एण्ड इंग्लिश डिक्शनरी, निङथौखोङजम खेलचन्द्र सिंह, 2004
2. फादर कामिल बुल्के, अंग्रेजी-हिन्दी कोश, एस. चंद एण्ड कंपनी लि., नई दिल्ली, 2000
3. भोलानाथ तिवारी, हिंदी पर्यायवाची कोश, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2000
4. शीतलजीत, फ्रेंड्स इंग्लिश टू मणिपुरी डिक्शनरी, आर के. दूसारी गोपाल सिंह, 2012
5. हरदेव बाहरी, राजपाल हिन्दी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्ज़, 2011

Internet Sources

- Review of Crimson Rainclouds by Binodini,

  http://www.themabooks.com/bookpdf/blurbs-front.pdf

- Maharaj Kumari (MK) Binodini (Padmashree Awardee in the field of Literature and Social Work) by Donny Meisnam Luwang,

  http://e-pao.net/epSubPageExtractor.asp?src=features.Profile of Manipuri Personalities.Donny Luwang.MK Binodini Literature

- Manipuri : the Uncertainities, Bassi JSTOR vol. 21, no. 6, language and literature survey November-December 1976-77,

  http://www.jstor.org/discover/10.2307/23330109?uid=3738256&uid=2129&uid=2134&uid=2&uid=70&uid=4&sid=21102492681831

- Manipuri Literature,

  http://en.academic.ru/dic.nsf/enwiki/11687814

- History of Manipur,

  http://en.academic.ru/dic.nsf/enwiki/7405245

- An Ode To Manipur's Last Princess,

  http://kanglaonline.com/2011/01/an-ode-to-manipur%E2%80%99s-last-princess/

- MK Binodini Remembered,

  http://www.hueiyenlanpao.com/headlines/item/7542-mk-binodini-remembered

- Cultural Root Is The Strength To MY Literature, an Interview with Maharajah Kumari Binodini Devi : by Salam Rajesh,

  http://erang.e-pao.org/Classic/write/MK Binodini cultural roots.php

- A BRIEF HISTORY (PUWARI) OF THE MEITEIS OF MANIPUR, by P. Lalit,

  http://themanipurpage.tripod.com/history/puwarimeitei.html

- Cultural implications for translation by Kate James,

  http://www.3.uji.es/~aferna/H44/Cultural-implications.html

Visual Sources

- MK. Binodini (30 Minutes) (Dir. Aribam Shyam Sharma)